IX 9चिन्ह

# सु॰ समाचार क्या है ?

ग्रेग गिलबर्ट

द्वारा — डी.ए.कारसन

सु॰समाचार क्या है ?

गिलबर्ट

:: क्रौसवे

# सुसमाचार क्या है ?

ग्रेग गिलबर्ट

द्वारा – डी.ए.कारसन

अनुवादक – हर्षित सिंह

::क्रौसवे
वीटन, इलीनोस

*What is the Gospel?*
Copyright © 2010 by Gregory D. Gilbert
1300 Crescent Street
Wheaton, Illinois 60187

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, store in a retrieval system, or transmited in any form by any means, electronic, mechanical, photocopy, recording, or otherwise, without the prior permission of the publisher, except as provided for by USA copyright law.

Cover design: Dual Identity Design
Interior typesetting: lakeside Design Plus
First printing 2010
Printed in the United States of America

Unless otherwise indicated, Scripture quotation are the ESV® Bible (*The Holy Bible, English Standard Version®*), Copyright© 2001 by Crossway. Used by permission. All rights reserved.

Scripture quotations marked NIV from the HOLY BIBLE, NEW INTERNATIONAL VERSION copyright 1973, 1978 Biblica. Used by permission of Zondervan. All rights reserved. The "NIV" and "New International Version" trademarks are registered in the United Stated Patent and Trademark office by Biblica. Use of either trademark requires the permission of Biblica.

All emphases in Scripture quotations have been added by the author.

Hardcover ISBN: 978-1-4335-1500-2
PDF ISBN: 978-1-4335-1501-9
Mobipacket ISBN: 978-1-4335-1502-6
ePub ISBN: 978-1-4335-2460-8

Library of Congress cataloging-in-Publication Data
Gilbert, Greg, 1977-
What is the Gospel?/ Greg D.Gilbert; foreword by D.A. Carson.
p.cm.
Includes bibliographical references and index.
ISBN 978-1-4335-1500-2 (hc)
1. Theology, Doctrinal-Popular works. 1.Title

BT77.G44 2010
230-dc22
2009030583

Crossway is a publishing ministry of Good News Publishers.
LB 21 20 19 18 17 16 15 14 13 12 11 10
14 13 12 11 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

R

# मोरीया

## मै तुमसे प्रेम करता हूं।

## बहुत ही अधिक

# विषय सूची


| | |
|---|---|
| श्रृंखला प्रस्तावना | 6 |
| डी.ए.कारसन द्वारा प्रस्तावना | 8 |
| परिचय | 10 |
| 1. बाइबल में सुसमाचार को खोजना | 20 |
| 2. परमेश्वर एक धर्मी सृष्टिकर्ता | 37 |
| 3. पापी मनुष्य | 46 |
| 4. यीशु मसीह उद्धारकर्ता | 59 |
| 5. प्रतिउत्तर–विश्वास और मन फिराव | 72 |
| 6. साम्राज्य | 87 |
| 7. क्रूस को केन्द्र में रखना | 104 |
| 8. सुसमाचार की सामर्थ | 116 |
| विशेष धन्यवाद | 127 |

# श्रृंखला प्रस्तावना

**9 चिन्ह श्रृंखला** की पुस्तकें दो बुनियादी विचारों पर आधारित हैं। प्रथम, स्थानीय कलीसिया मसीही जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है और अनेक मसीही इस बात को नहीं समझते हैं। हम जो 9 चिन्ह में हैं इस बात पर विश्वास करते हैं कि एक स्वस्थ मसीही एक स्वस्थ कलीसिया का सदस्य होता है।

द्वितीय, स्थानीय कलीसियाएं जीवन और जोश में तब बढ़ती जाती हैं जब वे अपना जीवन परमेश्वर के वचन के आस–पास आयोजित करती हैं। परमेश्वर बोलता है। कलीसियाओं को सुनना और पालन करना चाहिये। यह इतनी साधारण बात है। जब एक कलीसिया सुनती है और पालन करती है तो वह जिसका पालन कर रही है उसके समान दिखने लगती है। वह उसके प्रेम और पवित्रता को दर्शाती है। वह उसकी महिमा को दर्शाती है। एक कलीसिया उसके समान दिखेगी जब वह उसकी सुनेगी।

इस बात को ध्यान में रखते हुए पाठक देखेंगे कि सारे "9 चिन्ह" मार्क डेवर की 2001 की पुस्तक, *स्वस्थ कलीसिया के 9 चिन्ह* (क्रॉसवे बुक्स), से लिये गये हैं और सब का प्रारम्भ बाइबल से होता है:

- व्याख्यात्मक प्रचार;
- बाइबल पर आधारित अध्यात्मविज्ञान;
- सुसमाचार की बाइबल पर आधारित समझ;
- परिवर्तन की बाइबल पर आधारित समझ;
- सुसमाचार की बाइबल पर आधारित समझ;
- कलीसियाई सदस्यता की बाइबल पर आधारित समझ;
- कलीसियाई अनुशासन की बाइबल पर आधारित समझ;
- शिष्यता और बढ़ोतरी की बाइबल पर आधारित समझ;
- कलीसियाई नेतृत्व की बाइबल पर आधारित समझ।



कलीसियाओं को स्वस्थ होने के लिए क्या करना चाहिये के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है जैसे कि प्रार्थना तथा अन्य बातें। लेकिन हमारा मानना है कि प्रायः इन नौ बातों को अनदेखा किया जाता है (प्रार्थना को छोड़कर)। तो कलीसियाओं को हमारा बुनियादी सन्देश यह है कि परमेश्वर की ओर देखो न कि सबसे उत्तम व्यवसायिक प्रणालियों अथवा सबसे आधुनिक तौर तरीके की ओर। किन्तु परमेश्वर के वचन को सुनने के द्वारा आज ही उसकी ओर देखना प्रारम्भ कीजिए।

इस सारी परियोजना में से ही 9 चिन्ह श्रृंखला की पुस्तकें आती है। यह पुस्तकें इन नौ चिन्हों को और भी निकटता से और विभिन्न कोणों से अवलोकन करना चाहती हैं। कुछ पासबानों को ध्यान में रखते हुए तो कुछ कलीसिया के सदस्यों को ध्यान में रखते हुए। आशा है कि इनमें सावधानी पूर्वक बाइबल का अध्ययन, अध्यात्मविज्ञान का मंथन, संस्कृति को ध्यान में रखना, सामूहिक लागूकरण, और थोड़ा व्यक्तिगत प्रोत्साहन का समावेश पाया जायेगा। उत्तम मसीही पुस्तकें हमेशा धर्मविज्ञान और व्यवहारिक दोनो होती हैं।

हमारी यह प्रार्थना है कि परमेश्वर इस पुस्तक तथा अन्य पुस्तकों का उपयोग अपनी दुल्हन, कलीसिया को उसके आने के दिन के लिए वैभव और प्रकाश के साथ तैयार होने में सहायता करेगा।

# प्रस्तावना

अध्यात्मविज्ञान के छात्रों को पढ़ाने के **तीस साल से अधिक** के अनुभव ने मुझे दिखाया है कि विवादस्पद प्रश्न पीढ़ी से पीढ़ी तक भिन्न होते हैं और यही सत्य मसीह समाज में भी लागू होती है। एक समय था जब आप इस तरह के प्रश्न करने के द्वारा एक गर्म वाद–विवाद को निश्चित आरम्भ कर सकते थे। कैरिस्मैटिक आन्दोलन के बारे में आपका क्या विचार है ? बाइबल में कोई गलती नहीं है, क्या यह सिद्धान्त उचित है कि नहीं ? अथवा आप उन कलीसियाओं के बारे में क्या सोचते है जो खोजियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील रहती है ? इन प्रश्नों पर विचार विमर्श करने के लिए अभी भी काफी लोग मिल जाऐंगे किन्तु अब इन वाद विवादों में बहुत कम गर्मी बची है और उससे भी कम रोशनी। आज शायद जो प्रश्न धमाका कर सकता है वह यह है–जैसा इस लेखक ने वर्णन किया है–कि सुसमाचार क्या है ? इस प्रश्न से सम्बन्धित हम एक और प्रश्न को जोड़ सकते हैं, सुसमाचारीय मसीहत क्या है ?

यह प्रश्न आपस में विरोधाभासी उत्तरों को उत्पन्न करते हैं, जिनका अकसर बिना बाइबल पर विचार किये हठता के साथ बचाव किया जाता है, यह अत्यन्त चिन्ताजनक बात है क्योंकि यह बातें तो बहुत बुनियादी हैं। जब "सुसमाचारीय" मसीही "शुभ सन्देश" क्या है के बारे में अत्यधिक विभिन्न विचार रखते हैं (शुभ सन्देश जोकि सुसमाचार है), तो यह निष्कर्ष निकलता है कि या तो सुसमाचारीय मसीहत आन्दोलन के रूप में भिन्न–भिन्न मत हैं जिसमें सुसमाचार को लेकर कोई सहमति नहीं है और न ही "विश्वास के लिए सघंर्ष करने" की कोई ज़िम्मेदारी की भावना है जिसे (सुसमाचार को) प्रभु ने हमें जो उसके लोग हैं "हमेशा के लिए" सौंपा है (यहूदा 3)। इसलिये अनेक लोगों को अपने आपको "सुसमाचारीय" मसीह कहलाने का कोई वैधानिक अधिकार नहीं है क्योंकि उन्होंने "सुसमाचार" शुभ सन्देश को पीछे छोड़ दिया है।



ग्रेग गिलबर्ट का प्रवेश। यह पुस्तक कोई नई खोज करने का दावा नहीं करती है बल्कि एक पुरानी भूमि का ताज़ा सर्वेक्षण कर रही है जिसको पहले अनदेखा नहीं करना चाहिये था और न ही छोड़ना चाहिये था। ग्रेग के विचारों की स्पष्टता और अभिव्यक्ति प्रशंसनीय है। यह पुस्तक अनेक परिपक्व मसीहों की समझ को और तेज करेगी। उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि यह एक ऐसी पुस्तक है जिसका निम्न लोगों के बीच में वितरण किया जाना चाहिये : कलीसिया के अगुवों, नये मसीहों, और यहां तक जिन्होंने अभी तक मसीह पर नहीं विश्वास किया है और सुसमाचार की स्पष्ट व्याख्या नहीं समझी है। इस पुस्तक को पढ़िये, फिर दूसरों को बाँटने के लिए इस पुस्तक की एक पेटी खरीदिए।

डी.ए.कारसन

# परिचय

यीशु मसीह का **सुसमाचार क्या है** ?

आप यह सोचेंगे कि इस प्रश्न का उत्तर विशेष रीति से मसीहियों के लिए बहुत सरल होगा। वास्तव में आप यह भी सोच सकते हैं कि इस तरह की पुस्तक का लिखना बिल्कुल व्यर्थ है–जिसमें मसीहियों से इस प्रश्न के बारे में विचार करने के लिए कहा जाए कि यीशु मसीह का सुसमाचार क्या है ? यह तो लगभग उस स्थिति के समान है जिसमें अनेक बढ़ई लोगों को आपस में बैठा करके इस प्रश्न पर विचार विमर्श कराया जाए कि हथौड़ा क्या है ?

आखिरकार यीशु मसीह का सुसमाचार मसीहत के केन्द्र में स्थापित है एवं हम मसीही दावा करते हैं कि हमारा अस्तित्व सब बातों से बढ़ कर सुसमाचार के लिए ही है। हम इसी पर अपने जीवन को आधारित करना चाहते हैं और सुसमाचार के चारो ओर अपनी कलीसियाओं का निर्माण करना चाहते हैं। हम इसी के विषय में अन्य लोगों से वार्तालाप करते हैं एवं प्रार्थना करते हैं कि वह उसे सुनेंगे और उस पर विश्वास करेंगे।

इन सारी बातों के बाद भी, आप क्या सोचते हैं कि अधिकतर मसीहियों का सुसमाचार के विषय वस्तु पर कैसी पकड़ है ? यदि आपसे कोई प्रश्न करे कि : यह समाचार क्या है जिसके बारे में आप मसीही लोग सदैव बात करते रहते हैं, तब आप इसका उत्तर कैसे देंगे ? एवं इस समाचार में ऐसी क्या अच्छी बात है ?

मेरा अन्देशा है, कि बहुतेरे मसीही जब इसका उत्तर देंगे, तब उनका उत्तर बाइबल के अनुसार "यीशु मसीह का सुसमाचार क्या है ?" के मांपदण्ड से अत्यन्त कम पाया जाएगा। शायद उनका उत्तर यह हो,



"सुसमाचार यह है कि यदि आप परमेश्वर पर विश्वास करें तो वह आपके पापों को क्षमा करेगा।" अथवा वह कुछ ऐसा कहेंगे, "शुभ सन्देश यह है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपके जीवन के लिए एक अद्भभुत योजना रखता है।" या फिर, "सुसमाचार यह है कि आप परमेश्वर की सन्तान हैं और परमेश्वर अपनी सन्तानों को प्रत्येक प्रकार में बहुतायत से सफल देखना चाहता है।" कुछ लोग तो यह जानते होंगे कि यीशु की क्रूस पर मृत्यु और उसके पुन्रूत्थान के बारे में कुछ बोलना आवश्यक है। किन्तु फिर प्रश्न यह उठता है कि यह सब कैसे एक साथ जुड़ सकते हैं ?

सच्चाई तो यह है कि सुसमाचार क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर के बारे में मसीहियों का सहमत होना इतना सरल नहीं है जितना कि होना चाहिए। मैं 9 चिन्ह नाम की एक सेवकाई के साथ कार्य करता हूँ, यह संस्था कैपिटल हिल बैपटिस्ट चर्च से जुड़ी हुई है जो कि वाशिंगटन डी.सी. शहर में है। अधिकतर जो लोग हमारी सामग्री को पढ़ते हैं तथा उस पर टिप्पणी करते हैं वह सुसमाचारीय (Evangelical) मसीहत के छोटे से हिस्से से वास्ता रखते हैं। वह विश्वास करते हैं कि बाइबल सच्ची है और उसमें कोई चूक नहीं। वह विश्वास करते हैं कि यीशु क्रूस पर मरा और शरीर में जी उठा, वह विश्वास करते हैं कि मनुष्य पापी है और उसको उद्धार की आवश्यकता है। वे सुसमाचार केन्द्रित एवं सुसमाचार से सराबोर सन्तुष्ट लोग बनने की मनसा रखते हैं।

किन्तु आपकी राय में हम चाहे कुछ भी लिखें, वह कौन सा ऐसा विषय है जो कि सबसे अधिक टिप्पणियाँ और ऊर्जापूर्ण प्रतिउत्तर उत्पन्न करता है। जी हाँ, वह विषय सुसमाचार ही है। हम महीनों तक प्रचार, शिष्यता, परामर्श, कलीसियाई संगठन या कलिसीयाई संगति के बारे में लिख और बोल सकते हैं और हमारे पाठकों का प्रतिउत्तर रोचक अवश्य किन्तु आश्चर्य करने वाला नहीं होता है। लेकिन हमें एक लेख लिखने दीजिए जिसमें हम यह स्पष्ट करने का प्रयास करें कि मसीहित के शुभ सन्देश के बारे में बाइबल क्या सिखाती है, और फिर उसका प्रतिउत्तर तो

भौंचक्का करने वाला होता है।

कुछ समय पहले मेरे एक मित्र ने हमारी वेबसाइट पर एक जानेमाने मसीही कलाकार के बारे में एक छोटा लेख लिखा, जिससे एक साक्षात्कार में मसीहित के शुभ सन्देश को परिभाषित करने के लिए पूछा गया था। उस कलाकार ने यह कहाः

> यह कितना उत्तम प्रश्न है। मेरा अन्देशा है कि मैं शायद ...मेरे भीतरी विचार के अनुसार मैं यह कहूँगा कि शुभ सन्देश यीशु के आगमन, जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान और उन प्रत्येक बातों का "जो अभी तक नही हुई है" का उद्घाटन एवं उनका उसके स्वयं में पुनः स्थापित करना...और यह हो रहा है स्वंय उसके द्वारा...सब बातों का सही बनाया जाना...वह प्रक्रिया मसीहियों के जीवन और ह्रदयों में दोनों आरम्भ और एक वास्तविकता है और तौभी एक दिन आ रहा है जब वह सर्म्पूणता में घटित होगा। किन्तु शुभ सन्देश, सुसमाचार, शुभ सन्देश का बताना, मैं यह कहूँगा कि यह उसके साम्राज्य के आने का समाचार है, उसके साम्राज्य के आने का उद्घाटन...यह मेरा स्वंय का विचार है।

हममें से कई लोगों ने इस तरह के प्रश्नों को पूछने के द्वारा प्रतिउत्तर दिया कि "यदि हम मसीही सुसमाचार की अभिव्यक्ति कर रहे हैं, तो क्या हमें यीशु की मृत्यु और पुन्रूत्थान की कुछ *व्याख्या* नहीं सम्मलित करना चाहिए ?" अथवा, "क्या हमें पाप के बारे में और उसके विरूद्ध परमेश्वर के प्रकोप से उद्धार की आवश्यकता के बारे में कुछ वर्णन करना चाहिए या नहीं ?"

उन लेखों की श्रृखंला का प्रतिउत्तर अविश्वसनीय था। और कई महीनों तक हमें दर्जनों सन्देश उसके बारे में मिले। कुछ ने हमें लिखा और सराहा कि हमने ऐसे प्रश्न उठाये; अन्य अचम्भा कर रहे थे कि सुसमाचार



को इस तरह व्यक्त करने में क्या गलती है जबकि स्वंय यीशु ने साम्राज्य के आगमन के बारे में प्रचार किया था। अन्य लोग तो केवल यह सुन करक प्रसन्न थे कि मसीही लोग मेहनत करके सोच रहे हैं कि सुसमाचार को कैसे व्यक्त किया जाए।

कुछ मायनो में, जब मैं मसीहियों को सुसमाचार सबन्धित वार्तालाप आरम्भ होने पर उत्साहित देखता हूँ तो मैं प्रसन्न होता हूँ। इसका अर्थ है कि वह उसे गम्भीरता से ले रहे हैं और सुसमाचार क्या है उसके विषय में उन्होंने गहन विचार बना कर रखा है। उन मसीहियों में ऐसा कुछ भी स्वस्थ नहीं जो इस बात की परवाह नहीं करते हैं कि सुसमाचार को हम कैसे परिभाषित करें और उसे कैसे समझें। दूसरी ओर, मेरा यह विचार है कि सुसमाचार के बारे में चर्चा के द्वारा जो ऊर्जा उत्पन होती है वह यह दर्शाता है कि इस विषय को लेकर आजकल काफी गड़बड़ी का कोहरा छाया हुआ है। मसीही लोग तो इस विषय पर सहमत नहीं हो पाते हैं कि सुसमाचार क्या है–यहाँ तक वह मसीही जो अपने आपको सुसमाचारीय मसीही कहलाते हैं।

आप किसी भी उन सौ स्वः घोषित सुसमाचारीय मसीहियों से पूछिये कि यीशु का शुभ सन्देश क्या है ? और सम्भावना यह है कि आपको साठ भिन्न उत्तर मिलेंगे। सुसमाचारीय प्रचार को सुनिये, सुसमाचारीय पुस्तकों को पढ़िये, सुसमाचारीय वेबसाइट पर जाइए और आप एक के बाद एक सुसमाचार का भिन्न–भिन्न वर्णन पाएंगे और इनमें से अनेक आपस में असहमत हैं। यहाँ कुछ उदाहरण हैं जो मैंने पाये हैं :

> शुभ सन्देश यह है, कि परमेश्वर आपको अपना अविश्वसनीय अनुग्रह दिखाना चाहता है। वह आपके जीवन को "नई दाखरस" से भर देना चाहता है, लेकिन क्या आप अपनी पुरानी मशकों से छुटकारा पाने के लिए तैयार हैं ? क्या आप बड़ा सोचना आरम्भ करेंगे ? क्या आप अपने दर्शन का

विस्तार करेंगे और उन पुरानी नकारात्मक मानसिकताओं से पीछा छुडाएंगे जो आपको पीछे रोक करके रखी हैं ? एक वाक्यांश में सुसमाचार यह है। क्योंकि मसीह हमारे लिए मरा, जो लोग उस पर विश्वास करते हैं यह जान जाएँ कि उनके अपराध एक बार में हमेशा के लिए क्षमा कर दिए गए हैं। परमेश्वर के न्याय की अदालत में हम क्या कह पाएँगें ? केवल एक बात। मसीह मेरे स्थान पर मरा। यही सुसमाचार है।

यीशु के सन्देश को एक मायने में हम सारे समय का सबसे अधिक क्रान्तिकारी सन्देश कहला सकते हैं: "परमेश्वर का सम्पूर्ण क्रान्तिकारी साम्राज्य अब यहाँ है। यह परस्पर मेल मिलाप और शान्ति के द्वारा प्रगतिमय है। वह विश्वास, आशा और प्रेम के द्वारा विस्तार कर रहा है–और यह अत्यधिक गरीब, कमज़ोर, दीन और सबसे छोटे लोगों से आरम्भ हो रहा है। यह समय है कि आप अपनी सोच बदलें। प्रत्येक वस्तु बदलने वाली है। अब नए तरीके के जीवन का समय है। मेरे पर भरोसा रखिए। मेरा अनुकरण कीजिए। इस शुभ सन्देश पर विश्वास कीजिए ताकि आप इसके द्वारा जीना सीख सकें और क्रान्ति का हिस्सा बन सकें।"

शुभ सन्देश यह है कि परमेश्वर का चेहरा आपकी ओर सदैव बना रहेगा, चाहे आपने जो भी किया हो, जहाँ भी गए हों और आपने कितनी भी गलतियाँ की हैं। वह आपसे प्रेम करता है और आपकी दिशा की ओर मुड़कर आपको ढूंढ रहा है।

सुसमाचार स्वयं उस उद्घोषणा की बात करता है कि यीशु क्रूसित एवं पुनः जी उठा मसीहा, संसार का एक, सच्चा एवं एकमात्र प्रभु है।



शुभ सन्देश! परमेश्वर राजा बन रहे हैं और वह यीशु के द्वारा ऐसा कर रहे हैं। और इसलिए, *ओ हो!* परमेश्वर का न्याय, परमेश्वर की शान्ति, परमेश्वर की दुनिया का नवीनीकरण होगा। और इन सब के मध्य में, अवश्य ही, यह आपके और हमारे लिए शुभ सन्देश है। किन्तु यह उससे विकसित है अथवा शुभ सन्देश का परिणाम है जो कि यीशु के बारे में सन्देश है जिसका मेरे, आपके और हमारे ऊपर द्वितीय श्रेणी का असर पड़ता है। किन्तु सुसमाचार स्वंय इस बारे में नहीं है, *कि आप इस तरह के व्यक्ति हैं और आपको यह हो सकता है।* वह तो सुसमाचार का परिणाम है न कि स्वंय सुसमाचार ...उद्धार सुसमाचार का *प्रतिफल* है, न कि स्वंय सुसमाचार का केन्द्र।

सुसमाचार दो मायनों में यीशु की उद्घोषणा है। यह यीशु द्वारा *घोषित* की गई उद्घोषणा है–परमेश्वर के सम्भावना के दायरे (उसके "साम्राज्य") का मानवीय सम्भावनाओं के ढाचों के मध्य में आगमन। किन्तु यह यीशु के *बारे* में भी उद्घोषणा है–शुभ सन्देश यह है कि मृत्यु और पुनरूत्थान में, यीशु ने वह साम्राज्य हमें उपलब्ध करा दिया है जिसकी उसने उद्घोषणा की थी।

एक मसीही होने के नाते, मैं तो स्वंय को एक विशेष प्रकार का जीवन व्यतीत करने का आदी करने का प्रयास कर रहा हूँ। यह उस प्रकार का मार्ग जो यीशु ने सिखाया था कि सम्भव है। और मैं यह सोचता हूँ कि यीशु का मार्ग, जीने का सबसे उत्तम मार्ग है....समय के साथ–साथ जब आप उद्देश्यपूर्ण ढ़ंग से यीशु के मार्ग पर जीने का प्रयास करते हैं, तब आप ध्यान देना आरम्भ करते हैं कि आपके भीतर कुछ हो रहा है। आप यह समझने लगते हैं कि जीने का सबसे उत्तम मार्ग यह

> इसलिए है क्योंकि यह इस संसार के अस्तित्व से सबन्धित गहन तथ्यों पर आधारित है। आप अपने आपको और भी अधिक परम वास्तविकता के साथ एक धुन में जीते हुए पाते हैं। ब्रह्माण्ड अपनी भीतरी सतहों में जैसा है, आप उससे और भी अधिक मेल खाने लगते हैं....प्रारम्भिक मसीहियों ने यीशु के इस मार्ग को "शुभ सन्देश" के रूप में घोषित किया।
>
> यीशु के सन्देश के बारे में मेरी समझ यह है कि वह हमें परमेश्वर की वास्तविकता में "अभी" जीने के लिए सिखाता है—यहाँ और आज। यह ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु बारम्बार कह रहे हैं "अपना जीवन बदलो। ऐसा जीवन जीओ।"

आपने देखा कि मेरे कहने का क्या तात्पर्य है जब मैं कहता हूँ कि सुसमाचार अस्पष्टता के कोहरे से घिरा हुआ है! यदि आपने मसीहियत के बारे में कभी नहीं सुना होता, तो आप इन कुछ उदाहरणों को पढ़ने के बाद क्या सोचते ? आप यह तो स्पष्टतः जान जाते कि मसीही लोग एक अच्छे सन्देश को व्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन उसके बाद तो सब गड़बड़ है। क्या शुभ सन्देश सिर्फ यह है कि परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है एवं मुझे और सकारात्मक सोच आरम्भ करने की आवश्यकता है ? क्या शुभ सन्देश यह है कि यीशु एक उत्तम उदाहरण है जो मुझे एक प्रेमपूर्ण और दयापूर्ण जीवन जीना सिखा सकता है ? हो सकता है कि शायद इसका पाप और क्षमा से कुछ लेना—देना हो। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ मसीही सोचते हैं कि इस शुभ सन्देश का यीशु की मृत्यु से कुछ लेना देना है। किन्तु अन्य ऐसा नहीं मानते हैं।

मेरा उद्देश्य अभी और यहाँ पर यह निर्णय करना नहीं है कि इनमें से कौन सा उदाहरण एक दूसरे से बेहतर या बदतर है (यद्यपि मैं यह आशा करता हूँ कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आप ऐसा निर्णय कर सकेंगे)। मैं अभी सिर्फ यह दर्शाना चाह रहा था कि कितनी विभिन्न प्रकार की बातें



लोगों के मस्तिष्क में उभरती है जब लोगों से पूछा जाता है कि सुसमाचार क्या है?

मैं इस पुस्तक में इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देने का प्रयास करना चाहता हूँ। ऐसा उत्तर जो स्वंय सुसमाचार के विषय में बाइबल की शिक्षा पर आधारित है। इस प्रक्रिया के दौरान मैं कई बातों के लिए आशा और प्रार्थना कर रहा हूँ।

प्रथम, यदि आप मसीही हैं, तो मेरी यह प्रार्थना है कि यह छोटी सी पुस्तक—सबसे बढ़कर वह प्रतापमय सत्य जो यह पुस्तक व्यक्त करने का प्रयास कर रही है—उस यीशु मसीह के प्रति आपके हृदय को आनन्द और प्रशंसा से भर दे जिसने आपके लिए सब कुछ प्राप्त किया। एक सामर्थहीन सुसमाचार सामर्थहीन आराधना की ओर ले जाता है। वह हमारी आखें परमेश्वर की ओर से नीचा करके स्वंय की ओर ले जाता है। और परमेश्वर ने जो मसीह में हो कर के हमारे लिए जो प्राप्त किया है उसको सस्ता साबित करता है। और इसके विपरीत बाइबल पर आधारित सुसमाचार आराधना की भट्टी में ईधन के समान है। जितना अधिक आप इसके बारे में समझेंगे, विश्वास करेंगे और उस पर निर्भर करेंगे, उतना ही अधिक आप परमेश्वर की आराधना इन दो कारणों से करेंगे कि वह कौन है और उसने हमारे लिए मसीह में होकर क्या किया ? पौलुस रोमियों 11:33 में पुकारता है, "अहा! परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितने अगाथ हैं!", और पौलुस ऐसा इसलिए कह सका क्योंकि उसका हृदय सुसमाचार से भरा हुआ था।

द्वितीय, मेरी आशा है कि इस पुस्तक को पढ़ने के द्वारा आपको बड़ा साहस प्राप्त हो जब आप अन्य लोगों से यीशु के शुभ सन्देश के बारे में बात करें। मैं अनेक मसीहियों से मिला हूँ जो कि अपने मित्रों, परिवार और परिचितों से सुसमाचार को बाँटने में इस भय से झिझकते हैं कि उनके पास सारे प्रश्नों का उत्तर नहीं है। खैर, यह शायद सच है आप कोई भी क्यों न हों, आप कभी भी *सारे* सवालों का उत्तर देने में सक्षम नहीं हो पाऐंगे।

किन्तु आप उनमें से *कुछ* का तो उत्तर दे *सकते* हैं और मेरी आशा है कि यह पुस्तक उनमें से *कुछ और* उत्तर देने में आपकी सहायता करेगी।

तृतीय, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप अपनी कलीसिया के जीवन के लिए सुसमाचार की महत्वता को समझेंगे। और इसके परिणाम स्वरूप आप यह कार्य करने का प्रयास करेंगे कि यह सुसमाचार आपकी कलीसिया के जीवन के हर एक पहलू में उपस्थित पाया जाए। चाहे वह प्रचार, गीत, प्रार्थना, शिक्षा या उद्घोषणा हो। पौलुस कहता है कि परमेश्वर की महान समझ, कलीसिया के द्वारा ही इस संसार में ज्ञात कराई जाएगी। और यह कैसे होगा ? सुसमाचार के प्रचार के द्वारा जो संसार को बचाने के लिये परमेश्वर की उस अनन्त योजना को "सबके लिए" प्रकाश में लाती है (इफिसियों 3:7–12)।

चौथी, मेरी आशा है कि यह पुस्तक आपके मस्तिष्क और हृदय में सुसमाचार की धार को और तेज़ करने में सहायता करेगी। सुसमाचार एक खरा सन्देश है और यह इस संसार की सोच और प्राथमिकताओं में तीखे और स्फूर्तिदायक सत्य के साथ प्रवेश होता है। दुःख की बात तो यह है कि मसीहियों में–यहाँ तक कि सुसमाचारीय मसीहियों में भी–हमेशा से सुसमाचार के कुछ धारों को मन्द करने की प्रवृत्ति बनी हुई है ताकि सुसमाचार संसार द्वारा आसानी से ग्रहण किया जाए। मेरी एक प्रार्थना है कि यह पुस्तक उन धारों को तेज बनाए रखने में और उन तथ्यों के कटाव को रोकने में उपयोगी हो जो कि यद्यपि इस संसार के लिए स्वीकार करना कठिन है किन्तु यीशु मसीह के शुभ सन्देश के लिए अनिवार्य हैं। हम में से प्रत्येक के सामने परीक्षा आती है कि सफल गवाह होने के नाम में हम जहाँ तक सम्भव हो सुसमाचार को आकर्षक तौर पर प्रकट करें। यह कुछ मायनों में तो ठीक है–आखिरकार यह "शुभ सन्देश" है लेकिन हमें सावधान रहना है कि हम सुसमाचार के नुकीले कोनों को गोल न कर दें। हमें इन तेज धारों को बचाए रखना है और मेरी आशा है कि यह पुस्तक हमें ऐसा करने में सहायता प्रदान करेगी।



अन्त में, अगर आप मसीही नहीं हैं, तो मेरी प्रार्थना है कि इस पुस्तक को पढ़ने के द्वारा आप यीशु मसीह के शुभ सन्देश के विषय में गम्भीरता सविचार करने के लिए उत्साहित होंगे। यह वह सन्देश है जिस पर हम मसीहियों ने अपना सम्पूर्ण जीवन दाँव पर लगा दिया है। और हमारा यह मानना है कि यह आपसे भी प्रतिउत्तर की माँग कर रहा है। यदि इस संसार में ऐसी कोई बात है जिसकी उपेक्षा करने का खतरा आप नहीं उठा सकते हैं, तो वह है परमेश्वर की आवाज़ जो यह कह रही है, "शुभ सन्देश! मेरे न्याय से आप इस तरह बच सकते है।" यह ऐसी घोषणा है जो आपके ध्यान की माँग कर रही है।

## अध्याय एक

# बाइबल में सुसमाचार को खोजना

**क्या आप जानते हैं कि जी.पी.एस.** (एक यंत्र जो रास्ता दर्शता है) पथ निर्देशन प्रणाली संयुक्त राज्य अमेरिका के शहरों में कहर का कारण बन रहे हैं ? विशेष कर के छोटे शहरों में ऐसा मामला है। बड़े शहरों में रहने वाले लोगों के लिए तो यह छोटे यंत्र जान बचाने वाले यंत्र हैं। आप इस जी.पी.एस. को अपनी गाड़ी में जोड़िए और अपने गंतव्य पते को इसमें अंकित कीजिए और आप अपने राह पर चल दीजिए। अब इन यंत्रों की वजह से आप किसी गलत मोड़ पर नहीं जाते, न ही गलत निकास और मार्ग पर खोते हैं। केवल आप, आपकी कार, जी.पी.एस., और वाह! "आप अपने गंतव्य पर पहुँच गए।"

मैंने हाल ही में अपना प्रथम जी.पी.एस. यंत्र प्राप्त किया और यह मुख्य तौर से वाशिंगटन डी.सी. शहर के लगभग असम्भव सड़क प्रणाली के लिए जो भी जिम्मेदार है उसके विरोध में खुले विद्रोह की एक क्रिया थी। किन्तु मेरा प्रथम अनुभव इस यंत्र के साथ वाशिंगटन में नहीं था। यह टेक्सस राज्य के लिंडन नाम के एक अत्यन्त छोटे, बहुत ग्रामीण एवं मुख्य मार्ग से बहुत हट करके इस शहर में हुआ।

और ऐसा हुआ कि मेरे जी.पी.एस. को वाशिंगटन शहर की मुश्किल और जटिल सड़कों पर आने जाने और मार्ग निर्देशन करने में कोई दिक्कत नहीं हुई। किन्तु विचित्र बात यह है कि उसको लिंडन में दिक्कत हुई। जिन सड़कों के अस्तित्व के बारे में जी.पी.एस. निश्चित था वह तो वास्तव में थी ही नहीं। जिन मोड़ के बारे में वह जोर दे रहा था कि सम्भव है, वहाँ वह



मोड़ था ही नहीं। जिन पतों के बारे में वह निश्चिंत था कि वह उक्त स्थान पर है, पता चला कि या तो वह उस सड़क पर कई सौ गज़ आगे चलकर थे–या फिर उपस्थित ही नहीं थे।

ऐसा प्रतीत होता है कि जी.पी.एस. प्रणालियों के द्वारा छोटे शहरों की अवहेलना करना एक बढ़ती हुई समस्या है। ऐ.बी.सी. समाचार चैनल ने आवासीय कॉलोनी की सड़कों के बारे में कहानी प्रसारित की जिसमें दिखाया गया कि कैसे उनकी सडकें व्यवासायिक आवागमन के मार्ग बन गए हैं क्योंकि जी.पी.एस. यंत्र इन कॉलोनी की सड़कों पर यातायात को मार्गदर्शित कर रहे हैं बजाए कि मुख्य राजमार्ग या बड़ी सडकों पर। इसके अतिरिक्त कुछ और समस्याएं भी हैं। कैलीफोर्निया राज्य का एक बेचारा व्यक्ति इस बात का बल दे रहा था कि वह सिर्फ जी.पी.एस. के निर्देशों का पालन कर रहा था जब उसने एक ग्रामीण सड़क पर दायें मोड़ा और अपने आपको रेलगाड़ी की पटरी पर फसे हुए और अपनी ओर आती हुई रेलगाड़ी की इंजन की बत्ती को अपनी आखों में ताकते हुए पाया। वह तो बच गया किन्तु उसकी गाड़ी और दोषी जी.पी.एस. दोनों का अन्त अच्छा नहीं हुआ।

अमेरिकी वाहन संघ के एक प्रतिनिधि ने थोड़ी सी सहानुभुति जताई। उसने कहा, "यह तो स्पष्ट है कि जी.पी.एस. ने एक मायने में उसे विफल किया और उसे रेल की पटरी पर मुड़ने का निर्देश नहीं देना चाहिए था। किन्तु सिर्फ इसलिए कि एक मशीन आपको कुछ ऐसा करने का निर्देश दे जो कि घातक साबित हो सकता है, उसका मतलब यह नहीं कि आपको वह करना चाहिए।"

तो क्या हो रहा है ? जी.पी.एस. निर्माताओं का कहना है कि समस्या स्वंय उपकरणों में नहीं है। वह बिल्कुल वही कर रहे हैं जो उन्हे करना चाहिए। इसके बजाए समस्या उन मानचित्रों में है जो यह उपकरण इंटरनेट से उतार रहे हैं। ऐसा पता चला कि यह मानचित्र विशेष तौर से छोटे शहरों के लिए जो कि इन जी.पी.एस. प्रणालियों के लिए उपलब्ध हैं,

अकसर कई वर्षों, यहाँ तक की कई दशकों तक पुरानी हैं। कई बार तो यह मानचित्र केवल योजना हेतु बनाए गए नक्शे थे–ऐसे नक्शे जो कि भविष्य में शहर की वृद्धि होने पर योजनाकार क्या करने की योजना रखते हैं, उस तरह के नक्शे। इसका परिणाम क्या हुआ ? कभी–कभी कुछ पते जो कि योजना हेतु मानचित्र पर उक्त स्थान पर उपस्थित थे, परन्तु जब शहर का वास्तविक विकास हुआ तो कहीं और पहुँच गए। कभी कदार योजनाकार जिन सड़को जो निर्माण करने की मनसा रखते थे उनका कभी निर्माण ही नहीं हुआ। और कभी–कभी उनका निर्माण तो हुआ किन्तु सड़क के रूप में नहीं परन्तु रेलमार्ग के रूप में!

जी.पी.एस. की दुनिया की नाई हमारे जीवन में भी आवश्यक है कि हम अपनी जानकारी एक विश्वासयोग्य सोत्र से प्राप्त करें।

## *क्या है हमारा विश्वासयोग सोत्र ?*

यही बात लागू होती है जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि सुसमाचार क्या है ? आरम्भ में ही हमें निर्णय करना होगा कि हम इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए जानकारी के किस सोत्र का उपयोग करेंगे। यह उत्तर सुसमाचारीय मसीहियों के लिए बहुत आसान है : हम इसका उत्तर बाइबल में पाते हैं।

यह तो सच है किन्तु आरम्भ में ही यह जानना लाभकारी होगा कि प्रत्येक इस उत्तर से सम्पूर्णतः सहमत नहीं होते हैं। विभिन्न "मसीही" समूहों ने इस विश्वासयोग सोत्र/अधिकार के प्रश्न का उत्तर अनेक प्रकार से दिया है। उदाहरण के तौर पर, कुछ का कहना है कि हमें सुसमाचार के बारे में न केवल अपनी समझ और न ही प्राथमिक तौर पर केवल बाइबल के शब्दों पर, परन्तु मसीही परम्परा पर आधारित करना चाहिए। उनका यह तर्क है कि अगर कलीसिया किसी बात पर लंबे समय से विश्वास करती आ रही है तो हमें उस बात को सत्य के समान मान लेना चाहिए। अन्य लोगों ने



कहा कि हम तर्क के उपयोग के माध्यम से सत्य को जानते हैं। हम अपने ज्ञान का निर्माण निचली सतह से आरम्भ करके ऊपर की ओर उठते हैं–"अ" हमें "ब" की ओर ले जाता है जो हमें "स" की ओर फिर वह "द" की ओर ले जाता है–ऐसे हम स्वंय, अपने सन्सार और परमेश्वर के बारे में सच्ची समझ तक पहुँचते हैं। फिर कुछ दूसरों का कहना है कि सुसमाचार के सत्य को समझने के लिए हमें स्वंय के अनुभव को देखना चाहिए। जो कुछ भी हमारे स्वंय के हृदय के साथ सबसे अधिक सहमत होता है अंततः हम उसी को अपने बारे में और परमेश्वर के बारे में सत्य समझते हैं।

यदि आप इसके बारे में सोचने में पर्याप्त समय बिताएं तो आप यह अहसास करेंगे कि यह तीनों अधिकार/विश्वासयोग सोत्र के सम्भावित सोत्र अन्त में अपने वायदे को पूरा करने में विफल होते हैं। परम्परा हमें मनुष्यों की राय पर भरोसा रखने के अलावा कुछ और नहीं देती। आपको कोई भी उच्च विद्यालय के स्तर का दार्शनिक बताएगा कि मानवीय तर्क शक्ति हमें अनिश्चयता में भटकता हुआ छोड़ देती है। (उदाहरण के तौर पर आप यह *साबित* करने का प्रयास कीजिए कि आप सिर्फ किसी और की कल्पनाओं की उपज नहीं हैं या फिर आपकी जो पांच इन्द्रियाँ हैं वह वास्तव में विश्वसनीय हैं।) और अनुभव हमें स्वंय के चंचल हृदय के भरोसे यह निर्णय करने के लिए छोड़ देता है कि सत्य क्या है–और यह सम्भावना ईमानदार लोगों को विचलित करती है।

तो फिर हमें क्या करना चाहिए ? हम कहाँ जायें यह जानने के लिए कि सत्य क्या है, और इसलिये यीशु मसीह का शुभ सन्देश वास्तव में क्या है ? मसीही होने के नाते हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने अपने वचन बाइबल में हमसे बात की है। और हम यह भी विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने बाइबल में जो कहा है वह अचूक और बिना गलती के सच है। इसलिए वचन हमें सन्देह, निराशा या अनिश्चयता की ओर नहीं परन्तु विश्वास की ओर ले जाता है। पौलुस ने कहा (2 तिमुथियुस 3:16), "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है... और शिक्षा के लिए उपयोगी है।" राजा

दाऊद ने लिखा,

> परमेश्वर का मार्ग तो सिद्ध है:
> यहोवा का वचन ताया हुआ है। (भजन 18:30)

और इसलिए हम परमेश्वर के वचन की ओर देखते हैं यह ढूँढने के लिए कि उसने अपने पुत्र यीशु और सुसमाचार के शुभ सन्देश के बारे में क्या कहा है।

## *हम बाइबल में कहाँ जायें ?*

किन्तु हम बाइबल में यह खोजने के लिए कहाँ जायें ? मेरा अन्देशा है कि हम कई भिन्न पद्धतियाँ अपना सकते हैं। एक पद्धति तो यह हो सकती है कि हम नये नियम में जितनी भी बार "सुसमाचार" शब्द का उपयोग हुआ है उन अवसरों को देखें और फिर किसी तरह के निष्कर्ष पर आने का प्रयास करें कि जब विभिन्न लेखक उस शब्द का प्रयोग करते हैं तो उससे वे क्या समझते हैं। अवश्य ही कुछ अवसर ऐसे होंगे जहाँ पर लेखक इसको सावधानी से परिभाषित करेंगे।

यद्यपि इस पद्धति से महत्वपूर्ण बातों को सीखा जा सकता है किन्तु इसमें कुछ कमी भी है। एक तो यह है कि यद्यपि नये नियम में अकसर कुछ लेखक मसीहत के शुभ सन्देश का सारांश देने का इरादा स्पष्ट तौर पर रखते हैं किन्तु वह *सुसमाचार* शब्द का उपयोग बिल्कुल भी नहीं करते हैं। उदाहरण के तौर पर प्रेरितों के नाम के दूसरे अध्याय में पेन्तिकुस्त के दिन पतरस के सन्देश को देखिए। अगर कभी मसीहियत के शुभ सन्देश की घोषणा की गई है तो निश्चित रूप से वह यह है–फिर भी पतरस कभी भी यहाँ पर *सुसमाचार* शब्द का वर्णन नही करता है। दूसरा उदाहरण है प्रेरित यूहन्ना जो अपने नये नियम के सम्पूर्ण लेखन में केवल एक बार "सुसमाचार" शब्द का उपयोग करते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:6)!



मेरा यह सुझाव है, कि फिलहाल हम मसीही सुसमाचार के मुख्य रूपरेखा को परिभाषित करने के कार्य को एक शब्द के अध्ययन के द्वारा नहीं करें परन्तु यह देखने के द्वारा कि सबसे आरम्भिक मसीहियों ने यीशु के और उसके जीवन, मृत्यु और पुन्रूत्थान के महत्व के बारे में क्या कहा। यदि हम बाइबल में प्रेरितों के लेखों और सन्देशों को देखेंगे तो हम उनको शुभ सन्देश को कभी–कभी बहुत संक्षिप्त में और कभी–कभी विस्तार से समझाते हुए पाएँगे, जो कि उन्होंने स्वंय यीशु से उसके बारे में सीखा था। हो सकता है कि हम उन समान प्रश्नों के समूह को और सत्य के उस साझे रूपरेखा को पहचाने में सक्षम होंगे जिनके आधार पर प्रेरितों और आरम्भिक मसीहियों ने प्रभु यीशु मसीह के शुभ सन्देश के प्रस्तुतिकरण को ढाला था।

## *रोमियों 1–4 में सुसमाचार*

पौलुस की रोमियों की पुस्तक सुसमाचार के आधारभूत व्याख्या को देखने के लिए एक अच्छी जगह है। शायद रोमियों में बाइबल की किसी और पुस्तक की तुलना में पौलुस शुभ सन्देश के बारे में क्या सोचता है का सबसे स्पष्टता के साथ सोची–समझी एवं क्रमबद्ध अभिव्यक्ति पायी जाती है।

वास्तव में तो रोमियों की पुस्तक तो एक पुस्तक है ही नहीं, कम से कम जैसा हम पुस्तकों के बारे में सोचते हैं। यह एक पत्र है, इसके माध्यम से पौलुस स्वंय और अपने सन्देश को उन मसीहियों के समूह से अवगत कराता है जिनसे उसने कभी भेंट नहीं की है। यही कारण है कि यह पत्री सुव्यवस्थित तथा क्रमबद्ध प्रतीत होती है। पौलुस चाहता था कि यह मसीही उसको, उसकी सेवा और विशेष तौर से उसके सन्देश के बारे में जानें। वह चाहता था कि वह जानें कि जिस शुभ सन्देश का वह प्रचार करता था उसी शुभ सन्देश पर उन्होंने विश्वास किया है।

पौलुस आरम्भ करता है, "मैं सुसमाचार से लज्जित नहीं होता," "क्योंकि यह प्रत्येक विश्वास करने वालों के लिए, उद्धार के निमित्त

परमेश्वर की सामर्थ है" (रोमियों 1:16)। वहाँ से, विशेष तौर से पहले चार अध्यायों में, पौलुस ने यीशु के बारे में शुभ सन्देश को उत्तम रीति से विस्तार के साथ समझाया। जब हम इन अध्यायों को देखते हैं तो हम पाते हैं कि पौलुस सुसमाचार के अपने प्रस्तुतिकरण को कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों पर आधारित करता है। ऐसे तथ्य जो कि प्रेरित के सुसमाचार के प्रचार में बार बार दिखाई देते हैं। आइये हम रोमियों 1–4 में पौलुस के विचार को विकसित होते हुए देखें।

*प्रथम, पौलुस अपने पाठकों को बताता है कि वह परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं।* रोमियों 1:1–7 में अपने परिचयात्मक टिप्पणियों के उपरान्त पौलुस सुसमाचार का अपना प्रस्तुतिकरण यह घोषित करते हुए आरम्भ करता है कि "परमेश्वर का प्रकोप स्वर्ग से प्रगट होता है" (पद 18)। अपने पहले ही शब्दों के द्वारा पौलुस जोर देकर कहता है कि मानवता स्वतंत्र नहीं है। हमने स्वंय की सृष्टि नहीं की है और न ही हम आत्मनिर्भर हैं और न तो स्वंय के प्रति उत्तरदायी हैं। किन्तु परमेश्वर ने इस संसार की सृष्टि की है और प्रत्येक वस्तु की जो इस संसार में है और इसमें हम भी सम्मिलित हैं। क्योंकि उसने हमें बनाया है इसलिए परमेश्वर के पास यह अधिकार है कि हमसे अपनी आराधना की मांग करे। देखिए 21 पद में पौलुस क्या कहता है: "क्योंकी यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे फिर भी उन्होंने उसे न तो परमेश्वर को उपयुक्त सम्मान, और न ही धन्यवाद दिया : वरन वे अनर्थ कल्पनाएं करने लगे, और उनका निर्बुद्धि मन अन्धकारमय हो गया।"

इस प्रकार पौलुस मानव जाति पर अभियोग लगाता है: उन्होंने परमेश्वर को आदर एवं धन्यवाद न देने के द्वारा पाप किया है। परमेश्वर ने हमे रचा है और हम उसके स्वामित्व में हैं इसलिए हमारा यह दायित्व बनता है कि हम उसको आदर और महिमा दें जिसका वह हकदार है। एवं हमारा जीवन, वचन, चाल–चलन और विचार इस प्रकार का हो कि इससे स्पष्ट हो कि हम परमेश्वर के अधिकार को अपने ऊपर स्वीकार एवं अंगीकार करते हैं। हम उसके द्वारा रचित हैं उसके स्वामित्व के आधीन हैं, उस पर



निर्भर करते हैं और इसलिए उसके प्रति उत्तरदायी हैं। तो यह है वह पहला बिन्दु जिस पर पौलुस ज़ोर देता है जब वह मसीहत के शुभ सन्देश को समझता है।

*द्वितीय, पौलुस अपने पाठकों को बताता है कि उनकी समस्या यह है कि उन्होंने परमेश्वर के विरोध में विद्रोह किया है।* उन्होंने–अन्य सभी लोगों के साथ–न तो परमेश्वर का आदर किया और न ही धन्यवाद दिया जैसा कि उन्हें करना चाहिए था। उनके निर्बुद्धि मन अंधकारमय हो गए और "उन्होंने अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नश्वर मनुष्य, पक्षियों, चौपायों और रेंगने वाले जन्तुओं की मूर्ति की समानता में बदल डाला" (पद 23)। यह वास्तव में एक घृणित चित्र है, है कि नहीं ? जब मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में विचार करता है और उसके बाद इस निर्णय पर आता है कि किसी मेढ़क, पक्षी या *स्वंय* मनुष्यों की लकड़ी या धातु से बनी हुई प्रतिमा परमेश्वर से अधिक गौरवशाली, अधिक संतोषजनक एवं अधिक मूल्यवान है तो ऐसा विचार परमेश्वर के प्रति अत्याधिक अपमान और विद्रोह की ऊचाईयों को दर्शाता है। यह पाप का मूल जड़ और सार है और इसके परिणाम अत्यन्त भयावह हैं।

अगले तीन अध्यायों में पौलुस इस बिन्दु पर बल देता है, वह सम्पूर्ण मानवजाति पर परमेश्वर के विरोध में पापी होने का अभियोग लगाता है। प्रथम अध्याय में वह अन्य जातियों पर ध्यान केन्द्रित करता है फिर वह दूसरे अध्याय में यहूदियों की ओर उतनी ही दृढ़ता के साथ मुड़ता है। ऐसा लगता है कि पौलुस जानता था कि जब वह अन्यजातियों की भर्तसना कर रहा है तो सारे स्वधर्मी यहूदी यह देखकर वाह वाही करेंगे। तो वह 2:1 में पलटकर वाह वाही करने वालों पर अपनी दोष लगाने वाली ऊंगली दिखाता है और कहता है: "इसलिए तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है!" वह कहता है कि अन्यजातियों की नाई यहूदियों ने भी परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा है और उसके न्याय के आधीन हैं।

तीसरे अध्याय के बीच में पहुँचने तक पौलुस संसार के प्रत्येक जन पर परमेश्वर के विरूद्ध में विद्रोह का अभियोग लगा देता है। "क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं" (पद 9)। और उसका गम्भीर निष्कर्ष यह है कि जब हम न्यायकर्ता परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगे तो हर एक मुख शान्त हो जाएगा। कोई भी अपना बचाव नहीं कर पाएगा। कोई भी बहाना प्रस्तुत नहीं किया जाएगा। यह सम्पूर्ण संसार—यहूदी, अन्यजाति, हममें से प्रत्येक जन—परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण रीति से उत्तरदायी ठहराया जाएगा (पद 19)।

अब सच पूछिये, यह पहले दो बिन्दु तो वास्तव में शुभ सन्देश हैं ही नहीं। असल में तो यह काफी *बुरी* खबर है कि मैंने उस पवित्र और न्यायी परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया है जिसने मुझे बनाया है। वास्तव में तो यह सुखद विचार है ही नहीं। किन्तु यह एक महत्वपूर्ण विचार है क्योंकि यह शुभ सन्देश के लिए मार्ग को तैयार करता है। अगर आप इसके बारे में सोचें तो यह समझ में आता है। यदि आपसे कोई कहे कि "मैं तुम्हे बचाने आ रहा हूँ !" यह तब तक आपके लिए शुभ सन्देश नहीं है जब तक आप यह विश्वास नहीं करते कि आपको वास्तव में बचने की आवश्यकता है।

*तृतीय, पौलुस कहता है कि मानवजाति के पाप के लिए परमेश्वर का समाधान यीशु मसीह की मृत्यु के बलिदान और पुनरूत्थान में है।* धर्मी परमेश्वर के सम्मुख पापी होने के कारण हमारी जो दुर्दशा है उसको स्पष्ट करने के उपरान्त, पौलुस अब शुभ सन्देश की ओर मुड़ता है जो कि यीशु मसीह का *सुसमाचार* है।

"परन्तु अब" पौलुस कहता है कि हमारे पाप के बाद भी "*अब* व्यवस्था से पृथक परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है" (पद 21)। दूसरे शब्दों में, अब मनुष्यों के लिए परमेश्वर के सम्मुख अधर्मी के बजाए धर्मी ठहराए जाने का एक मार्ग है। दोषी के बजाए निर्दोष एवं दण्ड के बदले क्षमा। और इसका अच्छे और धर्मी जीवन जीने से कुछ लेना देना नहीं है। यह तो "व्यवस्था



से पृथक प्रकट होती है।"

तो यह कैसे होता है ? पौलुस रोमियों 3:24 में स्पष्टता के साथ बताता है। परमेश्वर के विरूद्ध हमारे विद्रोह के बाद भी एवं एक निराशाजनक स्थिति में होने पर भी हम "उसके अनुग्रह ही से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेत मेत धर्मी ठहराए जाते है।" मसीह के मृत्यु के बलिदान और पुनरूत्थान के द्वारा—उसके लहू और जीवन के कारण—पापी अपने पापों के लायक उस दण्ड से बच सकते हैं।

किन्तु पौलुस एक और प्रश्न का उत्तर देता है। कैसे यह ठीक—ठीक मेरे लिए शुभ सन्देश है ? कैसे *मैं* इस प्रतिज्ञा किये गये उद्धार में सम्मलित हो सकता हूँ।

*अन्त में, पौलुस अपने पाठको को बताता है कि कैसे वह स्वंय इस उद्धार में सम्मलित हो सकते हैं।* और इसी के बारे में वह तीसरे अध्याय के अन्त से चौथे अध्याय तक में लिखता है। जो उद्धार परमेश्वर ने उपलब्ध कराया है वह "यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा आता है" और "सब विश्वास करने वालों के लिए है" (3:22)। तो यह उद्धार कैसे *मेरे* लिए शुभ सन्देश बन जाता है और न सिर्फ किसी और के लिए ? कैसे *मैं* इसमें सम्मलित हो सकता हूँ ? यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा और बचाए जाने के लिए किसी और पर नहीं परन्तु सिर्फ उस पर भरोसा करने के द्वारा। पौलुस समझता है कि "परन्तु वह जो काम नहीं करता, वरन उस पर विश्वास करता है जो भक्तिहीन को धर्मी ठहराता है, उसका विश्वास धार्मिकता गिना जाता है" (4:5)।

## *चार महत्वपूर्ण प्रश्न*

अब रोमियों 1—4 में पौलुस के तर्क को देखने के बाद, हम देख सकते हैं कि इन चार महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर उसके सुसमाचार उद्घघोषणा के

केन्द्र में हैं :

1. हमें किसने बनाया है और किसके प्रति हम उत्तरदायी हैं?
2. हमारी समस्या क्या है ? दूसरे शब्दों में क्या हम मुसीबत में हैं और क्यों ?
3. उस समस्या के लिए परमेश्वर का क्या समाधान है ? उसने हमें बचाने के लिए क्या कार्य किया है ?
4. कैसे मैं–स्वयं यहाँ पर अभी–उस उद्धार में सम्मिलित हो सकता हूँ ? यह मेरे लिए कैसे शुभ सन्देश बन सकता है और न केवल किसी और के लिए ?

हम इन चार प्रमुख बिंदुओं का सारांश ऐसा कर सकते हैं: परमेश्वर, मनुष्य, मसीह, और प्रतिउत्तर।

निसन्देह पौलुस आगे चलकर उन अनेक प्रतिज्ञाओं का खुलासा करता है जिन्हें परमेश्वर ने मसीह में बचाए जाने वालों से की है। और इनमें से बहुत सी प्रतिज्ञायें उचित रीति से मसीहियत के शुभ सन्देश और यीशु मसीह के सुसमाचार के हिस्से के रूप में पहचानी जा सकती हैं। परन्तु यह महत्वपूर्ण है कि हम आरम्भ से ही समझें कि वह सारी भव्य प्रतिज्ञाएँ मसीही शुभ सन्देश के हृदय और केन्द्र पर आधारित हैं और वहीं से प्रवाहित होती हैं। वह प्रतिज्ञाएँ केवल उनके पास आती हैं जिनके पाप क्रूसित और जी उठे मसीह में विश्वास के द्वारा क्षमा हुए हैं। इसीलिए पौलुस जब सुसमाचार के हृदय को प्रस्तुत करता है तो वह इन चार महत्वपूर्ण तथ्यों के साथ आरम्भ करता है।

### *नये नियम के शेष भाग में सुसमाचार*

ऐसा केवल पौलुस ही नहीं करता है। जब मैं सम्पूर्ण नये नियम में प्रेरितों के लेखन को पढ़ता हूँ, तब मैं उनको बारम्बार इन चार प्रश्नों का उत्तर



देते हुए पाता हूँ। चाहे वह कुछ अन्य बात कहें ऐसा प्रतीत होता है कि उनके सुसमाचार के प्रस्तुतिकरण के केन्द्र में यह विषय हमेशा पाये जाते हैं। सन्दर्भ, दृष्टीकोण, शब्द और पद्धति बदल सकती है किन्तु कैसे भी और किसी प्रकार से आरम्भिक मसीही *हमेशा* इन चार विषयों तक पहुँच जाते हैं : हम अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। हमने उस परमेश्वर के प्रति पाप किया है और हमारा न्याय होगा। *परन्तु* परमेश्वर ने यीशु मसीह में कार्यरत होकर के हमें बचाया है। और हम पापों से पश्चाताप और यीशु में विश्वास करने के द्वारा उस उद्धार को पाते हैं।

परमेश्वर। मनुष्य। मसीह। प्रतिउत्तर।

आइये हम नये नियम के कुछ अन्य स्थलों को देखें जहाँ पर यीशु के सुसमाचार का सारांश दिया गया है। उदाहरण के तौर पर पहला कुरिन्थियों के पन्द्रह अध्याय में पौलुस के जाने पहचाने शब्दों को ही लीजिए:

> हे भाइयों, अब मैं तुम्हें वही सुसमाचार सुनाता हूँ जिसका मैनें तुम्हारे मध्य प्रचार किया, जिसे तुमने ग्रहण भी किया और जिसमें तुम स्थिर हो, जिसके द्वारा तुम उद्धार भी पाते हो, इस शर्त पर कि तुम उस वचन को जिसका मैंने तुम्हारे मध्य प्रचार किया दृढ़ता से थामे रहो–अन्यथा तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ।
>
> मैंने यह बात जो मुझ तक पहुंची थी उसे सब से मुख्य जानकर तुम तक भी पहुंचा दी, कि पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरा, और गाड़ा गया, तथा पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, तब वह कैफा को, और फिर बारहों को दिखाई दिया। (1–5 पद)

क्या आप यहाँ पर केन्द्रिय ढाँचा को देख रहे हैं ? पौलुस यहाँ पर रोमियों 1–4 के समान विस्तृत नहीं है किन्तु मुख्य रूपरेखा फिर भी स्पष्ट है। मानव जाति मुसीबत में है "स्वंय के पापों" में डूबी हुई है और "बचाए जाने" की आवश्यकता में है (यह प्रत्यक्ष किन्तु अव्यक्त है कि परमेश्वर के न्याय से)। किन्तु उद्धार इसमें है कि : "मसीह हमारे पापों के लिए मरा...गाड़ा गया...और जी उठा।" और इन सबको हम अपना सकते हैं "उस वचन को जिसका मैंने तुम्हारे मध्य प्रचार किया दृढ़ता से थामने के द्वारा," और सच में विश्वास करने के द्वारा न कि व्यर्थ में। तो फिर यहाँ पुनः है : परमेश्वर, मनुष्य, मसीह, प्रतिउत्तर।

प्रेरितों के काम में भी जो सन्देश लिखे गये हैं उनमें भी सुसमाचार की यह केन्द्रिय संरचना स्पष्ट है। जब पतरस पिन्तेकुस्त पर लोगों को बताता है कि उन्हे उसके यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान की उदघोषणा के प्रतिउत्तर में क्या करना चाहिए तो वह कहता है कि, "मन फिराओ और यीशु मसीह के नाम से तुम में से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारे पापों की क्षमा हो" (प्रेरितों 2:38)। पुनः पतरस की अपील विस्तार से नहीं है और परमेश्वर का न्याय फिर से अव्यक्त है किन्तु वह सब यहाँ फिर भी उपस्थित है। समस्या : आपकी आवश्यकता है कि परमेश्वर आपके पापों को क्षमा करे, न कि उनके लिए आपका न्याय करे। समाधान : यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान, जिसके विषय में पहले ही पतरस अपने सन्देश में विस्तारपूर्ण बात कर चुका है। अनिवार्य प्रतिउत्तर : पश्चाताप, विश्वास और बपतिस्मे के कदम के द्वारा प्रमाणित।

प्रेरितों के काम 3:18–19 में पतरस के एक अन्य सन्देश में यह चार महत्वपूर्ण तथ्य पुनः प्रत्यक्ष होते हैं :

> परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब नबियों के मुख से पहिले ही बता दिया था, कि उसका मसीह दुख उठाएगा, उसने इस रीति से पूर्ण किया। इसलिए पश्चाताप करो और



> लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाए, जिससे कि प्रभु की उपस्थिति से सुख चैन के दिन आएँ।

समस्या : आपकी आवश्यकता है कि आपके पाप मिटाये जायें न कि परमेश्वर के द्वारा आपका न्याय हो। समाधान : मसीह ने दुख उठाया। प्रतिउत्तर : पश्चाताप और परमेश्वर की ओर विश्वास में मुड़ना।

अथवा पतरस के द्वारा कुरनेलिस और उसके परिवार को दिये गये सुसमाचार के बारे में विचार कीजिए:

या फिर पतरस के द्वारा कुरनेलिस और उसके परिवार को दिये गये सुसमाचार के बारे में विचार कीजिए :

> हम उन सब बातों के गवाह हैं जो उसने यहूदियों के देश और यरूशलेम में की, और उन्होंने क्रूस पर लटका कर उसे मार भी डाला। परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन जिला उठा कर प्रकट भी होने दिया....सब नबी उसकी साक्षी देते हैं कि प्रत्येक जो उस पर विश्वास करता है, उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है। (प्रेरितों 10:39–43)

पापों की क्षमा। क्रूसित और जी उठने वाले के नाम में। सबके लिए जो विश्वास करते हैं।

पौलुस भी उसी सुसमाचार का प्रचार प्रेरितों के काम 13 अध्याय में करता है :

> इसलिए हे भाइयों, तुम यह जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हे सुनाया जाता है, और इसी के द्वारा प्रत्येक विश्वास करने वाला उन सब बातों से छुटकारा पाता है जिन से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा छुटकारा नहीं पा

सकते थे। (पद 38–39)

एक बार पुनः स्पष्ट पहचान में आने वाली रूपरेखा है परमेश्वर, मनुष्य, मसीह और प्रतिउत्तर। आपकी आवश्यकता है कि परमेश्वर आपके "पापों को क्षमा करें।" यह होता है "यीशु के द्वारा" और यह संभव है सबके लिए "जो विश्वास करते हैं।"

## *मुख्य तथ्यों को विभिन्न तरीकों से समझाना*

यह तो साफ है कि परमेश्वर–मनुष्य–मसीह–प्रतिउत्तर का ढाँचा कोई निश्चित ढला हुआ फॉर्मूला नहीं है। ऐसा नहीं है कि जब प्रेरित सुसमाचार का प्रचार करते थे तो वह अपनी जाँच सूची में से इन बिन्दुओं पर निशान लगाते जाते थे। यह तो संदर्भ पर निर्भर करता था कि सन्देश के लिए कितना समय है एवं उनके श्रोतागण कौन हैं और इसी के अनुसार वह इन चार बिन्दुओं को अलग–अलग विस्तार से समझाते थे। कभी–कदार इनमें से एक या दो बातें स्पष्ट वर्णन के बजाय अव्यक्त रह जाती हैं–विशेष तौर से इस तथ्य का वर्णन कि परमेश्वर के प्रति हम उत्तरदायी हैं और उससे हमें क्षमा दान की आवश्यकता है। किन्तु यह तो ऐसा तथ्य है जो कि प्रत्येक यहूदियों के मस्तिष्क में गहराई से छपा होगा और ऐसे ही लोगों के मध्य में प्रेरित अक्सर प्रचार करते थे।

दूसरी तरफ, जब पौलुस अरियुपगुस में एक अन्यजाति दार्शनिकों के समूह से बात करता है तो वह बिल्कुल आरम्भ से परमेश्वर के साथ ही प्रारम्भ करता है। प्रेरितों के काम के 17 अध्याय में पौलुस के सन्देश को अक्सर अन्यजाति समुदाय के बीच में सुसमाचार प्रचार करने के लिए आदर्श के रूप में उल्लेखित किया जाता है। किन्तु वहाँ इस सन्देश के बारे में कुछ बहुत रोचक और असमान्य बात है। आप इसे ध्यान से देखेंगे तो यह समझना आरम्भ करेंगे कि पौलुस मसीह के शुभ सन्देश का यहाँ प्रचार बिल्कुल ही नहीं करता है किन्तु केवल बुरे समाचार की बात करता है !



वह प्रारम्भ करके कहता है, "मुझे आप उस अनजाने परमेश्वर के बारे में बताने दीजिए जिसके लिए आपने एक वेदी बनाई है।" फिर वह उनको 24 से 28 पदों में समझाता है, कि परमेश्वर एक है और इस परमेश्वर ने संसार को बनाया है और वह हमें अपनी आराधना करने के लिए बुलाता है। यह प्रमाणित करने के बाद वह 29 पद में पाप के सिद्धान्त को समझाता है और समझाता है कि पाप की जड़ परमेश्वर के बजाए सृष्टि की हुई वस्तुओं की आराधना में हैं। और वह घोषित करता है कि परमेश्वर उसके श्रोताओं का न्याय करेगा, "एक मनुष्य के द्वारा जिसको उसने नियुक्त किया है," एक मनुष्य के द्वारा जिसको परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया (पद 31)।

और फिर वह रूक जाता है ! इसको ध्यान से देखिए। यहाँ पर पापों की क्षमा का कोई वर्णन नहीं है, क्रूस का वर्णन नहीं है और उद्धार की कोई प्रतिज्ञा नहीं है–केवल परमेश्वर की माँगों की घोषणा और परमेश्वर के आने वाले न्याय के प्रमाण के रूप में पुनरूत्थान की उद्घोषणा ! पौलुस तो यीशु के नाम का वर्णन भी नहीं करता है।

तो यहाँ क्या हो रहा है ? क्या पौलुस यहाँ पर सुसमाचार का प्रचार *नहीं* करता है ? नहीं तुरन्त उस समय नहीं। उसके सार्वजनिक सन्देश में कोई सुसमाचार नहीं, कोई शुभ सन्देश नहीं। जिस सन्देश की पौलुस ने घोषणा की है वह तो केवल बुरा समाचार है। किन्तु 32–34 पद को देखिए, जहाँ बाइबल कहती है कि वह लोग पौलुस को पुनः सुनना चाहते थे और उनमें से कुछ ने अन्त मे विश्वास भी किया। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस ने शायद बाद में किसी समय, हो सकता है कि सार्वजनिक तौर पर या तो व्यक्तिगत रूप से *शुभ* सन्देश का प्रचार किया था कि पापी इस आने वाले न्याय से बच सकते हैं।

अन्य प्रेरितों की नाई, पौलुस सुसमाचार के मुख्य तथ्यों को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत करने में सक्षम था। किन्तु मुख्य बात जो हमें समझना चाहिए वह यह है कि वास्तव में वहाँ पर सुसमाचार के कुछ मुख्य तथ्य

मौजूद *थे* और जो सन्देश एवं पत्र हमारे पास संरक्षित होकर पहुँच गये हैं, इनके माध्यम से हमें अच्छी तरह ज्ञात है कि वह मुख्य तथ्य क्या थे–अथवा क्या हैं। रोमियो, 1 कुरिंथियों, प्रेरितों के काम के संदेशों और सम्पूर्ण नये नियम में आरम्भिक मसीहियों ने अपने शुभ सन्देश के उद्घोषणा को कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों के आधार पर ढाला था।

सबसे आरम्भ में बुरी खबर है : कि परमेश्वर आपका न्यायी है और आपने उसके विरूद्ध पाप किया है। और फिर उसके उपरान्त सुसमाचार : परन्तु यीशु मरा ताकि पापी अपने पापों से क्षमा प्राप्त कर सके यदि वह पश्चाताप करे और उस पर विश्वास करे।

## अध्याय दो

# परमेश्वर एक धर्मी सृष्टिकर्ता

**आप मुझे ईश्वर से अपना परिचय** कराने दीजिए। (ध्यान दीजिए कि यह ईश्वर है न कि परमेश्वर।)

इससे पहले कि हम भीतर जाएँ आप अपनी आवाज को थोड़ा धीमा कीजिए। हो सकता है कि वह सो रहे हैं। आपको मालूम है न कि वह वृध हैं और इस "आधुनिक" संसार को न तो वह अधिक समझते हैं और न ही पसन्द करते हैं। उनके सुनहरे दिन बीत चुके है–जिनके बारे में बात करना उन्हें बहुत पसन्द है, हममें से तो कई उस समय पैदा भी नहीं हुए थे। यह उस समय की बात है जब लोग उसके विचारों के बारे में परवाह करते थे और उसको अपने जीवन में महत्वपूर्ण मानते थे।

और निसन्देह, अब सब बदल गया है और बेचारे ईश्वर अभी तक इस स्थिति को ठीक तरह से अपना नहीं पाए हैं। समय तो चलता रहा और उनके निकट से होकर चला गया। अब वह अपना ज्यादातर समय पीछे की बगिया में व्यतीत करते है। मैं कभी–कदार वहाँ उनसे मिलने जाता हूँ और वहाँ हम गुलाबों के पौधों के बीच में अपना समय बातें करते और टहलते हुए व्यतीत करते हैं....

खैर, ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से लोग उनको अभी भी पसन्द करते हैं–कम से कम वह अपने लोकप्रियता के आकड़ों को काफी ऊँचा बनाए रखे हैं। और आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि अभी भी अनेक लोग उनसे भेंट करने के लिए आते हैं और समय व समय विभिन्न विषयों के बारे में उनसे पूछताछ करते हैं, वह इस बात से सहमत हैं। वह यहाँ पर मदद करने के लिए ही हैं।

ऊपरवाले का धन्यवाद है, आपने जो उनके चिड़चिड़ेपन के बारे में पुरानी पुस्तकों में पढ़ा है–आपको मालूम है, जैसे कि पृथ्वी से लोगों को निगलवाना, नगरों पर अग्नि बरसाना उस तरह की घटनाएँ–वह सब बातें उनके बढ़ती हुई उम्र के साथ बीती हुई जान पड़ती है। अब तो वह सिर्फ एक अच्छे स्वभाव वाले और आसानी से प्रसन्न रहने वाले मित्र की नाई हैं जिनसे बात करना बहुत सरल है। विशेष करके क्योंकि वह कभी भी पलट कर प्रश्न नहीं करते हैं। और जब वह बात करते भी हैं, तो अकसर कुछ विचित्र "चिन्ह" के द्वारा यह बताने के लिए कि चाहे हम जो कुछ भी करें उससे वह सहमत हैं। इस तरह के मित्र वास्तव में सबसे बेहतर मित्र होते हैं, हाँ कि नहीं ?

लेकिन क्या आप उनके बारे में सबसे अच्छी बात को जानते हैं ? वह मुझ पर दोष नहीं लगाते हैं। कभी भी किसी भी बात के लिए नहीं। हाँ निश्चय ही, मुझे मालूम है कि अपने मन में वह चाहते हैं कि मैं और भी बेहतर बन जाऊँ–अधिक प्रेमी, कम स्वार्थी, और वह सब बातें–किन्तु वह वास्तविकता जानते हैं। उनको मालूम है कि मैं मनुष्य हूँ और सिद्ध नहीं हूँ एवं मुझे निश्चय है कि वह इस बात से भी सहमत हैं और वैसे भी, लोगों को क्षमा करना तो उनका काम ही है। वह यही *करते* हैं। आखिरकार वह प्रेम हैं, क्या यह बात सही है कि नही ? और मैं प्रेम के बारे में यह सोचता हूँ कि वह "कभी न दोष लगाने वाला किन्तु केवल क्षमा करने वाला है।" *मैं* तो ऐसे ही ईश्वर को जानता हूँ। और इसके अलावा किसी अन्य रूप में मैं उनको ग्रहण नहीं कर सकता हूँ।

ठीक है, एक क्षण रूकिए....अच्छा, अब हम अन्दर जा सकते हैं। और चिन्ता मत कीजिए, हमें अधिक देर नहीं ठहरना है। सच में, वह तो आभारी हैं कि उन्हें कम से कम कुछ समय तो दिया जा रहा है।

### *परमेश्वर के बारे में पूर्व–धारणाँए*

ठीक है, ठीक है। यह छोटी सी कहानी थोड़ी हास्यपद है। किन्तु मैं



यह जानने को उत्सुक हूँ कि क्या वास्तव में परमेश्वर के बारे में लोगों के विचारों से यह भिन्न है कि नही। यहाँ तक उन लोगों के विचारों से जो अपने आप को मसीही कहलाते हैं। अधिकांश तौर पर वह दयालु, मिलनसार, थोड़ा सा घबराया हुआ और ज़रूरतमंद किन्तु एक प्रेमी दादा के समान है जो मनसायें तो रखता है परन्तु कोई माँग नहीं करता है। और अगर आपके पास उसके लिए समय नहीं है तो उसको सुरक्षित तौर पर अनदेखा किया जा सकता है। वह इस तथ्य के प्रति बहुत, बहुत, बहुत उदार मन रखते हैं और समझते हैं कि मनुष्य गलतियाँ करता है–वास्तव में तो इस बारे में वह हम में से प्रत्येक से बढ़कर अधिक समझ रखते हैं।

एक समय था कि अगर लोग अपने आप को मसीही नहीं भी कहलाते थे तौभी उनके पास परमेश्वर और उसके चरित्र के बारे में बाइबल की बुनियादी शिक्षा की एक समझ थी। यह तो उस वातावरण का हिस्सा था जिसमें लोग साँस लेते थे। और जैसे प्रेरितों ने अपने यहूदी बन्धुओं के साथ किया था–आप भी जब लोगों को सुसमाचार प्रस्तुत करते थे तब आप कुछ पूर्वधारणाओं को बना सकते थे कि वह क्या जानते हैं।

लेकिन अब कम से कम दुनिया के अधिकतर हिस्सों में ऐसा सत्य नहीं है। मैं पूर्वी टैक्सस के एक छोटे से शहर में बड़ा हुआ और अक्सर यहाँ पर किसी को सुसमाचार सुनाने का मतलब उस सन्देश को दोहराना है जो कि वह हज़ारों बार सुन चुके हैं। किन्तु जब मैनें कैनेट्टिकट प्रान्त के न्यू हेवन शहर में कॉलेज का अध्ययन प्रारम्भ किया तो वह जगह एक दूसरी दुनिया के समान थी। और अचानक ही मैने अपने आप को ऐसे लोगों के बीच में पाया जिन्होंने बड़े होते हुए परमेश्वर के बारे में नहीं सुना था। और यहाँ तक कि वह मुझको इस विचार के बारे में आरम्भ से ही चुनौती देते थे। मुझे याद है कि पहली बार जब मैं किसी से मिला जिसने मेरे परमेश्वर का वर्णन करने पर यह कहने के द्वारा अभिवादन किया कि, "आप मजाक कर रहे होंगे। क्या आप यह विश्वास करते हैं ?" और उसके बाद वह हस पड़ा। और इस तरह की घटना अगले कई वर्षों में दर्ज़नों बार घटी और अन्ततः मैंने यह बोलना

सीख लिया कि, "हाँ, मैं विश्वास करता हूँ।" लेकिन मैनें बहुत शीघ्र ही यह भी सीखा कि मैं इस बारे में कोई भी पूर्वधारणा नहीं बना सकता था कि लोग परमेश्वर के बारे में क्या जानते हैं और यदि मैं यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करूँगा तो मुझे बिलकुल आरम्भ से ही शुरू करना होगा—स्वयं परमेश्वर के साथ।

और हाँ, परमेश्वर ने अपने बारे में क्या प्रकट किया है, इसको अध्ययन करने में आप अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं (और करना भी चाहिए)। किन्तु सुसमाचार को विश्वासयोग्यता के साथ प्रस्तुत करने के लिए आपको परमेश्वर के बारे में सब कुछ जो आप जानते हैं बोलने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु परमेश्वर के बारे में कुछ आधारभूत तथ्य हैं जिन्हें किसी व्यक्ति को समझना आवश्यक है अगर वह यह जानना चाहता है कि मसीहित के शुभ सन्देश में क्या हो रहा है। इसके बारे में आप इसे ऐसा समझिये कि यह बुरे सन्देश के पीछे का शुभ सन्देश के पीछे का शुभ संदेश है।

दो मुख्य बिन्दु हैं जिन्हें हमें आरम्भ से ही स्पष्ट कर देना चाहिए—कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है, और वह पवित्र एवं धर्मी है।

### *सृष्टिकर्ता परमेश्वर*

मसीही सन्देश का आरम्भ—यहाँ तक कि मसीही बाइबल का आरम्भ—यह है कि "परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" प्रत्येक वस्तु उस बिन्दु से आरम्भ होती है और अगर आप इस बिन्दु को गलत समझेंगे तो इसके बाद हर एक जो बात आयेगी वह भी गलत होगी, ठीक वैसे ही जैसे कि एक गलत सधे हुए धनुष से बाण का निशाना लगना।

उत्पत्ति की पुस्तक का आरम्भ परमेश्वर के द्वारा इस संसार की सृष्टि की कहानी के साथ होता है : इसके पर्वत और धाटी, जानवर और मछली,



पक्षी और रेंगने वाले जन्तु और सब कुछ। परमेश्वर ने बाकी की दुनिया की भी सृष्टि की : चाँद और तारे, ग्रह और नक्षत्र। यह सब उसके बोले हुए वचन के द्वारा अस्तित्व में आये और यह सब *शून्य* से अस्तित्व में आये हैं। ऐसा नहीं है कि जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं उसे परमेश्वर ने किसी पहले से उपस्थित सामग्री को लिया और मिट्टी की नाई विभिन्न चीज़ों के आकार में ढाल दिया। नहीं, उत्पत्ति हमें बताता है कि उसने जो कहा वह हो गया। उसने कहा कि "उजियाला हो" और उजियाला हो गया।

बाइबल के कई स्थल हमें बताते हैं कि कैसे सृष्टि परमेश्वर की महिमा और सामर्थ की गवाही देती है। भजन 19:1 कहता है कि "आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है।" पौलुस रोमियों 1:20 में कहता है कि "क्योंकि जगत की सृष्टि से ही परमेश्वर के अदृश्य गुण, अनन्त सामर्थ और परमेश्वरत्व उसकी रचना के द्वारा समझे जाकर स्पष्ट दिखाई देते हैं।" यदि आप कभी किसी पहाड़ी के कोने पर खड़े हुए हैं एवं अपने ऊपर बादलों को छाये हुए और अपने नीचे पक्षियों को उड़ते हुए तथा झपट्टा मारते हुए देखा है अथवा अगर आप कभी किसी खुले मैदान में खड़े हुए हैं और तभी आकाश के छोर पर घनघोर बादल और बिजली की चमक को गरजते हुए देखा और उसी समय आपने अपने अन्दर भय के छोटे से प्रवाह को महसूस किया है, यदि आपने यह अनुभव किया है तो आप इसका अर्थ जानते हैं। इस सृष्टि की भव्यता में ऐसा ही कुछ है जो कि मानव हृदय को पुकार कर के कहता है कि "केवल तुम ही सब कुछ नहीं हो।"

उत्पत्ति में सृष्टि की कहानी का प्रति दिन व्यापकता और महत्व में प्रसार होता है। सर्वप्रथम उजियाले की सृष्टि होती है फिर जल फिर भूमि फिर चंद्रमा और सूर्य फिर पक्षी, मछलियों और जानवर और फिर परमेश्वर के सृष्टि के कार्य की ऊँचाई पर—नर और नारी।

फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप में,

> अपनी समानता के अनुसार बनाए। और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों पर तथा घरेलु पशुओं और सारी पृथ्वी और हर एक रेंगनेवाले जन्तु पर जो पृथ्वी पर रेंगता है, प्रभुता करें।"
>
> और परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में सृजा। अपने ही स्वरूप में परमेश्वर ने उसको सृजा। उसने नर और नारी करके उनकी सृष्टि की। (उत्पति 1:26–27)

सृष्टि की कहानी के बारे में आप चाहे जो कुछ भी सोचते हों किन्तु इस दावे के आशय अत्यन्त बड़े हैं कि परमेश्वर ने इस संसार को सृजा है और विशेष तौर से परमेश्वर ने *आपकी* सृष्टि की है। एवं यह संसार स्वंय में सब कुछ नहीं है किन्तु यह *किसी अन्य* के मस्तिष्क, वचन और हाथ की रचना है, ऐसा विचार विशेष करके हमारे युग में एक क्रान्तिकारी विचार है। निराशावाद के विपरीत जो कि मानवीय सोच पर इतना हावी है, इसका अर्थ यह है कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का कुछ उद्देश्य है–और इसमें मनुष्य जाति भी सम्मिलित है। हम अव्यवस्थित संयोग, अनुवंशिक परिर्वतन, जीन में फेरबदल या गुणसूत्र सम्बधी दुर्घटना का परिणाम नहीं हैं। हमारी सृष्टि हुई है ! हममें से प्रत्येक जन परमेश्वर के स्वंय के एक विचार, योजना और कार्य का प्रतिफल है। और यह मानव जीवन को अर्थ और ज़िम्मेदारी दोनो प्रदान करता है (उत्पत्ति 1:26–28)।

हममें से कोई भी स्वतंत्र नहीं है और इस तथ्य को समझना ही सुसमाचार को समझने की कुंजी है। हमारे स्वतंत्रता और अधिकारों के बारे में लगातार वार्ता के बाद भी हम वास्तव में उतने स्वंतत्र नहीं हैं जितना कि हम सोचते हैं। हमारी सृष्टि हुई है। हम बनाए गए हैं और इसलिए हम अधीनता में है।

क्योंकि परमेश्वर ने हमें सृजा है इसलिए उसके पास यह अधिकार



है कि हमें बताये कि हम कैसे जियें। इसलिए अदन की वाटिका में उसने आदम और हव्वा को यह बताया कि कौन से वृक्षों में से वह खा सकते थे और किन से नहीं (उत्पत्ति 2:16–17)। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर एक बच्चे की मानिंद कार्य कर रहा था जो थोड़ा सा अधिकार मिलने पर अपने छोट भाई पर दादागिरी करने लगा और अपनी इच्छा के अनुसार नियम बनाने लगा केवल यह देखने के लिए कि उसका परिणाम क्या होगा। नहीं बाइबल बताती है कि परमेश्वर भला है। उसको मालूम था कि उसके लोगों के लिए सबसे उत्तम क्या है। और उसने उनको नियम दिये जिनसे उनकी प्रसन्नता और भलाई संरक्षित रहे एवं वृद्धि करें।

यदि कोई व्यक्ति मसीहत के शुभ सन्देश को समझना चाहता है तो उसके विषय में थोड़ी समझ अत्यन्त आवश्यक है। सुसमाचार पाप की बुरी खबर के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया है। कोई भी व्यक्ति यदि अपने ऊपर से सृष्टिकर्ता परमेश्वर के अधिकार को अस्वीकृत करे तो वह पाप है। मनुष्य के अस्तित्व का मौलिक सत्य तथा वह सोत्र जहाँ से सब कुछ प्रवाह होता है वह यह है कि परमेश्वर ने हमें सृजा है एवं इसलिए वह हमारा स्वामी है।

### *पवित्र और धर्मी परमेश्वर*

यदि आपको परमेश्वर के चरित्र का वर्णन कुछ ही शब्दों में करना हो तो आप क्या कहेंगे ? यह सब तो सच है कि वह प्रेमी और भला है ? कि वह दयालु और क्षमा करने वाला है ? जब मूसा ने परमेश्वर से माँगा कि वह उसे अपनी महिमा दर्शाये और अपने नाम को घोषित करे तो परमेश्वर ने उससे यह कहा :

> "यहोवा, यहोवा परमेश्वर, दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीमा, और करूणा तथा सत्य से भरपूर; हजारों पर करूणा करनेवाला; अधर्म अपराध और पाप क्षमा करनेवाला। (निर्गमन 34:6–7)

यह कितनी अदभुत बात है ! जब परमेश्वर हमको अपना नाम बताना चाहता है एवं अपनी महिमा दर्शाना चाहता है–जो कि वास्तव में हमें उसके हृदय को दिखाता है–तो वह क्या कहता है ? कि वह दयालु और प्रेमी है, क्रोध करने में धीमा और बहुतायत से प्रेम करता है।

यहोवा तो धर्मी है,
वह धार्मिकता से प्रीति रखता है।

भजन 33:5 कहता है, "वह धार्मिकता और न्याय से प्रीति रखता है।" और दो भजन तो यहाँ तक दावा करते हैं कि "धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के आधार हैं "(भजन 89:14, 97:2) ! क्या आप देख रहे हैं कि यह पद क्या कह रहे हैं ? परमेश्वर का इस संसार पर राज्य एवं सृष्टि के ऊपर उसकी सार्वभौमिक प्रभुता उसके हमेशा सिद्ध, धर्मी और न्यायी बने रहने पर आधारित है।

इसलिए अतंतः ऐसा विचार असन्तुष्ट करता है जिसमें परमेश्वर एक अनैतिक सफाई–कर्मचारी के नाई है। यह परमेश्वर को अन्यायी और अधर्मी ठहराता है। यह परमेश्वर को एक ऐसा ईश्वर ठहराता है जो सिर्फ पाप को छिपाता है–और यहाँ तक पाप *से* छुपता भी है–बजाए इसके कि उसका सामना करे और उसका नाश करे। ऐसा व्यवहार उसको एक नैतिक कायर बनाता है।

और कौन इस तरह के परमेश्वर को चाहता है ? ऐसे लोगों को ध्यानपूर्वक देखना रोचक साबित होता है जो इस बात का तो ज़ोर देते हैं कि परमेश्वर *उनका* न्याय नहीं करेगा किन्तु जब उनका स्वंय किसी भयानक दुष्टता से आमना–सामना होता है *तब* वह न्यायी परमेश्वर की माँग करते हैं और वह उसको *तुरन्त* चाहते हैं। वह चाहते हैं कि परमेश्वर उनके पापों को अनदेखा कर दे किन्तु आतंकवादियों के पापों को नही। वह कहते हैं कि "मुझे माफ कर दीजिए" किन्तु "आप उनके पापों को क्षमा करने



की हिम्मत नहीं कीजिएगा !" देखिए आखिर कोई भी ऐसा परमेश्वर नही चाहता है जो कि दुष्टता का सामना करने से इन्कार करता है। वह केवल ऐसा परमेश्वर चाहते हैं जो कि *उनके स्वंय की* दुष्टता का लेखा–जोखा न ले।

पवित्रशास्त्र हमें बताता है क्योंकि वह सिद्ध रूप से न्यायी और धर्मी है इसलिये परमेश्वर सारी दुष्टता के साथ एक बार सदा सर्वदा के लिये व्यवहार करेगा। हबक्कूक 1:13 कहता है,

तेरी ऑखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता,
और न तू दुष्टता पर दृष्टि कर सकता है।

ऐसा करना तो उसके सिंहासन की नींव को नकारने की नाई होगा। इससे बढ़कर यह तो उसके स्वंय को नकारने की नाई होगा और परमेश्वर ऐसा नहीं करेगा।

परमेश्वर को एक दयालु और प्रेमी के रूप में सोचने में अधिकतर लोगों को कोई दिक्कत नहीं होती है। हम मसीही लोगों ने संसार को यह यकीन दिलाने में एक उत्तम काम किया है कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है। किन्तु यदि हम यह समझना चाहते हैं कि यीशु मसीह का सुसमाचार कितना महिमामयी और जीवन–दायक है तो हमें यह भी समझना होगा कि यह प्रेमी और दयालु प्रभु, पवित्र और धर्मी भी है। और वह यह दृढ़ संकल्प कर चुका है कि वह कभी भी पाप को न तो अन्देखा करेगा, न ही मुहँ फेरेगा और न ही सहेगा।

चाहे वह हमारे ही पाप क्यों न हो और स्वाभाविक तौर से यह हमको बुरे सन्देश की ओर ले जाती है।

## अध्याय तीन

# पापी मनुष्य

**मैंने हाल ही में** एक गलत पार्किंग के चालान का जुर्माना भरा जोकि एक आसान कार्य था। मैंने अपने विरूद्व में अभियोग को पढ़ा, चालान पर्चे को पलटा और उस जगह सही के निशान को लगा दिया जहाँ पर लिखा था कि "मैं अपने दोष को स्वीकार करता हूँ।" फिर मैंने अपने महानगर के यातायात विभाग के नाम एक 35 डॉलर का चैक लिखा फिर लिफाफे में भर करके डाक में डाल दिया।

मै एक दोषी एंव दण्डित अपराधी हूँ।

लेकिन किसी वजह से यद्यपि मैने "दोषी" बॉक्स पर सही के निशान को लगाया किन्तु मैं दोषी नही महसूस करता हूँ। मैं इस छोटे से कानून को तोड़ने की वजह से अपनी नींद को नही खोऊंगा। मुझे किसी से क्षमा मांगने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती है। और अब मैं इसके बारे में सोचता हूँ तो थोड़ी कडुवाहट भी महसूस करता हूँ क्योंकि यह चालान पिछले बार के चालान से दस डॉलर अधिक था।

कानून तोड़ने पर क्यों मुझे बुरा नहीं लगता है ? क्योंकि आप अगर इस बारे में विचार करें तो पार्किंग का नियम तोड़ना आखिरकार इतना बड़ा या घोर अपराध प्रतीत नहीं होता है। अच्छा, अगली बार मैं पार्किंग भुगतान के मीटर में अतिरिक्त सिक्का डाल दूंगा किन्तु मेरा विवेक मुझे इस घटना की वजह से नहीं कचोटता है।

मैंने पिछले कुछ वर्षों में ध्यान दिया है कि अधिकतर लोग जब पाप के बारे में विचार करते हैं विशेष तौर से अपने पापों के बारे में तो वह उसे



यातायात या पार्किंग नियमों के उल्लन्घन से कुछ अधिक नहीं समझते हैं। हम सोचते हैं कि हाँ "तकनीकी तौर पर तो पाप ऊँचे पर विराजमान परमेश्वर के द्वारा नीचे सौंपे गए व्यवस्था का उल्लन्घन है और कुछ उस तरह की बातें परन्तु निश्चय ही परमेश्वर को मालूम होगा कि मुझसे बड़े अपराधी वहाँ बाहर हैं और वैसे भी किसी को चोट नहीं पहुँचीं और मैं जुर्माना भरने के लिए तैयार हूँ। और अब–इस तरह की घटना को लेकर आत्ममंथन करने की कोई आवश्यकता है ही नहीं।"

शायद नहीं, कम से कम अगर आप पाप के बारे में ऐसी हल्की समझ रखते हैं। किन्तु बाइबल के अनुसार पाप अव्यक्तिगत, मनमाने, स्वर्गीय यातायात के नियमों को तोड़ने से कहीं बढ़कर है। पाप एक सम्बन्ध को तोड़ना है और उससे भी बढ़कर यह स्वंय परमेश्वर के राज्य, देखभाल और अधिकार को अस्वीकार करना है। जिन्हे परमेश्वर ने जीवन दिया था उनके द्वारा उसके आज्ञा देने के अधिकार को तिरस्कारना पाप है। सन्क्षेप में पाप सृष्टि के द्वारा सृष्टिकर्ता के विरूद्व में विद्रोह है।

### *कहाँ गलती हुई*

जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तो उसकी मनसा यह थी कि मनुष्य उसके धर्मी राज्य में असीम आनन्द के साथ आराधना में उसके आज्ञा पालन में एवं उसके साथ अटूट संगति में जिये। जैसे हमने पिछले अध्याय में देखा उसने नर और नारी की सृष्टि अपने स्वरूप में की जिसका अर्थ है कि वह उसके नाई होंगे, उसके साथ एक सम्बन्ध में होंगे और इस संसार में उसकी महिमा का वर्णन करेंगे। परमेश्वर के पास इससे बढ़कर मनुष्यों के लिए एक ज़िम्मेदारी थी। उनको उसका राज–प्रतिनिधि बन कर उसके अधीन होकर इस संसार पर राज्य करना था। परमेश्वर ने उनसे कहा, "फूलो–फलो और पृथ्वी में भर जाओ उसे अपने वश मे कर लो, और समुद्र की मछलियों तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर चलने–फिरने वाले प्रत्येक जीव–जन्तु पर अधिकार रखो" (उत्पत्ति 1:28)।

नर और नारी का सृष्टि पर अधिकार यद्यपि सर्वश्रेष्ठ अधिकार नहीं था एवं यह अधिकार उनका स्वंय का नहीं था; किन्तु यह उनको परमेश्वर के द्वारा दिया गया था। तो जबकि आदम और हव्वा संसार के ऊपर प्रभुता कर रहे थे उनको यह स्मरण रखना था कि वह परमेश्वर के अधीन थे और उसके राज्य के अर्न्तगत थे। उसने उनकी सृष्टि की थी और इसलिए परमेश्वर के पास उनको आज्ञा देने का अधिकार था।

भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष जो परमेश्वर ने वाटिका के मध्य में लगाया था निश्चित ही उस तथ्य को उन्हे निरन्तर स्मरण दिलाता था (उत्पत्ति 3:17)। जब आदम और हव्वा उस वृक्ष पर दृष्टि डालते होंगे और उसके फल को देखते होंगे तब उनको यह स्मरण आता होगा कि उनका अधिकार सीमित है और वह स्वंय सृष्टि हैं और अपने स्वंय के जीवन के लिए परमेश्वर पर निर्भर करते हैं। वह तो केवल भण्डारी हैं किन्तु परमेश्वर राजा है।

जब आदम और हव्वा ने उस फल को चखा, तब वह कोई न समझे–बूझे मन मर्ज़ी से बनाये गये "फल को मत खाना" नियम को नहीं तोड़ रहे थे। किन्तु वह तो एक अत्यन्त दुःख भरा और गम्भीर कार्य कर रहे थे। वह अपने ऊपर से परमेश्वर के अधिकार को त्याग रहे थे और उससे अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर रहे थे। आदम और हव्वा "परमेश्वर की नाई" बनना चाहते थे जैसे कि सर्प ने उनसे वादा किया था। इसलिए उन दोनों ने इस मौके पर यह सोचते हुए झपट्टा मारा कि अब हम सिर्फ राज–प्रतिनिधि न रहें किन्तु स्वंय मुकुट को पहन लें। इस सम्पूर्ण संसार में केवल एक वस्तु थी जिसे परमेश्वर ने आदम के चरणों के नीचे नहीं रखी और वह था–स्वंय परमेश्वर। फिर भी आदम ने यह निर्णय किया कि यह व्यवस्था उसके लिए काफी नहीं और इसलिए उसने विद्रोह कर डाला।

और सबसे बुरी बात तो यह है कि परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन करने के द्वारा आदम और हव्वा ने परमेश्वर को अपने राजा के रूप में



अस्वीकार करने का सोचा समझा हुआ निर्णय लिया। उनको मालूम था कि अगर वह उसकी आज्ञा न मानेंगे तो परिणाम क्या होगा। परमेश्वर ने उनको बिल्कुल स्पष्ट बता दिया था कि यदि वे फल खाऐंगे तो वह "निश्चित रीति से मृत्यु" का सामना करेगें जिसका अर्थ था कि प्राथमिक तौर पर वह उसकी उपस्थिति से हटा दिये जाएगें एवं वह उसके शत्रु बन जाएंगे तथा उसके मित्र और आनन्दित प्रजा न रहेंगे (उत्पत्ति 2:17)। किन्तु उन्होंने उसकी परवाह न की। आदम और हव्वा ने परमेश्वर के अनुग्रह के बदले में अपने स्वंय के आनन्द और महिमा को चुना।

परमेश्वर की आज्ञाओं के इस उल्लंघन को बाइबल "पाप" कहती है, चाहे वह शब्दों, विचारों या कार्यों में ही क्यों न हो। अक्षरशः इस शब्द का अर्थ है "निशाने से चूकना" किन्तु बाइबल के अनुसार पाप का अर्थ और गहरा है। ऐसा नहीं है कि आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने का प्रयास कर रहे थे किन्तु निशाने से बस थोड़ा सा चूक गये। नहीं, किन्तु सच्चाई तो यह है कि वह विपरीत दिशा में निशाना लगा रहे थे ! परमेश्वर ने उनके लिए जो मनसा रखी थी उसके बिल्कुल विपरीत ही उनके लक्ष्य और अभिलाषाएँ थीं और इसीलिए उन्होने पाप किया। उन्होंने जान–बूझ कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया एवं अपने सम्बन्ध को उससे तोड़ा तथा अपने वैध प्रभु के तौर पर उसका तिरस्कार किया।

आदम और हव्वा के पाप के प्रतिफल उनके लिए, उनके वंशज के लिए और बाकी की सृष्टि के लिए विनाशकारी साबित हुए। वह स्वंय उस सुन्दर अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिये गये। पृथ्वी अब हर्ष और स्वेच्छा से अपने फलों और कोषों को प्रदान नहीं करेगी। उनको प्राप्त करने के लिए उन्हें अब कठिन और दर्दनाक मेहनत के साथ कार्य करना पड़ेगा। और इससे भी बुरी बात यह है कि परमेश्वर ने उन पर मृत्युदण्ड की सजा लागू कर दी जिसकी उसने प्रतिज्ञा की थी। हालांकि वह शारीरिक रूप से तो तुरन्त नहीं मरे। उनके शरीर तो जीवित थे, फेफड़े सांस ले रहे थे, ह्रदय धड़क रहे थे एवं शरीर के अंग कार्य कर रहे थे किन्तु उनका आत्मिक जीवन

जो सबसे अधिक मायने रखता है तुरन्त समाप्त हो गया। परमेश्वर के साथ उनकी संगति टूट गई और इसलिए उनके हृदय मुरझा गये। उनके मन स्वार्थी विचारों से भर गए एवं उनकी ऑखे परमेश्वर की सुन्दरता के प्रति अन्धकारमय हो गई। और उनके प्राण उस आत्मिक जीवन के बिना खाली और सूखे हो गए जिसे परमेश्वर ने उन्हें आरम्भ में दिया था जब सब कुछ अच्छा था।

### *केवल वह ही नहीं, परन्तु हम भी*

बाइबल हमें बताती है कि ऐसा नहीं है कि केवल आदम और हव्वा ही पाप के दोषी हैं। पौलुस रोमियों 3:23 में कहता है कि "सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" और कुछ ही स्थल पहले वह कहता है कि "कोई भी धर्मी नहीं, एक भी नहीं" (3:10)।

यीशु मसीह का सुसमाचार ठोकर खाने वाले पत्थरों से भरा हुआ है और यह उनमें से एक सबसे बड़ा पत्थर है। मानव हृदय जो हठपूर्वक अपने आपको मूलतः भला और स्वावलम्बी मानता है, के लिए यह विचार न केवल अनुचित ही नहीं है किन्तु यह तो एक घिनौना विचार है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने पाप के स्वभाव और गहराई को भली–भांति समझें। यदि हम सुसमाचार के समीप यह सोचते हुए आए कि पाप कुछ और है या फिर पाप जो वास्तव में है उससे कम है तो हम यीशु मसीह के शुभ सन्देश को बुरी तरह से गलत समझेंगे। आइये, मैं आपको कुछ उदाहरण दूंगा कि मसीही कैसे अकसर पाप को गलत समझते हैं।

### पाप को पाप के प्रभाव के साथ भ्रमित करना

आजकल सुसमाचार को इस प्रकार से प्रस्तुत करने का चलन बन गया है कि यीशु मानवता को उसके अन्तर्निहित अपराधबोध की भावना, अर्थहीनता, उदेश्यहीनता अथवा खालीपन से बचाने के लिए आया। और निसन्देह यह



सब वास्तविक समस्याये हैं और बहुत से लोग इन्हें गहराई से महसूस करते हैं। परन्तु बाइबल सिखाती है कि मानवता की मूल समस्या अथवा जिसस हमें बचाए जाने की आवश्यकता है वह अर्थहीनता या हमारे जीवनों का विघटन या फिर दुर्बल कर देने वाली अपराध बोध की भावना नहीं है। यह तो एक गहरी और बहुत गहन समस्या के लक्षण मात्र हैं और वह समस्या है : हमारा पाप। हमें यह समझना है कि हम जिस दुर्दशा में है वह हमारे स्वंय के द्वारा बनायी हुई दुर्दशा है। *हमने* परमेश्वर के वचन को नहीं माना है। *हमने* उसकी आज्ञाओं को अनदेखा किया है। *हमने* उसके विरूद्ध पाप किया है।

यदि हम अर्थहीनता अथवा उद्देश्यहीनता से मुक्ति पाने की बात करें और उनकी जड़ तक न जाएं जो कि पाप है तो हो सकता है कि ऐसी औषधी को निगलना आसान तो होगा किन्तु यह एक गलत औषधी होगी। यह एक व्यक्ति को स्वंय के बारे में शोषित एवं पीड़ित के रूप में सोचने की अनुमति तो देती है किन्तु वास्तव में कभी भी इस सच्चाई से व्यवहार नहीं करती है कि वह तो स्वयं अपराधी, अधर्मी और न्याय के योग्य है।

### पाप को टूटे हुए सम्बन्ध के रूप में घटाना

बाइबल में सम्बन्ध एक महत्वपूर्ण श्रेणी है। मनुष्यों की *सृष्टि* परमेश्वर की संगति में जीने के लिए की गई थी। लेकिन हमको यह याद रखना है कि यह एक निश्चित प्रकार की संगति थी जिसमें उनको जीना था। यह ऐसा सम्बन्ध नहीं या जिसमें दो बराबरी के पक्ष हों, जहाँ पर नियम, न्याय और दण्ड का कोई स्थान नहीं किन्तु यह सम्बन्ध उस प्रकार का होना था जैसे कि एक शासक और उसकी प्रजा के मध्य में होना चाहिए।

कई मसीही तो पाप के बारे में ऐसे बात करते हैं जैसे कि यह तो परमेश्वर और मनुष्य के सम्बन्धों के बीच में एक छोटा–मोटा सा झगड़ा है। और हमें तो केवल क्षमा माँगने की और परमेश्वर की क्षमा को ग्रहण करने की आवश्यकता है। किन्तु प्रेमियों के झड़प के रूप में पाप का चित्रण

परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को विकृत कर देता है। वह तो यह जताता है कि कोई नियम नहीं तोड़ा गया है किसी न्याय का उल्लंघन नहीं हुआ है और कोई धार्मिकता–पूर्ण प्रकोप नहीं है, कोई पवित्र न्याय नहीं है–और इसलिए अंततः न ही किसी प्रतिनिधि को किसी अन्य के बदले न्याय को सहने की आवश्यकता है।

बाइबल की शिक्षा यह है कि पाप वास्तव में परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को तोड़ना है। किन्तु इस सम्बन्ध के टूटने में परमेश्वर के राजसी प्रताप का तिरस्कार करना भी शामिल है। यह तो *केवल* व्यभिचार ही नहीं है (यद्यपि यह तो वह है ही) : किन्तु यह विद्रोह भी है। और *केवल* विश्वासघात ही नहीं किन्तु यह राजद्रोह भी है। यदि हम पाप को मात्र "सम्बन्ध के टूटने" तक सीमित कर देंगे बजाए यह समझने के कि "पाप" एक भले और धर्मी राजा के विरूद्ध में उसकी प्रिय प्रजा द्वारा विश्वासघाती विद्रोह है। तब तक हम नहीं समझ पाऐगें कि क्यों इसको सम्बोधित करने के लिए परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु की आवश्यकता हुई।

## पाप को नकारात्मक सोच के साथ भ्रमित करना।

पाप के बारे में एक अन्य गलत समझ यह है कि यह सिर्फ नकारात्मक सोच का मामला है। हमने इस पुस्तक के प्रस्तावना में कुछ उदाहरणों में ऐसा देखा था। पुरानी मशकों से अपना पीछा छुड़ाइये ! बड़ी सोच रखिए ! परमेश्वर आपको अपना अविश्वसनीय अनुग्रह दिखाना चाहता है यदि आप उन सभी नकारात्मक मानसिकताओं से पीछा छुड़ा लेंगे जो कि आपको पीछे रोक के रखे हैं !

अब यह तो उन आत्म–निर्भर लोगों के लिए एक सम्मोहक सन्देश है जो यह विश्वास करना माँगते हैं कि वह स्वंय अपने पापों को सम्भाल लेंगे। शायद इसीलिए वह लोग जो इस सन्देश का प्रचार करते हैं इस संसार के कुछ सबसे बड़ी कलीसियाओं का निर्माण करने में सफल होते हैं।



वास्तव में तो यह फारमूला काफी सरल है। लोगों को यह बताइये कि उनके पाप नकारात्मक सोच से अधिक बढ़कर कुछ नही हैं और वही उनको स्वास्थ, धन और सुख से रोके हुए है। फिर उनको बताइये कि अगर वह अपने बारे में और सकारात्मक सोचेगें (और हाँ, परमेश्वर की मदद से), तो वह अपने पापों से पीछा छुड़ा पाऐंगे और अत्यन्त धनी हो जाऐंगे। और ऐसे आप एक विशाल कलीसिया का झटपट निर्माण कर लेंगे!

कभी–कदार वायदा किया गया लक्ष्य पैसा होता है, या फिर स्वास्थ या कुछ अन्य वस्तु। परन्तु आप उसे चाहे जैसे प्रस्तुत करें किन्तु यह कहना कि यीशु मसीह क्रूस पर हमें अपने नकारात्मक विचारों से बचाने के लिए मरा अत्यन्त निंदनीय एवं वचन अनुसार शिक्षा नहीं है। बल्कि बाइबल तो यह बताती है कि हमारी समस्या का एक बड़ा हिस्सा यह है कि हम अपने बारे में बहुत *ऊँचा* सोचते हैं, न कि बहुत कम। ज़रा एक क्षण रूक कर के सोाचिए। सर्प ने आदम और हव्वा को कैसे प्रलोभित किया ? उसने उनसे कहा कि वह अपने बारे में बहुत नकारात्मक सोचते हैं। उसने उनसे कहा कि उन्हें और अधिक सकारात्मक सोचना चाहिए, अपनी पकड़ को बढ़ाना चाहिए, अपनी सम्पूर्ण सम्भावना की ओर पहुँचने के लिए और परमेश्वर के तुल्य होने के लिए। कुछ शब्दों में कहें तो उसने उनको बड़ा सोचने के लिए कहा।

यह बात वह उनके लिए कैसी साबित हुई ?

## पाप को पापों से भ्रमित करना

अपने आप को *पाप* का दोषी जानने में और पापों का दोषी समझने में एक बड़ा अन्तर है। अधिकतर लोगों को यह स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं होती है कि उन्होंने पापों (बहुवचन) को किया है। जब तक वह उन पापों को वैसे तो अपने एक अच्छे जीवन में छोटे और कभी–कदार गलतियों के रूप में सोच सकते हैं–एक आध पार्किंग के चालान की पर्चियों के अलावा काफी स्वच्छ रिकार्ड।

पापों से हम शोकित नहीं होते हैं। हमें मालूम है कि वह वहाँ हैं, हम उन्हें अपने में और दूसरों में प्रतिदिन देखते हैं और हम उनके आदि हो गये हैं। हमें तब आघात लगता है जब परमेश्वर हमें हमारे हृदय की गहराई में उपस्थित *पाप* को दर्शाता है एवं हमारे भीतर में जमी हुई गन्दगी और भ्रष्टाचार के भण्डार को दिखाता है जिसकी उपस्थिति के बारे में हम अनभिज्ञ थे जिसे हम स्वंय नहीं मिटा सकते थे। बाइबल इस तरह से हमारे पाप की गहराई और अन्धकार के बारे में बात करती है–पाप हमारे *भीतर* है और यह *हमारा* है, न सिर्फ हमारे *ऊपर* है।

वाशिंगटन में प्राकृतिक इतिहास के राष्ट्रीय संग्राहलय के दूसरे मंजिल पर कहा जाता है कि संसार का सबसे बड़ा एवं बेदाग गोल बिल्लौर (एक प्रकार का कीमती पत्थर) है। यह गोल बिल्लौर एक बास्केटबॉल से थोड़ा बड़ा है और इसके ऊपर एक भी प्रत्यक्ष खरोंच का निशान, दाग या धब्बा नहीं है। यह सम्पूर्ण रीति से खरा है। और लोग अकसर यह सोचते हैं कि मानव स्वभाव भी इस बिल्लौर के समान है। हाँ समय–समय पर हम इस पर गंदगी और मिट्टी रगड़ देते हैं लेकिन उस मैल की सतह के नीचे वह सदैव अपरिवर्तित बना रहता है। उसकी चमक को वापस लाने के लिए हमें केवल उसे साफ करके पोंछने की आवश्यकता है।

किन्तु बाइबल में मानवीय स्वभाव का चित्रिकरण इतना सुन्दर नहीं है। पवित्रशास्त्र के अनुसार मानव स्वभाव का वृत्त बिल्कुल भी शुद्ध नहीं है और ऐसा नहीं है कि मिट्टी केवल बाहर ही से लगी हुई है। इसके विपरीत हम पाप से सने हुए हैं। इसकी दरारें, मिट्टी, मल एवं भ्रष्टाचार इसके केन्द्र तक पहुँचती हैं। जैसा कि पौलुस कहता है कि हम "स्वभाव से ही क्रोध की सन्तान हैं'' (इफिसियों 2:3)। हम आदम के पाप और भ्रष्टाचार में सम्मिलित हैं (रोमियों 5)। यीशु ने भी यही सिखाया था, "क्योंकि हृदय ही से बुरे–बुरे विचार, हत्याएं, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरियॉ, झूठी साक्षी और निन्दा निकलती हैं" (मत्ती 15:19)। जो पापमय वचन आप बोलते हैं और पापमय कार्य करते हैं वह कोई एक आध अलग–थलग घटनाए नहीं



हैं। यह तो आपके स्वंय के हृदय की दुष्टता में से उभरे हैं।

मानव अस्तित्व का हर एक पहलू पाप के द्वारा भ्रष्ट हो चुका है और उसके सामर्थ के आधीन है। हमारी समझ, हमारा व्यक्तित्व, हमारी भावनाएँ और संवेदनाएं और यहाँ तक की हमारी इच्छाशक्ति भी पाप क दासत्व में है। तो पौलुस रोमियों 8:7 में कहता है, "क्योंकि शारीरिक मन तो परमेश्वर से शत्रुता करता है। वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न ही हो सकता है।" यह कितना चौंकाने वाला और भयावह कथन है! पाप का राज हमारे हमारे मस्तिष्क, समझ और इच्छा शक्ति के ऊपर इतना व्यापक है कि यद्यपि हम परमेश्वर की महिमा और भलाई को देखते हैं किन्तु फिर भी हम *अवश्य ही* उससे ही घृणा करते हुए पलट जाते हैं।

सिर्फ यह कहना पर्याप्त नहीं कि यीशु हमें पापों से बचाने के लिए आया है, यदि हम इससे केवल यह समझते हैं कि वह हमें हमारे एक–आध छोटी–मोटी गलतियों से बचाने के लिए आया है। जब हम यह अहसास करते हैं कि हमारा सम्पूर्ण स्वभाव ही पापमय है–कि हम वास्तव में "अपराधों और पापों में मरे हुए थे", जैसा कि पौलुस कहता है (इफिसियों 2:1,5)–तब ही हम यह देखते हैं कि बचाए जाने का एक मार्ग सम्भव है और यह समाचार कितना अच्छा है।

### *परमेश्वर का पाप के विरूद्ध सक्रिय न्याय*

सम्पूर्ण बाइबल का एक सबसे भयानक वाक्य रोमियों 3:19 में पाया जाता है। यह सम्पूर्ण मानवजाति के विरूद्व में पौलुस द्वारा लगाए गए अभियोग के अन्त में आता है–सर्वप्रथम अन्यजाति, उसके बाद यहूदी–कि वह पाप के अधीन हैं और परमेश्वर के सामने अत्यन्त अधर्मी। पौलुस इस मामले के भव्य समाप्ति पर यह कहता है: "कि प्रत्येक मुँह बन्द किया जाए और समस्त संसार परमेश्वर को लेखा देने वाला ठहरे।"

क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं कि इसका तात्पर्य क्या होगा ? कि परमेश्वर के सम्मुख बिना स्पष्टीकरण, दलील, बहाना और न ही किसी मामले के साथ खड़े होना ? और इसका अर्थ क्या है कि "परमेश्वर को लेखा देनेवाले ठहरें" ? जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा था कि बाइबल बहुत स्पष्टता से बताती है कि परमेश्वर पवित्र और धर्मी है और इसलिए वह पाप को अन्देखा नहीं करेगा। परन्तु परमेश्वर का पाप से व्यवहार करना, उसका न्याय करना अथवा उसको दण्डित करने का तात्पर्य क्या है ?

रोमियों 6:23 कहता है "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है।" दूसरे शब्दों में हम अपने पापों के लिए जो भुगतान कमाते हैं, वह है मृत्यु और यह केवल शारीरिक मृत्यु ही नहीं है किन्तु यह एक आत्मिक मृत्यु है, हमारे पापमय एवं घिनौने स्वंय का पवित्र और धर्मी परमेश्वर की उपस्थिति से निश्चित अलगाव है। यशायाह नबी इसका ऐसे वर्णन करता है :

> परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ही ने तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुख तुमसे छिप गया है जिस से वह नहीं सुनता । (यशायाह 59:2)

कभी–कभी लोग इसके बारे में ऐसे बात करते हैं कि यह तो सिर्फ परमेश्वर की निष्क्रिय और शान्त अनुपस्थिति है किन्तु यह उससे बढ़कर के है। यह परमेश्वर का पाप के विरूद्ध सक्रिय न्याय है और बाइबल बताती है कि यह भयावह होगा। देखिए, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कैसे वर्णन करती है कि परमेश्वर के उस सही और अच्छे न्याय के दिन में अन्त कैसा होगा। वह सात स्वर्गदूत "पृथ्वी पर उण्डेल देंगे....परमेश्वर का प्रकोप," और "पृथ्वी के हर एक जाति उसके कारण विलाप करेंगे" (प्रकाशितवाक्य 16:1; 1:7)। वह पर्वतों और चट्टानों से पुकार कर कहेंगे, "हम पर गिर पड़ो और हमें उसकी दृष्टि से जो सिंहासन कर बैठा है, तथा मेमने के प्रकोप से छिपा लो, क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ गया है, और कौन है जो



उनका सामना कर सकता है ?" (प्रकाशितवाक्य 6:16–17)। वह यीशु को देखेंगे जो कि राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है और झुक कर पीछे हटेंगे क्योंकि "और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की मदिरा का रसकुण्ड रौंदेगा" (प्रकाशितवाक्य 19:15)।

बाइबल यह सिखाती है कि अपश्चतापी, अविश्वासी पापियों का अंतिम गन्तत्व स्थान एक अनन्त और सचेत यातना की जगह है और वह जगह "नरक" कहलाती है। प्रकाशितवाक्य इसका वर्णन एक "आग और गंधक की झील" के रूप में वर्णन करता है और यीशु कहता है कि यह एक "न बुझने वाली आग" की जगह है (प्रकाशितवाक्य 20:10; मरकुस 9:43)।

यह देखते हुए कि कैसे बाइबल नरक के बारे में बात करती है और उसके विरूद्व हमें चेतावनी देती है, यह मेरी समझ से बाहर है कि क्यों कुछ मसीहियों के अन्दर एक उमंग है नरक का वर्णन इस प्रकार से करने के लिये कि वह और सहनीय प्रतीत हो। जब प्रकाशितवाक्य यीशु के बारे में बात करता है कि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की मदिरा का रसकुण्ड रौंदेगा, जब यीशु स्वंय "न बुझने वाली आग.....जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और और न आग ही बुझती है" (मरकुस 9:43,48), के बारे में चेतावनी देता है, तो मेरा प्रश्न है, कि *क्यों* कोई मसीही इसको कम भयावह व्यक्त करने में रूचि लेगा ? *क्यों* हम पापियों को इस विचार के साथ ढाढस देना चाहेंगे कि शायद आखिरकार नरक इतना बुरा नहीं है ?

## *हमने स्वयं ही इसे नहीं रचा है*

परमेश्वर का पाप के विरूद्ध न्याय के बारे में बात करने के लिए बाइबल जिन चित्रों का उपयोग करती है वह वास्तव में भयानक हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब संसार बाइबल में नरक के इस विवरण को पढ़ता है तो वह मसीहियों को इस पर विश्वास करने के कारण "मानसिक रूप से बीमार" कहता है।

किन्तु यह तो मुख्य बात को न समझना हुआ। ऐसा नहीं है कि हम यह विचार अपने आप बना लेते हैं। हम मसीही लोग नरक के बारे में इसलिए नहीं पढ़ते, विश्वास और बात करते हैं क्योंकि किसी कारणवश हमें इस विचार से आनन्द मिलता है। परमेश्वर ऐसा न होने दे। नहीं, अंततः हम नरक के बारे में बात करते हैं क्योंकि हम बाइबल पर विश्वास करते हैं। हम उस पर विश्वास करते हैं जब वह कहती है कि नरक वास्तविक जगह है। और हम दुख भरे आंसुओं के साथ विश्वास करते हैं जब वह कहती है कि जिन लोगों से हम प्रेम करते हैं वह नरक में अनन्तकाल व्यतीत करने के खतरे मे हैं। यह बाइबल का हमारे बारे में एक गंभीर फैसला है। हममें से कोई भी धर्मी नहीं, एक भी नहीं। और इसलिए, एक दिन हर एक मुख शान्त किया जाएगा, हर एक चलती हुई जीभ रूक जाएगी और सम्पूर्ण संसार परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी ठहराया जाएगा।

किन्तु...

## अध्याय चार

# यीशु मसीह उद्धारकर्ता

**मेरे विचार से** मनुष्य जो भी शब्द बोल सकता है उनमें से सबसे शक्तिशाली शब्द **किन्तु** है। यह छोटा अवश्य है किन्तु इसके पास ऐसी सामर्थ है कि जो कुछ भी इसके पहले घटा था वह उसको हटा सकता है। जैसे कि हमने अभी बुरे सन्देश को सुना उसके बाद **'किन्तु'** के पास आंखों को उठाने की और आशा बहाल करने की सामर्थ है। मानव जीभ के द्वारा बोले जाने वाले किसी भी शब्द से अधिक हर बात को बदलने की क्षमता इसमे है।

- हवाई जहाज़ नीचे गिर गया। *किन्तु* कोई भी घायल नहीं हुआ
- आपको कैंसर है। *किन्तु* इसका इलाज आसान है।
- आपका बेटा कार दुर्घटना में था। *किन्तु* वह ठीक–ठाक है।

दुख की बात तो यह है कि कभी–कभी *"किन्तु"* नहीं आता है। कभी कभी वाक्य समाप्त हो जाता है और हमको केवल बुरा सन्देश ही प्राप्त होता है। फिर भी वह क्षण उन पलों को हमारे लिए और बढ़ा कर स्पष्ट करते हैं जब *"किन्तु"* आता है और वह समय शानदार होते हैं।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि मनुष्य के पाप और परमेश्वर के न्याय की बुरे सन्देश के साथ इस कहानी का अन्त नहीं होता है। यदि बाइबल का अन्त पौलुस के इस घोषणा के साथ होता कि यह सम्पूर्ण संसार परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के सम्मुख शान्त खड़ा होगा तो हमारे पास कोई भी आशा न होती। केवल निराशा ही। किन्तु (देखिए फिर से है यहाँ !) परमेश्वर का धन्यवाद हो कि इसके बाद और भी कुछ है !

आप एक पापी हैं जिसका दण्डित होना निर्धारित है। *किन्तु* परमेश्वर ने आप जैसे पापियों को बचाने के लिए कार्य किया !

### *एक आशा का वचन*

मरकुस यीशु के जीवन का अपना वर्णन इन शब्दों के द्वारा आरम्भ करता है "परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ।" आरम्भ ही से मरकुस तथा अन्य प्रारम्भिक मसीहियों को ज्ञात था कि पाप के द्वारा नाश हुए और उसके पैरों तले मृत पड़े संसार के लिए यीशु मसीह का आगमन शुभ सन्देश था। पाप के कारण एक काले विनाश की अपेक्षा की स्थिति में यीशु मसीह का आगमन उसकी भेदती एवं गरजती हुई घोषणा थी कि अब सब कुछ बदल गया है !

अदन की वाटिका में भी परमेश्वर ने आदम और हव्वा को एक आशा का वचन दिया था–उनके निराशा के मध्य में एक शुभ सन्देश। वह बहुत तो नहीं था, वास्तव में सिर्फ एक छोटा सा संकेत, परमेश्वर का सर्प के विरूद्ध श्राप के अन्त में सिर्फ एक वाक्यांश के रूप में दण्डाज्ञा।

> वह तेरे सिर को कुचलेगा,
> और तू उसकी एड़ी को डसेगा। (उत्पत्ति 3:15)

किन्तु कम से कम वह कुछ तो था। यद्यपि आदम और हव्वा विद्रोही तो थे, परमेश्वर चाहता था कि वह यह जानें कि कहानी समाप्त नहीं हुई है। इस प्रचण्ड घटना के मध्य में थोड़ा सा सुसमाचार और थोड़ा सा शुभ सन्देश उपस्थित था।

बाइबल की बाकी की कहानी यह है कि कैसे शुभ सन्देश का यह छोटा सा बीज जमकर, अंकुरित हुआ और बढ़ा। परमेश्वर ने हज़ारों सालों से संसार को व्यवस्था और भविष्यद्वाणी के द्वारा सर्प के विरोध में आश्चर्यजनक तख्ता पलट के लिए तैयार किया जो कि अनुग्रह से यीशु मसीह के जीवन,



मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा हुआ। जब वह कार्य पूरा हुआ तो जो दोष आदम ने सम्पूर्ण मानवजाति पर डाला था वह हराया गया। उस मृत्यु की मृत्यु हुई जिसे परमेश्वर ने स्वंय की प्रजा पर उद्घोषणा की थी और नरक को अपने घुटनों पर झुकना पड़ा। बाइबल पाप के विरूद्व परमेश्वर के जवाबी हमले की कहानी है। यह एक विराट कथा है कि कैसे परमेश्वर ने इसको ठीक किया, कैसे वह इसे ठीक कर रहा है और कैसे वह एक दिन अंततः उसे हमेशा के लिए ठीक कर देगा।

### *पूर्ण परमेश्वर, पूर्ण मनुष्य*

सुसमाचार के सभी लेखक यीशु के जीवन के अपने विवरण का आरम्भ यह कहते हुए दिखाते हैं कि वह कोई साधारण मनुष्य नही है। मत्ती और लूका इस कहानी का वर्णन करते हैं जिसमें एक स्वर्गदूत कुंवारी मरियम के पास आता है और बताता है कि वह गर्भ धारण करेगी। मरियम को इस खबर पर विश्वास नहीं होता है और पूछती है, "यह कैसे सम्भव होगा, क्योंकि मैं तो कुंवारी हूँ ?" स्वर्गदूत ने समझाया, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान का सामर्थ तुझ पर अच्छादित होगा। इसी कारण वह पवित्र पुत्र जो उत्पत्र होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा "(लुका 1:34–35)। यूहन्ना अपनी कहानी का आरम्भ एक और अधिक आश्चर्यजनक वाक्य के साथ करता है : "आदि में" (यह शब्द उत्पत्ति 1:1 की ओर इशारा करते हैं) "वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था....और वचन देहधारी हुआ हमारे बीच में निवास किया" (यूहन्ना 1:1,14)।

यीशु का कुंवारी द्वारा जन्म, "परमेश्वर का पुत्र" कहलाया जाना, यूहन्ना का यह दावा कि "वचन परमेश्वर था" और साथ में यह उद्घोषणा कि "वचन देहधारी हुआ"–यह सब कुछ हमें यह सिखाने के लिए है कि यीशु कौन है।

सीधे शब्दों में कहें तो बाइबल हमें यह सिखाती है कि यीशु दोनों पूर्ण मनुष्य और पूर्ण परमेश्वर है। यह एक महत्वपूर्ण बिन्दू है उसके बारे

में समझने के लिए क्योंकि केवल ऐसा ही परमेश्वर का पुत्र हमको बचा सकता है जो कि सम्पूर्ण रूप से मनुष्य (मानव), एवं सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर (ईश्वरीय) है। यदि यीशु सिर्फ मनुष्य होते–हर मायने में हमारे पराजय और पाप समेत–तो वह हमको बचाने में वैसे ही सक्षम होते जैसे कि एक मृतक व्यक्ति किसी और को बचाने की क्षमता रखता है। किन्तु वह परमेश्वर का पुत्र होने के नाते वह बिना पाप के हैं और हर एक ईश्वरीय सिद्धता में परमेश्वर पिता के बराबर हैं अतः इसलिए वह पाप को हराने में सक्षम हैं और हमको बचा सकते हैं। उसी तरह से, यह आवश्यक है कि यीशु वास्तव में हमारे समान हों–अर्थात सम्पूर्ण मनुष्य–ताकि वह सही तरीके से अपने पिता के सामने हमारा प्रतिनिधित्व कर सकें। जैसे कि इब्रानियों 4:15 हमें समझाता है कि यीशु "हमारी दुर्बलताओं में हमसे सहानुभति रखता है।" क्योंकि "वह तो सब बातों में हमारे ही समान परखा गया, फिर भी निष्पाप निकला।"

## *मसीहा राजा–यहाँ !*

जब यीशु ने अपनी सेवकाई आरम्भ की तो उसने एक अद्भभुत सन्देश की उद्घोषणा की : "समय पूरा हुआ है ! और परमेश्वर का राज्य निकट है, मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो !"

उस देश में इस मनुष्य के बारे में सन्देश तेजी से फैल गया जो कि परमेश्वर के राज्य का प्रचार कर रहा था और उत्साहित भीड़ यीशु के चारों ओर इस "शुभ संदेश" को सुनने के लिए जमा हो गई जिसका वह प्रचार कर रहा था। किन्तु इसमें ऐसी क्या उत्साहजनक बात थी ?

सदियों से परमेश्वर ने अपने व्यवस्था और भविष्यद्धक्ताओं के माध्यम से भविष्य के उस समय के बारे में बताया था कि जब वह एक बार में और सदा के लिए इस संसार की दुष्टता का अन्त करेगा और अपने लोगों को



उनके पाप से बचाएगा। वह हर एक प्रतिरोध का सफाया करके अपने राज को एवं अपने "साम्राज्य" को इस सम्पूर्ण पृथ्वी पर स्थापित करेगा। इससे बढ़कर परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने साम्राज्य की स्थापना एक मसीही राजा के द्वारा करेगा जो कि महान राजा दाऊद के वंशज़ से होगा। 2 शमूएल 7:11 में परमेश्वर ने दाऊद से प्रतिज्ञा की थी कि उसके पुत्रों में से एक उसके सिंहासन पर सदैव राज्य करेगा। और यशायाह भविष्यद्वक्ता ने इस शाही पुत्र के बारे में यह कहा :

> और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला,
> पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार
> रखा जाएगा। उसकी प्रभुता की बढ़ती का और उसकी शान्ति का
> अन्त न होगा। वह दाऊद की राजगद्दी और उसके
> राज्य को उस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और
> धार्मिकता के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। (यशायाह 9:6–7)

तो आप उस उत्साह की कल्पना कर सकते हैं जिसके साथ यीशु का स्वागत किया गया जब उसने यह प्रचार करना आरम्भ किया कि स्वर्ग का राज्य आ गया है। इसका यह अर्थ था कि दाऊद के वंशज के द्वारा जिस मसीहा की लम्बी प्रतीक्षा की जा रही थी वह अन्त में अब आ गया था !

सुसमाचार के लेखक इस बात पर अड़े हुए हैं कि दाऊद के वंशज से यह मसीहा कोई और नही परन्तु यीशु ही है। लूका स्वर्गदूत के उन शब्दों को लिखता है जो उसने मरियम से यीशु के जन्म के बारे कहा था :

> वह महान होगा, और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा। प्रभु
> परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिहांसन उसे देगा, और
> वह याकूब के घराने पर अनन्तकाल तक राज्य करेगा,
> और उसके राज्य का अन्त न होगा। (लूका 1:32–33)

मत्ती अपने पुस्तक का आरम्भ उस वंशावली से करता है जो यीशु के पूर्वजों के वंश को सीधे दाऊद राजा से जोड़ता है और फिर उसके बाद स्वंय इब्राहिम से। मत्ती बहुत सुन्दरता के साथ अपने वंशावली को इस ढ़ग से प्रस्तुत करता है कि उसको वह चौदह के तीन पीढ़ीयों में बाँटता है। और कोई भी अच्छा यहूदी यह जानता होगा कि चौदह वह संख्या है जिस पर हम तब पहुंचते हैं जब हम इब्रानी भाषा के अक्षर द–व–द "दाऊद" के अंक संख्या के मूल्य को जोड़ते हैं। मत्ती भी अन्य मसीहियों के समान यीशु के बारे में अपनी कहानी का प्रारम्भ लगभग यह चीखते हुए आंरभ करता है, "राजा ! राजा ! राजा !"

### *अप्रत्याशित शुभ सन्देश–यदि आप इसमें सम्मिलित हों*

नया नियम फिर हमें यह कहानी बताता है कि कैसे राजा यीशु ने परमेश्वर के राज्य का पृथ्वी पर उद्घाटन किया है और पाप के श्राप के अन्त का आरम्भ किया है। जिस राज्य का यीशु ने उद्घाटन किया था वह तो यहूदियों की आशा और अपेक्षा के अनुरूप नहीं था। वह तो एक ऐसा मसीहा चाहते थे जो उन दिनों की सत्ताधारी ताकत रोमी साम्राज्य का तख्तापलट करके हटाये और एक संसारिक एवं राजनैतिक राज्य की स्थापना करे। किन्तु यीशु तो यहाँ पर संसारिक मुकुट की खोज में नहीं थे। वह तो प्रचार करने, शिक्षा देने, बीमारों को चंगा करने, पापों को क्षमा करने, मरे हुओं को जिलाने में लगे हुए थे। और रोमी राज्यपाल से साफ शब्दों में कहते हैं कि, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं है" (यहुन्ना 18:36)।

इसका यह कहने का यह तात्पर्य नहीं है कि उसका राज्य कभी भी इस संसार का *नहीं* होगा। कुछ ही समय पहले यीशु ने महायाजक से कहा था कि "तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठा हुआ और स्वर्ग के बादलों के साथ आता हुआ देखोगे" (मरकुस 14:62) और प्रकाशितवाक्य 21 में हम नये पृथ्वी और नये आकाश पर उसके राज के बारे में पढ़ते हैं जो कि उसकी सामर्थ से पूर्ण रूप से परिवर्तित और अपने पाप



के बन्धन से स्वतंत्र की गई है।

अब निश्चित तौर पर यह सब तो शुभ सन्देश है–अगर आप इसमें सम्मिलित हो पाएं। परन्तु हम अपने पाप की समस्या पर फिर वापस पहुँच गए हैं, है कि नहीं ? जब तक परमेश्वर के प्रति हमारी अनाज्ञाकारिता और विद्रोह के दोष को हटाने के लिए कुछ नहीं होता है तब तक हमारा उससे अलगाव बना है और हमारा गन्तव्य नये आकाश और नयी पृथ्वी के आनन्द की ओर नहीं परन्तु नरक के अनन्त दण्ड की ओर है।

लेकिन ऐसी ही स्थिति में मसीहत का शुभ सन्देश वास्तव में अत्याधिक अच्छा हो जाता है। देखिए, राजा यीशु केवल परमेश्वर के राज्य का उद्घाटन करने ही नहीं आए थे किन्तु उन्होंने उसमें पापियों को सम्मलित कराया उनके पापों के लिए उनकी जगह पर मरने के द्वारा, पापियों की सज़ा अपने ऊपर उठाने के द्वारा और उनके लिए क्षमा की प्राप्ति उपलब्ध कराने के द्वारा। उनको परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी बनाया और राज्य के उत्तराधिकार में हिस्सा पाने के योग्य बनाया (कुलुस्सियों 1:12)।

### *एक दुख उठाने वाला राजा ?*

जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने जो कि ऊँट की खाल को पहनने और टिड्डियों को खाने वाला भविष्यद्वक्ता था, यीशु को अपनी ओर आते हुए देखा तो यह कहा, "देखो, परमेश्वर का मेमना, जो जगत का पाप उठा ले जाता है !" (यूहन्ना 1:29)। वह कहना क्या चाह रहा था ? परमेश्वर का मेमना ? जगत के पाप उठा ले जाता है ?

प्रथम शताब्दी में प्रत्येक यहूदी को यह तुरन्त समझ में आ गया होगा कि यूहन्ना का क्या तात्पर्य है जब वह कहता है कि "परमेश्वर का मेमना पाप को उठा ले जाता है।" यह यहूदियों के "फसह के पर्व" की ओर संकेत कर रहा था। वह उनको स्मरण दिलाने के लिए था कि कैसे परमेश्वर ने

इस्राएलियों को अद्‌भुत रीति से लगभग पन्द्रह सौ साल पहले मिस्र की गुलामी से छुडाया था।

परमेश्वर ने मिस्रियों के विरूद्ध उनको दण्डित करने के लिए दस महामारी भेजी, किन्तु प्रत्येक बार मिस्री राजा ने अपना हृदय कठोर किया और लोगों को जाने से इन्कार कर दिया। जो आखिरी महामारी थी वह सबसे घनघोर थी। परमेश्वर ने इस्राएलियों को बताया कि नियुक्त रात्री में मृत्यु का दूत मिस्र की भूमि पर मण्डराएगा और प्रत्येक मनुष्य और जानवर के पहलौठे को घात करेगा। उस भयानक न्याय में इस्राएली भी शामिल होंगे–अगर वह परमेश्वर के निर्देशों को ध्यान से नहीं मानेंगे। परमेश्वर ने उनको बताया कि प्रत्येक परिवार बिना किसी खोट या दाग के एक मेमने को लें और उसे बलि करें। फिर जूफे के एक डाल को लेकर अपने घर के चौखट पर चारों तरफ उस मेमने का लहू लगायें। तब परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञा की, कि जब मृत्यु का दूत उसे देखेगा तो वह उस घर को "पार कर जाएगा" और मृत्यु के दण्ड से क्षमा करेगा।

फसह के पर्व का भोज–विशेष तौर से फसह का मेमना–यह उस विचार का शक्तिशाली प्रतीक बन गया कि किसी एक जन के पापों की मृत्यु दण्ड की सज़ा किसी और की मृत्यु के द्वारा चुकाई जा सकती है। वास्तव में तो पुराने नियम का सम्पूर्ण बलिदान प्रणाली इस "दण्ड प्रतिस्थापन" (कि किसी और की जगह कोई अन्य दण्ड ले) के सिद्धान्त पर आधारित था। साल में एक बार 'प्रायश्चित के दिन' महायाजक मन्दिर के मध्य में जाता था जो कि 'अति पवित्र स्थान' के रूप मे जाना जाता था और लोगों के पापों की कीमत के रूप में एक बेदाग पशु को मारता था। वर्ष प्रति वर्ष यह होता रहा और एक साल से दूसरे साल तक लोगों के पापों का दण्ड पुनः मेमने के लहू के कारण टल गया।

थोड़ा समय तो अवश्य लगा किन्तु अन्तः यीशु के अनुयायी यह समझ गये कि उसका उद्‌देश्य केवल परमेश्वर के राज्य का उदघाटन ही करना



नहीं था परन्तु वह अपने लोगों के लिए उनके बदले बलिदान के रूप में मरने के द्वारा ऐसा करेगा। उनको यह समझ में आ गया कि यीशु केवल राजा ही नहीं है। वह तो एक दुख उठाने वाला राजा है।

यीशु को तो आरम्भ से ही मालूम था कि उसका लक्ष्य अपने लोगों के पापों के लिए मरना है। स्वर्गदूत ने उसके जन्म पर यह घोषणा की थी कि "वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा" (मत्ती 1:21)। और लूका बताता है कि "जब उसके स्वर्गारोहण के दिन निकट आने लगे तो उसने यरूशलेम जाने का दृढ़ निश्चय किया" (लूका 9:51)। यीशु ने अपनी मृत्यु के बारे में पहले ही से कई बार सुसमाचार में बता दिया था। और जब पतरस ने मूर्खता में होकर उसकी राह में खड़ा होना चाहा तो यीशु ने उसे फटकारा और कहा : "हे शैतान, मुझ से दूर हो ! तु मेरे लिए ठोकर का कारण है" (मत्ती 16:23)। यीशु का मुख यरूशलेम की ओर दृढ़ निश्चय के साथ लगा हुआ था–और उसी तरह उसकी मृत्यु की ओर भी।

यीशु अपने मृत्यु के महत्व और उद्‌देश्य को भी समझाता था। मरकुस 10:45 में वह कहता है, "क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा कराने नहीं वरन सेवा करने और बहुतों की फिरौती के मूल्य में प्राण देने आया।" और मत्ती 26:28 में जब वह अपने शिष्यों के साथ आखिरी भोज कर रहा था, उसने दाखरस का एक कटोरा लिया और कहा, "तुम सब इसमें से पियो, क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुत लोगों के निमित पापों की क्षमा के लिए बहाया जाने को है। (मत्ती 26:27–28)। और उसने अन्य जगह में कहा कि "मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूँ" और उसने यह भी कहा, "कोई उसे मुझसे नहीं छीनता परन्तु मैं उसे आप ही देता हूँ" (यूहन्ना 10:15,18)। यीशु को मालूम था कि वह क्यों मरने जा रहा है। अपने लोगों के प्रेम के कारण उसने स्वेच्छा से अपनी जान दी, परमेश्वर का मेमना मारा गया ताकि उसके लोग क्षमा प्राप्त कर सकें।

पवित्र आत्मा द्वारा शिक्षित, आरम्भिक मसीही भी समझे कि यीशु ने

कूस पर क्या सम्पन्न किया। पौलुस ने इसका ऐसे वर्णन किया : "मसीह ने हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया स्वयं हमारे लिए शाप बनने के द्वारा" (गलातियों 3:13–14)। और अन्य जगह वह समझता है, "जो पाप से अनजान से था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (2 कुरिन्थियों 5:21)। पतरस ने लिखा, "मसीह भी सबके पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी जिससे वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए" (1पतरस 3:18) एवं "उसने स्वंय अपनी ही देह में कूस पर हमारे पापों को उठा लिया, जिससे हम पाप के लिए मरें और धार्मिकता के लिए जीवन व्यतीत करें, क्योंकि इसके घावों से तुम स्वस्थ हुए हो" (1पतरस 2:24)।

क्या आप देख रहे हैं कि यह मसीही यीशु के मृत्यु के अभिप्राय के बारे में क्या कह रहे थे ? वह यह कह रहे थे कि जब यीशु मरा यह उसके स्वंय के पापों की सजा नहीं थी जो कि उसने सही। (उसमें कोई पाप ही ना था !)। यह तो उसके लोगों के पापों की सजा थी ! जब वह कलवरी के कूस पर लटका था, यीशु ने परमेश्वर के लोगों के भीषण पापों का सारा बोझ अपने ऊपर उठा लिया। उनका सम्पूर्ण विद्रोह, उनकी समस्त अनाज्ञाकारिता, उनके सारे पाप उसके कान्धों पर गिर पड़े। और वह श्राप जो परमेश्वर ने अदन में उच्चारित किया था–मौत की सज़ा–यीशु पर पड़ी।

इसलिए यीशु यातना में होकर पुकार पड़े, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तुने मुझे क्यों छोड़ दिया ?" (मत्ती 27:46)। परमेश्वर उसका पिता, जो कि पवित्र और धर्मी है, जिसकी आखें अत्यन्त पवित्र हैं कि वह पाप को नहीं देख सकता। उसने अपने पुत्र पर दृष्टि डाली और उसने अपने पुत्र के कांधों पर उसके लोगों के पापों को देखा और घृणा में होकर अपना मुख मोड़ लिया और अपने स्वंय के पुत्र पर अपना प्रकोप उण्डेल दिया। मत्ती लिखता है कि जिन तीन घंटो तक यीशु कूस पर था, उस दौरान पृथ्वी पर अन्धकार छाया हुआ था। यह अंधकार न्याय के कारण था। परमेश्वर पिता के प्रकोप का भार यीशु पर गिर रहा था जब वह अपने लोगों के पापों को



उठा रहा था और उनके बदले मरा।

यशायाह ने इसके बारे में भविष्यवाणी लगभग सात सदियों पहले की थी :

निश्चय उसने हमारे पीड़ाओं को आप सह लिया
और हमारे दुखों को उठा लिया।
फिर भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा
और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा।
परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया,
वह हमारे ही अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; हमारे ही
शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी;
उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए।
(यशायाह 53:4–5)

क्या आप इसका महत्व देखते हैं ? मूलभूत रूप से इसका अर्थ है कि *मेरी* मौत होनी चाहिए थी, न कि यीशु की। *मुझे* दण्ड मिलना चाहिए था, न कि उसे। परन्तु फिर भी उसने मेरी जगह ले ली। वह मेरे लिए, मेरे बदले में मरा।

वे मेरे अपराध थे, किन्तु वह घायल हुआ। मेरे अधर्म के कार्य, किन्तु वह कुचला गया। मेरे पाप, उसके दुख। उसकी ताड़ना के द्वारा मुझे शान्ति मिली। उसके कोड़ो ने मेरे लिए चंगाई हासिल की। उसका दुख, मेरा आनन्द।

उसकी मृत्यु, मेरा जीवन।

### *सुसमाचार का मुख्य केन्द्र*

दुख की बात तो यह है कि मसीही सुसमाचार के किसी भाग से यदि संसार सबसे ज्यादा घृणा करता है तो वह है "दण्ड–प्रतिस्थापन" (किसी के बदले

कोई और दण्ड का सामना करे) का सिद्धान्त। लोग इस बात से घृणा करते हैं कि यीशु किसी और के पापों के लिए दण्डित किया गया। अनेक लेखकों ने इस शिक्षा को "ईश्वर द्वारा अपनी संतान से दुर्व्यवहार करना" कहलाया है। परन्तु दण्ड–प्रतिस्थापन द्वारा प्रायश्चित की शिक्षा को अलग करना सुसमाचार के मुख्य केन्द्र को निकालने की नाई होगा। निसंदेहः मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा जो सम्पन्न किया है उसको वचन विभिन्न तरीकों से चित्रित करता है : उदाहरण, मेल–मिलाप, और विजय कुछ तीन उदाहरण हैं। किन्तु इन सारे चित्रण के तले जिस सच्चाई की ओर यह सब इशारा करते हैं वह है दण्ड–प्रतिस्थापन। आप इस चित्र को न ही बाहर छोड़ सकते हैं और न ही अन्य चित्रों के पक्ष में इसको कम महत्व दे सकते हैं अन्यथा आप पवित्रशास्त्र के भूदृश्य को बिना उत्तर के प्रश्नों से भर देंगे। उदाहरण के तौर पर : पुराने नियम में बलिदान की क्या आवश्यकता थी ? उस लहू के बहाने के द्वारा क्या सम्पन्न होता था ? परमेश्वर बिना न्याय का विनाश करे पापियों पर कैसे दया कर सकता है ? इसका अर्थ क्या है कि परमेश्वर अधर्म, अपराध और क्षमा करने वाला है फिर भी दोषी को वह किसी भी प्रकार दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ेगा (निर्गमन 34:7) ? कैसे एक धर्मी और पवित्र परमेश्वर भक्तिहीन को धर्मी ठहरा सकता है (रोमियों 4:5) ?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर कलवरी के क्रूस पर पाया जाता है, यीशु की उसके लोगों के लिए उनके बदले में उसकी मृत्यु। एक धर्मी और पवित्र परमेश्वर भक्तिहीन को धर्मी ठहरा सकता है क्योंकि यीशु की मृत्यु में दया और न्याय का सिद्ध मेल हुआ था। श्राप को धार्मिकता से घात किया गया और हमें करूणा में होकर बचाया गया।

### *वह जी उठा है*

अवश्य ही, यह सब सत्य है–और शुभ सन्देश है–केवल इसलिए क्योंकि राजा यीशु जो कि क्रूसित हुआ अब मृतक नहीं रहा। वह कब्र में से जी उठा। वह सारी शंकाएँ जो शिष्यों के मन में यीशु के मृत्यु के उपरान्त थीं एक क्षण में जाती रही जैसे ही स्वर्गदूत ने महिलाओं से कहा "तुम जीवित को मरे



हुओ में क्यों ढूँढती हो ? वह यहाँ नहीं है, पर जी उठा है" (लूका 24:5–6)।

यदि मसीह किसी अन्य "मुक्तिदाता" या "शिक्षक" या "भविष्यद्वक्ता" की नाई मृतक बना रहता तो उसकी मृत्यु का हमारी और आपकी मृत्यु से कुछ अधिक तात्पर्य नहीं होता। यदि मृत्यु की लहरों ने उसको घेर लिया होता जैसे कि वह किसी भी अन्य मनुष्य के साथ करती हैं। तो सारे दावे जो उसने किये थे शून्य में डूब जाते और मानवता पाप से बचाए जाने के बिना किसी आशा के होती। किन्तु जब श्वांस ने उसके जी उठे फेफड़ों में पुनः प्रवेश किया जब पुनरूत्थित जीवन ने उसके महिमान्वित देह को विद्युत से भर दिया प्रत्येक बात जिनका यीशु ने दावा किया था पूर्णतः अनन्तः निश्चित तौर पर अटल रूप से दोषमुक्त साबित हुई।

पौलुस रोमियों 8 मे यीशु के पुनरूथान मे आनन्दित होता है और उसका विश्वासियों के लिए क्या तात्पर्य है :

> वह कौन है जो दोष लगाएगा ? मसीह यीशु ही है जो मरा, हॉ वरन वह मृतकों में से जिलाया गया जो परमेश्वर के दाहिनी ओर है और हमारे लिए निवेदन भी करता है। (रोमियों 8:33–34)

यह कितना अद्‌भुत विचार है–कि वह मानव यीशु अब वैभव में स्वर्ग में अपने पिता के दाहिनी ओर बैठे हैं और इस संसार में राजा के रूप में राज्य कर रहे हैं ! यह सिर्फ इतना ही नहीं है लेकिन वह अभी भी अपने लोगों के लिए प्रार्थना निवेदन कर रहे हैं और इसी बीच अपने अन्तिम और महिमामय वापसी का इंतजार कर रहे हैं।

लेकिन यह सारी बातें एक और प्रश्न को खड़ा कर देती है कि नहीं ? कौन है "उसके लोग" ?

## अध्याय पाँच

# प्रतिउत्तर–विश्वास और मन फिराव

**मैंने अपने बेटे को तैरना** जल्दी सिखाना आरम्भ कर दिया था। वह एक मेहनत का काम था। उस समय वह लगभग एक साल का था। उस छोटे लड़के को नहाने के टब का पानी भी अपने मुहँ पर लगना अच्छा नहीं लगता था। तो वह अब वह समुन्द्र के समान जिस ताल को घूर रहा था उसको और भी कम पसन्द कर रहा था। आरम्भ में तो उसको तैराकी सिखाने का मतलब था कि सिर्फ ताल की पहली सीढ़ी पर ही वह पानी में छपाका मारे और अगर वह उस दिन दिलेरी महसूस कर रहा हो तो वह अपने होठों को पानी में डालकर बुलबुले बनाये।

आखिरकार मैं उसको उथले पानी में चलने को राज़ी करने में सफल हुआ किन्तु वह मेरे गर्दन को अपने हाथों से जकड़े हुए था। जब वह यह करने में परिपक्व हो गया तो समय था अब बड़े प्रदर्शन का–जो कि उसको ताल के किनारे से उसके अन्दर कूदना था। मैंने परमेश्वर द्वारा दी गयी एक पिता होने के नाते अपनी जिम्मेदारी निभायी और उसको ताल में से निकाल कर किनारे पर खड़ा किया और कहा "आओ कूदो !"

मै सोचता हूँ कि उस क्षण मेरे एक वर्ष के बेटे ने मुझे पागल करार कर दिया होगा। उसके चेहरे पर प्रतिक्रिया लगभग दो पलों में भ्रम से बढ़ती हुई समझ तक से हास्यप्रद तिरिस्कार से पूर्ण अवमानना तक दिखाई दी। उसने भौं सिकोड़ा और कहा "नहीं, मैं माँ को देखने जा रहा हूँ।" पुनः मैंने अपने पिता होने की जिम्मेदारी पर कार्यवाही की और आत्मसमर्पण करने से इन्कार किया उसका पीछा करके उसको तरण–ताल में वापस आने के लिए सहमत किया (विभिन्न आकर्षणों से लुभाने के द्वारा)। और फिर हम उस



सच्चाई के क्षण पर आ गये।

मैं पानी में पुनः कूद गया और उसके सामने हाथों को फैला कर खड़ा हो गया। मैं उसके सीने को ऊपर–नीचे होते हुए देख रहा था जैसा कि हर कोई एक वर्षीय बालक करता है, जब वह कूदना तो चाहता है लेकिन निश्चित नहीं होता है। "आओ बेटा" मैंने कहा। "मैं यहाँ हूँ मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, मैं वादा करता हूँ।" उसने मेरे को थोड़ा सन्देह के साथ देखा एक बार फिर से अपने सीने में हवा भरी अपने घुटनों पर उछला और ताल में कूदने के बजाए भद् से गिर पड़ा।

और मैंने उसे पकड़ लिया।

उसके बाद हमने तेजी से आरम्भ कर दिया, "फिर से पिताजी ! फिर से !" और फिर आधे घंटे तक हमने कूद, छलांग, पकड़, उठाना जारी रखा।

जब सब पूरा हुआ तो मैं और मेरी पत्नी थोड़ा चिन्ता करने लगे कि कहीं हमारा बेटा पानी के अन्दर कुछ *अधिक* ही आराम में तो नहीं है। कहीं वह ताल की तरफ तब न चला जाए जब वहाँ कोई न हो ? कहीं वह यह याद करके कि वह कितनी बार पानी में सुरक्षित गया है, यह निर्णय न करे कि यह ताल उसके नियंत्रण में है ? क्या वह पुनः कूदेगा ?

अगले कुछ दिनों तक हमने उसको ताल के चारों ओर देखा और जो हमने देखा उसने हमें माता–पिता होने के नाते सन्तावना दी और पिता होने के नाते मेरे हृदय को स्पर्श किया। मेरे बेटे ने एक बार भी पानी में कूदने के बारे में नहीं सोचा–कम से कम तब तक जब तक की मैं उसको पकड़ने का वादा करते हुये नीचे हाथ फैला के न खड़ा हूँ। और फिर वह तभी कूदेगा !

देखिए, इन सारी स्पष्ट सफलताओं के बाद भी मेरे बेटे को कभी भी उसके स्वंय के पानी को छूने की योग्यता पर भरोसा नहीं था। उसका

भरोसा तो उसके पिता में था और उसके पिता की प्रतिज्ञा में "आओ बेटा, कूदो। मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुम्हे पकड़ लूगाँ।"

### *विश्वास और मन फिराव से परिचय*

मरकुस बताता है कि यीशु ने अपनी सेवकाई को प्रचार के द्वारा आरम्भ किया "समय पूरा हुआ है और परमेश्वर का राज्य निकट है मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:15)। परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम इस आज्ञा–मन फिराओ और विश्वास करो–का यीशु के शुभ सन्देश के प्रतिउत्तर में पालन करें।

सम्पूर्ण नये नियम में हम प्रेरितों को लोगों को यही पुकारते हुए देखते हैं। यीशु ने अपने सुनने वालों को मन फिराने और शुभ सन्देश पर विश्वास करने के लिए कहा। पेन्तिकुस्त के दिन अपने सन्देश के अन्त में पतरस ने लोगों से कहा "मन फिराओ और यीशु मसीह के नाम से तुम में से प्रत्येक बपतिस्मा ले" (प्रेरितों 2:38)। पौलुस ने अपनी सेवकाई का वर्णन प्रेरितों 20:21 में यह कहते हुए कहा "मैं यहूदी और यूनानी दोनों को ही दृढ़तापूर्वक साक्षी देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराओ और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो।" और 26:18 में याद करता है कि कैसे स्वंय यीशु ने उसे भेजा

> कि तू उनकी आँखें खोले जिससे की वे अंधकार से ज्योति की ओर तथा शैतान के राज्य से परमेश्वर की ओर फिरें, जिससे कि वे पापों की क्षमा और उन लोगों के करने साथ उत्तराधिकार प्राप्त करें जो मुझ पर विश्वास के द्वारा पवित्र हुए हैं।

विश्वास और मनफिराव। यही है उन लोगों की पहचान जो मसीह के लोग है अथवा "मसीही" (क्रिश्चयन)। दूसरे शब्दों में एक मसीही वह है जो अपने पापों से मुड़ कर यीशु मसीह पर विश्वास करता है–और किसी अन्य पर नहीं–कि वह उसे पाप से और आने वाले न्याय से बचाएगा।



### *विश्वास भरोसा करना है*

*विश्वास* उन शब्दों मे से एक है जिसका दुरूपयोग इतने लम्बे समय से हो रहा है कि अधिकतर लोगों को कोई ज्ञान नहीं है कि इसका वास्तविक अर्थ क्या है। आप सड़क पर किसी से विश्वास को वर्णित करने के लिए पूछिए और हो सकता है कि आपको कुछ आदर पूर्ण शब्द सुनाई दें किन्तु इस विषय का मुख्य बात तो यह है कि विश्वास तो सारे प्रमाण के विपरीत में भी हास्यप्रद एवं अविश्वसनीय पर भरोसा करना है।

एक बार मैं अपने बड़े बेटे के साथ टेलिविज़न पर मेसी (एक बड़ा व्यवसाय) द्वारा आयोजित 'धन्यवाद दिवस' (अमरीकीयों का एक त्योहार) के जुलूस को देख रहा था। उस कार्यक्रम का विषय था "विश्वास !" और उसका मुख्य केन्द्र झाकियों की समीक्षा करने वाले पड़ाव के ऊपर लटकी हुई एक वस्तु थी जिसे कार्यक्रम उदघोषक "विश्वास–का–मापक" कहला रहे थे। जितनी बार एक नई झांकी उसके सामने से गुजरती या कोई बैंड–बाजा बजते हुये जाता या नृत्यक अपने विभिन्न पोशाक में नाचते तो इस "विश्वास–का–व्यापक" की सुई थोड़ी ऊपर चढ़ जाती। और हाँ इस जुलूस का मुख्य भाग तो वह था जब "सैंटा क्लाज" स्वंय अपनी सवारी पर आया–जो कि बिना पहिये के बर्फ पर फिसलने वाली गाड़ी थी और एक भव्य हंस के आकार में थी–और तब "विश्वास–का–मापक" नियंत्रण से बाहर हो गया ! उस संगीत, नाच, फुलझड़ी और चीखते हुए बच्चे और वयस्क को यदि कोई बाहरी व्यक्ति देखे तो वह इस निष्कर्ष पर पहुँचेगा कि निश्चय ही यह लोग तो इस पर विश्वास *करते* हैं।

परमेश्वर मेरे छह वर्षीय बेटे को आशीष दे उसने सोचा कि यह सब हरकत मूर्खता पूर्ण थी।

किन्तु अब दुनिया विश्वास के बारे में यही समझती है। यह तो सिर्फ एक पहेली है एक आनन्दायक किन्तु सन्तावना देने वाला खेल जिसमें लोगों की इच्छा हो तो शामिल हो सकते हैं किन्तु इसका वास्तविक दुनिया से कुछ

लेना देना नहीं है। बच्चे लोग सैन्टा क्लाज़ और ईस्टर के खरगोश पर विश्वास करते हैं। अध्यात्मिक रहस्यवादी लोग पत्थरों और मणियों की सामर्थ पर विश्वास करते हैं। सनकी लोग परियों पर विश्वास करते हैं। और मसीही लोग तो खैर, वह तो यीशु पर विश्वास करते हैं।

जब आप बाइबल को पढ़ेगें तो पाएंगे कि विश्वास उस हास्यपद चित्रीकरण के समान नहीं है। विश्वास किसी ऐसी वस्तु पर भरोसा रखना नहीं है जिसे आप प्रमाणित न कर सकें जैसा कि अनेक लोग परिभाषित करते हैं। बाइबल के अनुसार विश्वास *भरोसा* या आसरा है। यह अपने पापों से छुटकारे के लिए उस जी उठे यीशु पर चट्टान के समान ठोस, सत्य में जड़ा हुआ प्रतिज्ञा पर आधारित *भरोसा* है।

पौलुस हमें रोमियों 4 मे इब्राहीम के बारे में बात करते हुए विश्वास की प्रवृति के बारे में बताता है । वह इब्राहिम के विश्वास को ऐसे वर्णित करता है :

> उसने निराशा में भी आशा रख कर विश्वास किया इसलिए कि उस वचन के अनुसार जो कहा गया था, **"तेरा वंश ऐसा होगा,"** वह बहुत–सी जातियों का पिता हो। वह जो एक सौ वर्ष का था अपने मृतक समान शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई दशा जानते हुए भी विश्वास में निर्बल न हुआ फिर भी परमेश्वर की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में वह अविश्वास के कारण विचलित नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर की महिमा करते हुए विश्वास में दृढ़ हुआ पूर्णतः आश्वस्त होकर कि जो प्रतिज्ञा उसने की थी वह उसे पूरा करने मे भी समर्थ है; (रोमियों 4:18–21)

उसने निराशा में भी आशा रख कर विश्वास किया इसलिए कि उस वचन के अनुसार जो कहा गया था, **"तेरा वंश ऐसा होगा,"** वह बहुत–सी जातियों का पिता हो। वह जो एक सौ वर्ष का था अपने मृतक समान शरीर



और सारा के गर्भ की मरी हुई दशा जानते हुए भी विश्वास में निर्बल न हुआ फिर भी परमेश्वर की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में वह अविश्वास के कारण विचलित नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर की महिमा करते हुए विश्वास में दृढ़ हुआ पूर्णतः आश्वस्त होकर कि जो प्रतिज्ञा उसने की थी वह उसे पूरा करने मे भी समर्थ है; (रोमियों 4:18–21)

इसके बाद भी कि सब बातें परमेश्वर के प्रतिज्ञा के विरूद्ध काम कर रहीं थीं–जो कुछ परमेश्वर ने कहा था उस पर इब्राहिम ने विश्वास किया। उसने परमेश्वर पर दृढ़ता के साथ विश्वास किया और उसकी प्रतिज्ञाओं को पूरी करने के लिए उस पर भरोसा किया। और हाँ इब्राहिम का विश्वास सिद्ध विश्वास तो नहीं था; हाज़िरा द्वारा इश्माएल का जन्म इस बात को साबित करता है कि आरम्भ में उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पूरा होते हुए देखने के लिए अपने स्वंय की युक्ति पर भरोसा रखने का प्रयास किया। किन्तु उस पाप से पश्चाताप करने के बाद इब्राहिम ने अन्त में अपना विश्वास परमेश्वर पर डाल दिया। उसने उस पर निर्भर किया और जैसे कि पौलुस कहता है "और पूर्णतः आश्वस्त होकर कि जो प्रतिज्ञा उसने की थी वह उसे पूरा करने में समर्थ है।"

यीशु मसीह का सुसमाचार भी हमें यही करने के लिए बुलाता है–यीशु पर अपना विश्वास डालने के लिए उस पर निर्भर होने के लिए और भरोसा करने के लिए कि जो उसने प्रतिज्ञा किया है उसे पूर्ण करेगा।

### *एक धर्मी फैसले के लिए विश्वास*

लेकिन हम आखिर किस बात के लिए यीशु पर निर्भर कर रहे हैं ? साधारण शब्दों में कहें तो हम उस पर निर्भर कर रहे हैं कि न्यायी परमेश्वर हमारे प्रति धर्मी होने का फैसला सुनाए न कि दोषी होने का।

मुझे समझाने की अनुमति दें। बाइबल यह सिखाती है कि मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि वह परमेश्वर के सम्मुख अधर्मी के बजाय

धर्मी पाया जाए। जब न्याय आएगा तब हमारी बहुत बड़ी आवश्यकता है कि हमारे ऊपर फैसला "धर्मी" का सुनाया जाए बजाए कि "दोषी" का। और इसी को बाइबल "धर्मी ठहराया जाना" कहलाती है–यह परमेश्वर की उद्घोषणा है कि हम उसकी दृष्टि में धर्मी हैं न कि दोषी।

और धार्मिकता के इस फैसले को हम कैसे प्राप्त करते हैं ? बाइबल हमको साफ बताती है कि यह परमेश्वर से हमारे जीवन को जाँचने के द्वारा नहीं होगा। नहीं वह तो मूर्खतापूर्ण कदम होगा। यदि परमेश्वर हमें कभी धर्मी गिने तो वह हमारे पापी जीवन के आधार पर नहीं किन्तु किसी अन्य के आधार पर करना होगा। उसे किसी *अन्य* व्यक्ति के जीवन के लेखे जोखे के आधार पर करना होगा, कोई जो कि हमारे बदले एक प्रतिस्थापन के तौर पर खड़ा हो। यहाँ पर यीशु में विश्वास करना आता है। जब हम अपना भरोसा यीशु पर डालते हैं हम उस पर निर्भर करते हैं कि वह परमेश्वर के सामने वह हमारे बदले में खड़ा होगा, अपने सिद्ध जीवन के द्वारा और क्रूस पर हमारे लिए दण्ड चुकाने वाली मृत्यु के द्वारा। दूसरे शब्दों में हम यह भरोसा रखते हैं कि परमेश्वर यीशु के लेखे जोखे को हमारे लेखे जोखे से बदल देगा और इसलिए हमको धर्मी ठहरा देगा (रोमियों 3:22)।

आप इसके बारे में ऐसे सोच सकते हैं : जब हम स्वंय को बचाने के लिए यीशु पर विश्वास करते हैं ती हम उससे जुड़ जाते हैं और एक भव्य आदान–प्रदान होता है। हमारे सारे पाप, विद्रोह और दुष्टता को यीशु पर थोप दिया जाता है (अथवा उनके खाते मे डाल दिया जाता है) और इसलिए उसकी वजह से वह मरता है (1 पतरस 3:18)। और उसी समय जो सिद्ध जीवन यीशु ने जिया था वह हम पर थोप दिया जाता है (अथवा हमारे खाते मे डाल दिया जाता है) और हम धर्मी करार दिये जाते हैं। परमेश्वर हमें देखता है और हमारे पापों के बजाए वह यीशु की धार्मिकता को देखता है।

पौलुस का यह ही तात्पर्य है जब वह रोमियों 4 में लिखता है कि परमेश्वर ने हमें हमारे स्वंय के कार्यों से हट कर "धार्मिकता गिना" और हमारे पाप "ढापे" गए हैं (पद 5,7)। और सबसे महत्वपूर्ण तौर पर पौलुस का यही



तात्पर्य है जब वह चौंकानेवाली बात कहता है कि परमेश्वर "भक्तिहीन को धर्मी ठहराता है" (पद 5) ! परमेश्वर हमको इसलिए धर्मी नहीं ठहराता है क्योंकि हम स्वंय में धर्मी हैं और परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यह सच है क्योंकि हम में से कोई भी उस मानदण्ड तक नही पहुँचेगा। नहीं परमेश्वर हमें धर्मी ठहराता है क्योंकि विश्वास के द्वारा हम मसीह के धर्मी जीवन से ढाँके गये हैं। परमेश्वर हमें केवल अनुग्रह के द्वारा बचाता है इसलिए नहीं क्योंकि हमने कुछ किया है किन्तु केवल *मसीह* ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसके कारण।

ज़कर्याह नबी इस बात को महायाजक यहोशु को नये वस्त्र दिये जाने के सुन्दर चित्रण के द्वारा दर्शाता है। जकर्याह ने यह लिखा :

> फिर उसने मुझे यह दिखाया कि यहोशू महायाजक यहोवा के दूत के सामने खड़ा हुआ है तथा शैतान उसके दाहिने हाथ की ओर खड़ा है कि उस पर दोष लगाए। तब यहोवा ने शैतान से कहा "हे शैतान, यहोवा तुझे डांटे। निस्सन्देह यहोवा जिसने यरूशलेम को अपना लिया है तुझे डांटे। क्या यह आग से निकली हुई लकड़ी–सी नहीं ?" यहोशू तो स्वर्गदूत के सामने मैले–कुचैले वस्त्र पहने खड़ा था जो लोग उसके सामने खड़े थे उनसे उसने कहा "उसके मैले वस्त्र उतार फेंको।" तब उसने कहा "देख, मैंने तेरा अधर्म तुझ से दूर कर दिया है कि तुझे उत्सव का वस्त्र पहनाऊं। "फिर मैंने कहा, वे उसके सिर पर साफ पगड़ी रखे।" अतः उसके सिर पर साफ पगड़ी रखी गई तथा उसे पोशाक पहनाई गई। यहोवा का दूत उसके समीप खड़ा रहा। (ज़कर्याह 3:1–5)

वह कीमती, साफ, नये वस्त्र यहोशू के नहीं थे, न ही वह स्वच्छ पगड़ी। स्वंय यहोशू के पास तो केवल वह मैले–कुचले वस्त्र थे जिसमें वह खड़ा था और उन्ही पर शैतान उंगुली उठा कर उपहास और दोषारोपण करने वाला था। जिस धार्मिकता का यहोशू ने परमेश्वर के सामने आन्नद

उठाया वह उसकी स्वंय की धार्मिकता नहीं थी, वह उसको किसी अन्य के द्वारा दी गई थी।

यह हमारे लिए भी मसीही होने के नाते सत्य है। परमेश्वर के सामने हमारी धार्मिकता हमारे स्वंय की नहीं है। यह हमें यीशु के द्वारा दी गई है। परमेश्वर ने अपने पुत्र पर निगाह डाली और हमारे पापों को देखा और वह हमको देखता है तो यीशु की धार्मिकता को देखता है। जैसे कि एक गीत कहता है

"परमेश्वर न्यायी सन्तुष्ट हुआ,
उसको देख कर और मुझे क्षमा कर के।"

## *केवल विश्वास*

जब आपको यह एहसास होता है कि आप अपने उद्धार के लिए यीशु पर कितना अधिक निर्भर हैं–आपके पाप के लिए उसकी मृत्यु आपकी धार्मिकता के लिए उसका जीवन–तब आप समझते हैं कि क्यों बाइबल इस बात पर बल देती है कि उद्धार केवल उस पर विश्वास के द्वारा आता है। कोई दूसरा मार्ग नहीं है, कोई दूसरा उद्धारकर्ता नहीं है, कुछ भी नहीं है इस संसार में और कोई अन्य नहीं है जिस पर हम उद्धार के लिए भरोसा कर सकें यहाँ तक हमारे स्वंय के प्रयास भी नहीं।

मानव इतिहास में प्रत्येक अन्य धर्म इस विचार को नकारते हैं कि हम सिर्फ विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराये जाते हैं। बल्कि अन्य धर्म यह दावा करते हैं कि नैतिक प्रयास, अच्छे कर्म और किसी तरह अपने खाते में अपनी बुराई से ज्यादा भलाई जमा कर लेने के द्वारा हम उद्धार प्राप्त करते हैं। वास्तव में यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं है। ऐसा सोचना अत्यन्त मानवीय है–और इस बात की हठ करना–कि हम अपने स्वंय के उद्धार के प्रति योगदान कर सकते हैं।



हम सब आत्म–निर्भर हैं, हैं कि नहीं, हम अपने स्वावलम्ब के बारे में निश्चित हैं और हम किसी भी ऐसे विचार से अप्रसन्न होते हैं जो इस बात का ईशारा करे कि हम जो कुछ भी हैं वह किसी और के हस्तक्षेप की वजह से हैं। आप विचार कीजिए कि आपको कैसा लगेगा अगर आपसे कोई आपकी नौकरी या किसी अन्य बात के बारे में जिसे आप बहुमूल्य समझते हैं कहे "अरे हाँ, तुमने उसे नहीं कमाया है। तुम्हारे पास वह है क्योंकि किसी ने तुम्हें दिया है।" और बिलकुल ऐसा ही मामला है जब हम परमेश्वर के समक्ष अपने उद्धार की बात करते हैं। यह हमें अनुग्रह के भेंट के रूप में दिया गया है और हम कुछ भी योगदान नहीं करते हैं–हमारे स्वंय की धार्मिकता नहीं : हमारे स्वंय के पापों का भुगतान नहीं और निश्चित ही कोई भले कार्य नहीं जो कि हमारे लेखा–जोखा को बराबर कर सके (गलातियों 2:16)।

मसीह पर विश्वास करने का अर्थ यह है कि आप अपने आपको परमेश्वर के सामने धर्मी गिने जाने कि किसी अन्य आशा को पूर्णतः त्याग दें। क्या आप अपने आपको अपने भले कार्यों पर भरोसा करते हुए पाते हैं ? विश्वास का अर्थ यह है कि आप स्वीकार करें कि यह अत्यन्त अपर्याप्त हैं और सिर्फ मसीह पर विश्वास करें। क्या आप अपने आपको अपनी समझ के अनुसार अपने भले हृदय पर भरोसा करते हुए पाते है विश्वास का अर्थ है कि यह स्वीकार करना कि आपका हृदय बिलकुल भी भला नहीं है और केवल मसीह पर भरोसा करना दूसरे शब्दों में कि ताल के कोने से कूदना (मेरे बेटे के समान) और यह कहना कि "यीशु यदि आप मुझे नहीं थामेंगे तो मेरा अन्त हो जाएगा। मेरे पास कोई और आशा नहीं है, कोई और उद्धारकर्ता नहीं। यीशु मुझे बचाइये अन्यथा मैं मर जाँऊगा।"

यह है विश्वास।

## पश्चाताप, सिक्के का दूसरा पहलू

यीशु का सन्देश उनके श्रोताओं को यह था "मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:15)। यदि विश्वास यीशु की ओर मुड़ना और

उद्धार के लिए उस पर भरोसा करना तो मन फिराव उस सिक्के का दूसरा पहलू है। जब हम उसकी ओर विश्वास में मुड़ते हैं तो यह पाप से पलटना है, उससे घृणा करना है और परमेश्वर के सामर्थ में होकर उसे त्यागने का निश्चय करना है। इसलिए पतरस ने देखने वाली भीड़ से कहा "इसलिए पश्चाताप करो और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं" (प्रेरितों 3:19) और पौलुस सबसे कहता है कि वे पश्चाताप करके परमेश्वर की ओर फिरें (प्रेरितों 26:20)।

पश्चाताप मसीही जीवन के लिए केवल एक औपचारिक निर्णय नहीं है। यह उसके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यह परमेश्वर द्वारा बचाए गये लोगों को, नहीं बचाए हुओं से अलग चिन्हित करता है।

मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो ऐसा कुछ कहेंगे "हाँ, मैंने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया है इसलिए मैं मसीही हूँ। किन्तु मैं अभी तक उसको प्रभु करके स्वीकार करने को तैयार नहीं हूँ मुझे अभी कुछ काम और करना है।" दूसरे शब्दों में वह यह दावा करते हैं कि वह यीशु में विश्वास रखते हैं और बचाए जा सकते हैं और फिर भी पापों से अभी तक पश्चाताप नहीं किये हैं।

यदि हम पश्चाताप को सही रीति से समझेंगे तो हम देखेंगे कि यह सोच मूर्खतापूर्ण है कि आप यीशु को उद्धारकर्ता के रूप मे ग्रहण कर सकते हैं और प्रभु के रूप में नहीं। पहली बात तो यह है कि वचन पश्चाताप का उद्धार से उसके सम्बन्ध के बारे में क्या कहता है, उससे यह उचित व्यवहार नहीं करता है। उदाहरण के तौर पर यीशु ने चेतावनी दी "जब तक तुम मन न फिराओ तुम सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे" (लूका 13:3)। प्रेरितों ने जब से कुरनेलियुस पतरस के हृदय परिवर्तन की कहानी सुनी तो परमेश्वर की महिमा करने लगे "गैर–यहूदियों को भी जीवन के लिए मन फिराव का वरदान" देने के लिए (प्रेरितों के काम 11:18) और 2 कुरिन्थियों 7:10 में पौलुस के बारे में बात करता है "ऐसा पश्चाताप जिसका परिणाम



उद्धार है।"

इसके अतिरिक्त यीशु पर विश्वास करने के केन्द्र में यह विश्वास करना है कि वह वास्तव में है जो वह कहता है–क्रूसित और जी उठा राजा जिसने मृत्यु और पाप पर विजय प्राप्त की है और जिसके पास बचाने की सामर्थ है। अब कैसे सम्भव है कि कोई व्यक्ति इन सब पर विश्वास करे, भरोसा रखे और उस पर निर्भर करे और फिर भी यह कहे कि "किन्तु मैं यह स्वीकार नहीं करता कि तुम मेरे ऊपर राजा हो ? इसका कोई मतलब ही नहीं बनता है। मसीह में विश्वास का तात्पर्य ही है कि उस विरोधी सामर्थ अर्थात पाप का परित्याग करना जिस पर राजा यीशु ने विजय पाई थी और जहाँ पाप का परित्याग नहीं होता है, वहाँ पर जिसने पाप को हराया था उस पर सच्चा विश्वास भी सम्भव नहीं होता है।

यह तो उस समान है जैसे कि यीशु ने मत्ती 6:24 में कहा "कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नही कर सकता क्योंकि वह या तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम करेगा या एक से घनिष्टता रखेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा।" यीशु राजा पर अपना विश्वास करने का अर्थ है उसके शत्रुओं का परित्याग करना।

## पश्चाताप, सिद्धता नहीं किन्तु पक्ष चुनना

इन सब का यह अर्थ नहीं है कि मसीही पाप कभी भी नहीं करेंगे। पापों से पश्चाताप का यह मतलब नहीं है कि आप पाप करना बन्द कर देते हैं–अवश्य ही पूर्ण रूप से नहीं और अकसर कुछ विशेष क्षेत्रों में नहीं। यद्यपि परमेश्वर हमें नया आत्मिक जीवन देता है उसके बाद भी मसीही गिरे हुए पापी हैं और जब तक हम यीशु के साथ महिमान्वित नहीं होंगे तब तक हम पाप से संघर्ष करते रहेंगे (देखिए उदाहरण के लिए, गलातियों 5:17, 1 यहून्ना 2:1) और अगर पश्चाताप का यह मतलब नहीं है कि हमारे पाप करने का अन्त तुरन्त हो जाएगा तो इसका यह अवश्य अर्थ है कि हम अपने पाप के साथ अब शान्ति से नहीं रह पाऐंगे। हम पाप के विरूद्ध प्राणघातक

युद्ध की घोषणा करेंगे और अपने आपको परमेश्वर की सामर्थ में होकर, अपने जीवन के प्रत्येक पहलु पर उसका प्रतिरोध करने के लिये समर्पित करेंगे।

कई मसीही लोग पश्चाताप के इस विचार से घोर संघर्ष करते हैं क्योंकि वह यह आशा करते हैं कि वह अगर सचमुच में पश्चाताप करेंगे तो पाप चला जाएगा और प्रलोभन रूक जाएगा। और जब ऐसा नहीं होता है तो वह निराशा में पड़ जाते हैं और यीशु पर अपने विश्वास के बारे में प्रश्न करने लगते हैं कि वह सही है कि नहीं। यह बात सच है कि जब वह हमें नया जीवन प्रदान करता है तो हमें पाप के विरूद्ध लड़ने और विजयी होने की सामर्थ भी देता है (1कुरून्थियों 10:13)। किन्तु जब तक हम महिमान्वित नहीं हो जाते हैं तब तक हम पाप से संघर्ष करते रहेंगे इसलिए हमको यह याद रखना है कि वास्तविक पश्चाताप मूलभूत रीति से पाप के प्रति हृदय के रवैया का मामला है न कि केवल व्यवहार के बदलाव का मामला। क्या हम पाप से घृणा करते हैं और उसके विरूद्ध युद्ध करते हैं या हम उसको संजोय रखते हैं और उसको बचाते हैं ?

एक लेखक ने इस सत्य को सुन्दरता के साथ लिखा :

> हृदय परिवर्तित पुरूष और अपरिवर्तित पुरूष के बीच में अन्तर यह नहीं है कि एक में पाप है और एक में नहीं बल्कि एक अपने प्रिय पापों में भयावह परमेश्वर के विरूद्ध पक्ष लेता है और दूसरा परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप करके अपने घृणित पापों के विरूद्ध पक्ष लेता है।

तो आप किसका पक्ष लेंगे–अपने पापों का या परमेश्वर का ?

## वास्तविक बदलाव, वास्तविक फल

जब एक व्यक्ति वास्तव में पश्चाताप करता है और यीशु पर विश्वास करता



है तो बाइबल बताती है कि उसको नया आत्मिक जीवन प्रदान किया जाता है। "तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे"। पौलुस कहता है, "परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस महान प्रेम के कारण जिस से उसने हमसे प्रेम किया, जबकि हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया" (इफिसियों 2:1,4–5)। जब ऐसा होता है तो हमारा जीवन बदल जाता है–एकदम से नहीं, तीव्रता से नहीं और न ही जरूरी है कि स्थिरता के साथ। किन्तु अवश्य है कि वह बदलता है। हम फल उत्पन्न करने लगते हैं।

बाइबल यह बताती है कि मसीही लोगों में यीशु के समान प्रेम, दया और भलाई चिन्हित होनी चाहिए जैसे कि स्वंय यीशु में। पौलुस कहता है कि सच्चे मसीही "मन–फिराव के योग्य काम करेंगे" (प्रेरितों 26:20)। यीशु ने कहा, "प्रत्येक वृक्ष अपने फलों द्वारा ही पहिचाना जाता है। लोग तो कटीली झाड़ियों से अंजीर नहीं बटोरते और न ही झड़बेरी से अंगूर" (लूका 6:44)। दूसरे शब्दों में जब लोगों को नया आत्मिक जीवन प्राप्त होता है तो वह जिस तरह के कार्य यीशु ने किये थे उसका अनुसरण करने लगते हैं। वह यीशु के नाई जीवन व्यतीत करने लगते हैं और भले फल उत्पन्न करते हैं।

हमें किसी इस तरह के विचारों के प्रति निरन्तर चौकसी बरतनी चाहिए कि यह फल ही हमारे उद्धार का कारण हैं। यह हमेशा खतरा बना रहता है कि जब हम अपने जीवन में फल को देखने लगते हैं तो हम धीरे से यीशु के स्थान पर उस फल पर अपने उद्धार के लिए भरोसा रखने लगते हैं। मसीही, उस परीक्षा के विरूद्ध अपने आपको सचेत रखो। आप यह याद रखिए कि जो फल आप उत्पन्न करते हैं वह तो केवल–उस पेड़ का फल है जो कि मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा पहले ही से अच्छा बनाया गया है। परमेश्वर की अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए अपने स्वंय के फल पर भरोसा रखना अंतः यीशु से विश्वास हटाकर अपने ऊपर विश्वास लाना है। और वह तो कोई उद्धार है ही नहीं।

**आप किधर इशारा करेंगे ?**

जब आप परमेश्वर के सम्मुख न्याय के लिए खड़े होंगे तो मैं यह जानने की जिज्ञासा रखता हूँ कि आप क्या करने या कहने की योजना रखते हैं, उसको समझाने के लिए कि वह आपको धर्मी गिने और अपने राज्य की आशीषों का भागी बनाए ? आप अपनी जेब में से ऐसा कौन सा भला काम या धर्मी व्यवहार उसको प्रभावित करने के लिए निकालेंगे ? क्या आप अपनी कलीसियाई उपस्थिति का ब्योरा उसको दिखाऐंगे ? या अपना परिवारिक जीवन ? आपका निष्कलंक विचारों का जीवन ? या यह तथ्य कि आपने अपनी दृष्टि में कोई जधन्य अपराध नहीं किया है ? मैं यह जानने की जिज्ञासा रखता हूँ कि आप उसके सामने क्या दिखा कर कह सकते हैं कि "परमेश्वर, *इस* कारण आप मुझे धर्मी ठहराईये।"

मैं आपको बताता हूँ कि प्रत्येक मसीही जिसका विश्वास केवल यीशु में है परमेश्वर की दया से क्या करेगा। वह केवल शान्ति से यीशु की ओर इशारा करेंगे। और उनकी याचना यह होगी : "हे परमेश्वर, मेरे जीवन में किसी धार्मिकता को मत खोजिये। अपने पुत्र को देखिए। मुझे धर्मी इसलिए नहीं ठहराइये कि मैंने कुछ किया है अथवा मैं कुछ हूँ किन्तु अपने पुत्र के कारण। जो जीवन मुझे जीना चाहिए या वह उसने जिया है। उसने वह मृत्यु सही है जिसे मुझे सहना था। मैंने अपने बाकी सारे भरोसों का परित्याग किया है और मेरी याचना केवल वही अकेले है। हे परमेश्वर, मुझे यीशु की वजह से धर्मी ठहराईये ।"

## अध्याय छह

# साम्राज्य

**हमारे कलीसिया के गाड़ी पार्किंग के प्रवेश द्वार** पर सुसमाचार प्रचारक जिम एलियट के यह अमर शब्द एक कांस्य पटिका पर लिखे हुए हैं : "वह तो कतई मूर्ख नहीं जो ऐसी वस्तु दे जिसे वह नहीं रख सकता ताकी ऐसी वस्तु हासिल करे जिसे वह खो नहीं सकता।" मुझे यह उदाहरण अत्यन्त प्रिय है क्योंकि यह मसीही होने के नाते कीमत और प्रतिफल दोनों को अच्छी तरह से प्रस्तुत करता है।

इसमें कोई शक नहीं कि मसीही बनने में बहुमूल्य कीमत चुकानी पड़ती है (लूका 14:28)। किन्तु यह भी सच है कि मसीही बनने में वर्णन से बाहर महिमामय प्रतिफल भी प्राप्त होता है। पापों की क्षमा, परमेश्वर की सन्तान के रूप में अपनाया जाना, यीशु के साथ सम्बन्ध, पवित्र आत्मा का दान, पाप के अत्याचार से मुक्ति, कलीसिया की संगति, अन्तिम पुनरूत्थान और देह का महिमा में उठाया जाना, नया आकाश और नई पृथ्वी, अनन्तकाल तक परमेश्वर की उपस्थिति में वास, उसके चेहरे को नित्य निहारना–यह सारी प्रतिज्ञायें परमेश्वर ने मसीह में होकर हमसे की हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पौलुस यशायाह को उद्धृत करता है और कहता है।

"जिन बातों को आँख ने नहीं देखा
और न कान ने सुना,
और जो मनुष्य के हृदय में नहीं समाई,
उन्हीं को परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए
तैयार किया है।" (1 कुरिन्थियों 2:9)

मसीही जीवन सिर्फ परमेश्वर के प्रकोप से बचने के बारे में सुनिश्चित करना ही नहीं है। यह तो उससे बढ़ कर परमेश्वर के साथ *सही* सम्बन्ध में होने के बारे में है ! और अंतः उसके साथ अनन्तकाल में आनन्द मनाने के बारे में है। कहने का तात्पर्य तो यह है कि यह ऐसी वस्तु प्राप्त करने के बारे में है जिसे हम नहीं खो सकते—उसके अनन्त राज्य का नागरिक बनना।

जिस क्षण एक व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास लाता है उसके जीवन में सब कुछ बदल जाता है। हाँ मुझे मालूम है कि कभी—कभी ऐसा नहीं लगता है। यद्यपि उस समय कोई स्वर्ग से फुलझड़ी नहीं दिखाई देती, कोई तुरही नहीं, कोई स्वर्गदूत गान करते हुए नहीं दिखाई पड़ते, इसके बाद भी यह बात सच है। *प्रत्येक* वस्तु बदल जाती है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने, "हमें अंधकार के साम्राज्य से छुड़ा कर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है" (कुलुस्सियों 1:13)।

## *परमेश्वर का राज्य क्या है?*

नये नियम में परमेश्वर का राज्य एक महत्वपूर्ण विषय है। यीशु ने स्वंय इसके बारे में यह कहते हुए निरन्तर प्रचार किया कि "मन फिराओ, क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है।" प्रेरितों 28:31 में पौलुस की सेवकाई का सारांश ऐसे प्रस्तुत किया है : "और वह बिना किसी रूकावट के निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु के विषय में शिक्षा दिया करता था।" इब्रानियों का लेखक इस तथ्य में उल्लसित होता है कि मसीह में विश्वासी लोग "एक ऐसे राज्य को प्राप्त कर रहे हैं जो कि अटल है" (इब्रा. 12:28) और पतरस अपने पाठकों को इस विचार पर उत्साहित करता है कि "हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में हमारा बड़ा स्वागत होगा" (2 पतरस 1:11)। तब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, स्वर्गीय भीड़ प्रशंसा में यह पुकार उठी "अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, सामर्थ और राज्य तथा उसके मसीह का अधिकार प्रकट हुआ है, क्योंकि हमारे भाईयों पर दोष लगानेवाला, जो हमारे परमेश्वर के समक्ष रात—दिन उनको दोषी



ठहराता था, नीचे गिरा दिया गया है।"

किन्तु यह राज्य वास्तव में क्या है ? क्या यह एक राज्य का क्षेत्र है अथवा एक भूमि का टुकड़ा जिसके ऊपर परमेश्वर का विशेष अधिकार है ? क्या यह कलीसिया है ? क्या यह यहाँ पर अभी है या फिर हम इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं अथवा क्या यह ऐसी वस्तु है जो कभी भविष्य में आएगी ? और फिर आखिरकार परमेश्वर के राज्य में कौन है ? क्या परमेश्वर का राज्य सबके ऊपर नहीं फैला हुआ है, भले ही वह यीशु पर विश्वास करता है या नहीं ? क्या हम सब उसके राज्य में नहीं हैं और क्या हम सब—चाहे हम मसीही हैं या नहीं—परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए कार्य नहीं कर सकते ?

आइये हम कुछ इन प्रश्नों को समझने का प्रयास करें वचन को देखने के द्वारा कि वह परमेश्वर के राज्य के बारे में हमें क्या सिखाता है।

## परमेश्वर का छुटकारे का राज

प्रथम, परमेश्वर का राज्य उसके लोगों के ऊपर छुटकारा दिलाने वाला राज है। *राज्य* उन शब्दों में से एक शब्द है जो कि अपने साथ बहुत अर्थों को लाता है और इस सन्दर्भ में यह अकसर भ्रमित करते हैं। अकसर जब हम राज्य के बारे में सोचते हैं, तो हम भूमि के एक टुकड़े और उसकी सीमा के बारे में सोचते हैं। हम में से अधिकतर लोगों के लिए *राज्य* एक भौगोलिक शब्द है। किन्तु बाइबल में ऐसा नहीं है। बाइबल के अनुसार यदि हम बात करें तो परमेश्वर के राज्य को समझने का सबसे अच्छा तरीका है उसको हम राजा का राज—शासन करके समझें न कि केवल एक राज्य जैसे कि अकसर हम उस शब्द को समझते हैं। अतः परमेश्वर का राज्य है परमेश्वर का राज (परमेश्वर की प्रभुता) उसका शासन और अधिकार (भजन 145:11,13)।

किन्तु हमें एक और महत्वपूर्ण शब्द को अपनी परिभाषा में जोड़ना है। जैसा कि बाइबल बताती है, परमेश्वर का राज्य केवल उसका राज और

शासन ही नहीं है। यह उसका *छुटकारा* प्रदान कराने वाला राज और शासन है। यह उसका *अपने लोगों* के ऊपर प्रेम से परिपूर्ण सार्वभौमिक शासन है।

यद्यपि यह सत्य है कि इस संसार का एक भी वर्ग इंच, कोई भी व्यक्ति, परमेश्वर के राज से स्वतंत्र नहीं है या फिर उसके अधिकार के बाहर नहीं है। उसने सबकी सृष्टि की है, वह सब पर राज करता है और वह सबका न्याय करेगा। किन्तु जब बाइबल इन शब्दों का उपयोग करती है "परमेश्वर का राज्य" तो वह अकसर विशेष तौर पर परमेश्वर का अपने लोगों के ऊपर राज (प्रभुता) के बारे में बात करती है, वह लोग जो मसीह के द्वारा बचाए गए हैं। इसलिए पौलुस बात करता है कि कैसे मसीही अंधकार के राज्य से मसीह के राज्य में स्थानान्तरित कर दिए गए हैं (कुलु. 1:12–13), और वह इस बात को दर्शाने के लिए अत्यन्त सावधान रहता है कि दुष्ट परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं होंगे (1 कुर.6:9)।

तो परमेश्वर का राज्य, साधारण तौर पर ऐसे परिभाषित किया जाएगा कि यह परमेश्वर का यीशु द्वारा छुड़ाए गए लोगों पर छुटकारा दिलाने वाला राज, शासन, और अधिकार है।

## एक राज्य आये

द्वितीय, परमेश्वर का राज्य यहाँ है। जब यीशु ने पृथ्वी पर अपनी सेवा आरम्भ की तब उन्होंने एक अचम्भा करने वाला सन्देश प्रचार किया : "पश्चाताप करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है" (मत्ती 3:2)। वास्तव में, आप उसका अनुवाद ऐसे भी कर सकते हैं कि, "पश्चाताप करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य आ गया है!"

हम पहले ही देख चुके हैं कि यीशु इन शब्दों के द्वारा कैसे चौंकाने वाले दावे कर रहे हैं। यहूदी लोग कई शताब्दियों से राज्य के आगमन के लिए प्रतिक्षा, आशा और प्रार्थना कर रहे थे, उस दिन के लिए जब परमेश्वर का राज इस पृथ्वी पर स्थापित होगा और उसके लोग अन्त में दोषमुक्त साबित



होंगे। किन्तु अब यहाँ पर यीशु–जो कि नासरत का बढ़ई थे और अब शिक्षक बन गये थे–उनको यह बता रहे थे कि जिस दिन की वह प्रतिक्षा अब तक कर रहे थे वह अब वहाँ था।

केवल इतना ही नहीं किन्तु वह दावा कर रहे थे कि परमेश्वर के राज्य का उद्घाटन स्वंय *उसमें* हो गया है। इसलिए मत्ती 12:28 में जब फरीसी यीशु पर शैतान के नाम से दुष्ट आत्माओं को निकालने का दोष लगा रहे थे तो यीशु ने उन्हें फटकारा और एक आश्चर्य चकित करने वाला दावा किया : "परन्तु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दुष्टआत्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य आ पहुँचा है।" क्या आप देख रहे हैं कि वह क्या कह रहे हैं ? यह तो स्पष्ट है कि यीशु दुष्टआत्माओं को निकाल रहे *थे* लेकिन वह ऐसा परमेश्वर की आत्मा के द्वारा कर रहे थे। वह इस बात का दावा कर कर रहे थे कि अंतः परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को छुटकारा दिलाने की प्रतिज्ञा का काम आरम्भ हो गया है। परमेश्वर का राज्य अब आ गया था।

यह कितना अद्भुत विचार है। यीशु का देह धारण करना सृष्टिकर्ता की ओर से केवल एक दयापूर्ण भेंट करने से कहीं बढ़कर था। यह परमेश्वर का पाप, मृत्यु और विनाश के विरूद्ध सम्पूर्ण और अन्तिम पलटवार था जो कि इस संसार में तब प्रवेश किया जब आदम पाप गिरा।

नये नियम में आप यीशु के जीवन की कहानी में हर जगह युद्ध होते हुए देखेंगे। यीशु राजा जंगल में अकेले ही शैतान का सामना करने के लिए जाते हैं–वह शैतान जिसने अनेक वर्षों पूर्व आदम को परखा था और संसार को भ्रष्टाचार में फेंक दिया था–और शैतान को पूरी तरह से हरा देते हैं ! वह जन्म से अन्धे मनुष्य की ऑखों को छूते हैं और प्रथम बार ज्योति ऑखों में प्रवेश करती है। वह कब्र की काली उदासता में निहारते हैं और फिर पुकारते हैं "लाज़र बाहर आ !" और जैसे ही वह मृत व्यक्ति बाहर आता है मृत्यु मानवता के ऊपर से अपनी पकड़ को कमज़ोर होते हुए महसूस करती है।

और सबसे बढ़कर, निसंदेह, पाप की स्वंय तब पराजय हुई जब यीशु ने क्रूस पर पुकारा, "पूरा हुआ !" और मृत्यु की पकड़ अंतः तब पूर्ण रूप से विफल हुई जब स्वर्गदूत ने एक मुस्कुराहट के साथ कहा, मुझे निश्चय है कि–वह यहाँ नहीं है, पर जी उठा है, तुम जीवत को मरे हुओं में क्यों ढूँढ़ती हो (लूका 24:5–6) ? कदम–कदम, धीरे–धीरे, यीशु निर्णायक तौर पर पतन के प्रभाव को पीछे ढकेल रहे थे। इस संसार का वास्तविक राजा आ गया था, और जो कुछ भी उसके राज्य की स्थापना के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर रहे थे–पाप, मृत्यु, नरक, शैतान–उनके ऊपर निर्णायक विजय प्राप्त की जा रही थी।

इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के राज्य की बहुत सी आशीषें पहले ही हमारी हो चुकी हैं। तो यीशु अपने शिष्यों को बताते हैं कि वह उन्हें "दूसरा संतावना देने वाला" भेजेंगे, पवित्र आत्मा जो कि उनका मार्ग दर्शन करेगा, उनके पापों से कायल करेगा, और उन्हें पवित्र करेगा। उसी तरह, अब मसीही जानते हैं कि परमेश्वर के परिवार में गोद लिये जाना और उससे मेल होने का अर्थ क्या है। पौलुस यहाँ तक कहता है कि परमेश्वर की दृष्टि में, हम पहले ही मसीह के साथ उठाये गए हैं और उसके साथ विराजमान हैं (इफि. 2:6)।

यह एक अविश्वसनीय रूप से उत्साहित करने वाला सत्य है। किन्तु उसके साथ कुछ और भी है, कुछ उतना ही महत्वपूर्ण, जिसको हमें समझना है।

## एक राज्य जो अभी तक पूरा नहीं हुआ है

तीसरा, परमेश्वर का राज्य अभी तक पूर्ण नहीं हुआ है और जब तक राजा यीशु नहीं लौटेंगे तब तक वह पूर्ण नहीं होगा। यीशु मसीह ने दुष्टता की सामर्थ को उलटने के लिए जो कुछ भी किया उसके बाद भी उसने परमेश्वर के राज (प्रभुता) को पृथ्वी पर पूरी तरह और सम्पूर्णता के साथ स्थापित नहीं किया–कम से कम अभी तक नहीं। वह बलशाली पुरूष को बांधा तो गया



था किन्तु उसका विनाश नहीं किया गया। दुष्टता की पराजय तो हुई, परन्तु उसका अस्तित्व नहीं मिटाया गया और परमेश्वर के राज्य का उद्घाटन तो हुआ किन्तु सम्पूर्ण और अन्तिम समापन नहीं किया गया।

यीशु ने एक भविष्य के उस दिन के बारे में बात की है जब परमेश्वर का राज्य अंतः सम्पूर्णता के साथ आएगा। उस दिन उसने कहा कि स्वर्गदूत, "उसके राज्य में से ठोकर के कारणों तथा कुकर्मियों को एकत्रित करेंगें... .तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे" (मत्ती 13:41–43)। और वह आखिरी भोज पर एक ऐसे दिन की ओर देखते हैं जब वह अपने शिष्यों के साथ पुनः दाख का रस पिऐंगे : "परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि दाख का यह रस अब से लेकर उस दिन तक नहीं पीऊंगा, जब तक अपने पिता के राज्य में तुम्हारे साथ नया न पीऊं" (मत्ती 26:29)।

पौलुस भी लालसा के साथ भविष्य की ओर देखता है कि जब मृतकों का पुनरूत्थान अनन्तकाल में होगा (1 कुर० 15) और वह इफिसियों को बताता है कि पवित्र आत्मा की छाप उन पर पड़ चुकी है "वह हमारे उत्तराधिकार के बयाने के रूप में है *जब तक हम अपने उत्तराधिकार को न प्राप्त कर लें*" (इफि 1:4)। आगे चल कर वह कहता है कि परमेश्वर ने हमें बचाया है "जिससे कि *आने वाले युगों में* वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए" (इफि 2:7)। पतरस भी बात करता है एक "उद्धार के बारे में जो अन्तिम समय में प्रकट होने पर है" (1पत. 1:5), और इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को बताता है कि "वह पृथ्वी पर परदेशी और पराये हैं" (इब्रा. 11:13) और उन्हें बाट लगाना चाहिए "उस स्थिर नींव वाले नगर के लिए और जिसका रचने और बनाने वाला परमेश्वर है" (पद 10)।

मसीहियों के लिए महान आशा, जिस बात के लिए हम ललाहित रहते हैं और जिसकी ओर हम सामर्थ और उत्साह हेतु ताकते हैं, वो वह दिन है जिस दिन हमारा राजा बादलों पर विराजमान होकर आएगा और अपने

महिमामय राज्य की स्थापना करेगा, सम्पूर्णता के साथ हमेशा के लिए। वह महिमामयी क्षण तब होगा जब इस संसार में सब कुछ सही कर दिया जाएगा, जब न्याय की स्थापना अंतः होगी, दुष्टता का हमेशा के लिए विनाश होगा, और धार्मिकता हमेशा–हमेशा के लिए स्थापित की जाएगी। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है :

> देखो मैं नया
> आकाश और नई पृथ्वी को सृजता हूँ :
> और पहली बातें स्मरण न की जाएगी.....
> मैं यरूशलेम के कारण आनन्दित और अपनी प्रजा
> के कारण मैं हर्षित होऊँगा;
> उन में रोने का शब्द और चिल्लाने की आवाज फिर
> कभी सुनाई न पड़ेगी (यशायाह 65:17–19)

और भविष्यद्वकता हमें बताता है कि उस दिन,

> मेरे सम्पूर्ण पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुख देने वाला
> और न हानि पहुँचाने वाला होगा, क्योंकि पृथ्वी यहोवा के
> ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा समुद्र जल से भरा रहता
> है। (यशायाह 11:9)

जब मैं बालक था तब यह सोचता था कि एक मसीही की नियती यह है कि वह अनन्त काल में एक न समाप्त होने वाली मसीही सभा में हमेशा के लिए बिना देह के सम्मिलित होंगे। यह बहुत भयावह विचार था ! किन्तु वह विचार पूर्णतः गलत था। परमेश्वर अपने लोगों के लिए एक नये संसार की सृष्टि करने की मनसा रखता है जो कि पाप, मृत्यु और बिमारी से मुक्त होगी। युद्ध की समाप्ति होगी, अत्याचार बन्द होगा, और परमेश्वर अपने लोगों के साथ हमेशा तक वास करेगा। परमेश्वर के लोग पुनः कभी भी मृत्यु को न सहन करेंगे और पुनः कभी भी किसी कब्र के पास हमारी ऑखों में



आँसू न बहेंगे। पुनः कभी भी शोकित न होंगे, न चोटिल होंगे और न ही विलाप करेंगे। हम पुनः कभी भी घर के लिए ललाहित न होंगे। क्योंकि जैसे कि प्रकाशितवाक्य हमें बताता है कि परमेश्वर स्वंय हमारी आँखों से हर आँसुओ को पोछेगा, और हम अंतः उसके चेहरे को देखेंगे !

वास्तव में, इन सब बातों के प्रतिउत्तर में आप क्या कहेंगे ? मैं यह सोचता हूँ कि केवल एक बात : हे प्रभु यीशु, जल्दी आ !

मै हमेशा थोड़ा आश्चर्य करता हूँ जब मैं लोगों को इन सारी प्रतिज्ञाओं के बारे में बात करते देखता हूँ–नये आकाश और नई पृथ्वी, वह स्वर्गीय नगर जिसमें कुछ भी दुष्टता कभी प्रवेश नहीं करती, वह दुनिया जो कि मृत्यु, युद्ध और अत्याचार के बिना है, परमेश्वर के जी उठे (पुनरूत्थित) लोग उसके चेहरे के सामने हमेशा के लिए आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करते हुए–और फिर वे उन प्रतिज्ञाओं से ऊपर देखते हैं और कहते हैं कि "ठीक है, आइये अब हम इसको कर दें !"

सच्चाई तो यह है कि हम मनुष्य परमेश्वर के राज्य की स्थापना और परिपूर्णता लाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। इस संसार को बेहतर जगह बनाने के हमारे सबसे उत्तम–और वास्तव में अच्छे–प्रयासों के उपरान्त भी, बाईबल में जिस राज्य की प्रतिज्ञा की गई है वह तभी आएगा जब यीशु स्वंय लौटेंगे और उसको स्थापित करेगा।

कम से कम कुछ इन कारणों के लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण बात है। प्रथम, यह हमको एक गलत और अंतः धोखा देने वाले उस आशावाद से बचाता है कि हम इस पापमय संसार में आखिरकार क्या करने में सक्षम हैं। मसीही अवश्य ही समाज में कुछ बदलाव ला सकते हैं। यह इतिहास में ऐसा पहले भी हुआ है और इसमें मुझे कोई आशंका नहीं कि आज भी कई जगहों में ऐसा हो रहा है और भविष्य में पुनः ऐसा होगा। मसीहियों ने संसार में अत्यन्त भला कार्य किया है और अभी भी कर सकते हैं–ऐसे भले कार्य जो कि परमेश्वर और मसीह यीशु को संसार के सामने अच्छा नाम देते हैं।

परन्तु मेरा यह सोचना है कि बाइबल की कहानी की दिशा हमें इस बात को पहचानने के लिए बाध्य करती है कि जब तक मसीह का पुनः आगमन नहीं होगा, तब तक हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक विजय हमेशा कच्ची होगी और कदापि स्थायी नहीं हो सकती। मसीही लोग कभी भी परमेश्वर के राज्य को नहीं ला सकते हैं। केवल परमेश्वर ही स्वंय ऐसा कर सकता है। *वह स्वर्गीय यरूशलेम स्वर्ग से नीचे आता है;* उसका निर्माण नीचे भूमि से आरम्भ होकर ऊपर की ओर नहीं होता है।

और इससे भी बढ़कर, जब हम यह स्मरण रखते हैं कि परमेश्वर का राज्य तभी स्थापित होगा जब यीशु लौटेंगे तो यह हमारी आशा, हमारे स्नेह और हमारी लालसा को सही तरीके से स्वंय मसीह पर केन्द्रित करता है। बजाय इसके कि हम किसी मानव अधिकार या मानव प्रयास, अथवा मानव सामर्थ की ओर दृष्टि लगाएं या स्वंय के मेहनत से सब कुछ सही करने का प्रयास करें, हम स्वर्ग की ओर दृष्टि लगाते हैं और प्रेरित यूहन्ना के साथ पुकारते हैं, "हाँ प्रभु यीशु, आ !" उसके वापस आने के लिए हमारी लालसा बढ़ जाती है, उससे हमारी प्रार्थनायें और भी उत्साह में बढ़ जाती हैं और उसके प्रति हमारा प्रेम और गहरा हो जाता है। संक्षिप्त में, हमारी लालसायें और आशा सही तरीके तथा दृढ़ता पूर्वक से राज्य पर तो उतना केन्द्रित नहीं होती हैं जितना कि राज्य के राजा पर।

## राजा को प्रतिउत्तर

चौथा, परमेश्वर के राज्य में किसी का सम्मिलित होना राजा के प्रति उस व्यक्ति के प्रतिउत्तर पर सम्पूर्णतः से आधारित होता है। यीशु इस बारे में और अधिक स्पष्ट नहीं हो सकते थे। बार–बार वह किसी व्यक्ति को उसके एवं उसके समाचार के प्रति प्रतिउत्तर को एकमात्र निर्णायक बात ठहराते थे जिसके आधार पर उसके राज्य में सम्मिलित होना सम्भव था। उस धनी जवान शासक की कहानी के बारे में सोचिए। "अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ?" उस व्यक्ति ने पूछा। और अंतः यीशु का उत्तर



यह था कि "मेरे पीछे हो ले," जिसका उस व्यक्ति के लिए यह अर्थ था कि वह अपने स्वंय के धन सम्पति पर भरोसा करने से पलटकर यीशु पर विश्वास करे (मरकुस 10:17, 21)।

समय व समय यीशु कहता है कि परमेश्वर मानवता के बीच में एक स्पष्ट रेखा खींचेगा और उद्धार पाए हुए लोगों से उद्धार न पाये हुये लोगों को अलग करेगा। इन दोनों समूहों मे जो बात अन्तर लाती है, वह यह है कि इन दोनों का मसीह राजा के प्रति कैसा प्रतिउत्तर था। मत्ती 25 अध्याय में भेंड़ और बकरी की कहानी की मुख्य शिक्षा यही है। अंत में "मेरे पास आओ" और "मेरे से दूर हट जाओ" में अन्तर यह है कि प्रत्येक ने यीशु के प्रति कैसे प्रतिउत्तर दिया जब यीशु उसके "भाईयों" द्वारा जो कि उसके लोग हैं उनके सामने प्रस्तुत किया था।

और वास्तव में, कूस पर यीशु की मृत्यु ही के द्वारा यह सर्वप्रथम सम्भव हुआ है कि हम उसके लोग बन सकें। यही बात यीशु के विषय में अत्यन्त आश्चर्यचकित करने वाली है, केवल यह वह बात नहीं कि वह राजा था और उसने एक प्रेम और करूणा के राज्य का उद्घाटन किया। वास्तव में, यह बात कोई आश्चर्य की नहीं है; हर एक यहूदी जानता था कि ऐसा तो एक दिन होगा। यीशु के सुसमाचार के बारे में आश्चर्य की बात वास्तव में तो यह थी कि यह राजा अपने लोगों को बचाने हेतु *मर गया,* एंव यह मसीहा तो एक *कूसित* मसीहा निकला।

कई शताब्दियों से यहूदियों ने यह आशा लगाई थी कि एक मसीहा राजा आएगा और उनको छुड़ाएगा। उन्हें परमेश्वर के एक दुख उठाने वाले सेवक (यशायाह नबी द्वारा भविष्यवाद्वाणी किये गये) की भी आशा थी, और उन्हें कुछ धुंधली आस थी एक ईश्वरीय "मनुष्य के पुत्र" की जो कि युग के अन्त मे उपस्थित होगा (दानिय्येल)। किन्तु वह यह कभी भी नहीं समझ पाए कि यह तीनों जन अन्त में एक ही व्यक्ति में पाये जायेंगे ! किसी ने भी इन तीन धागों की लड़ियों को एक साथ नहीं देखा था–कम से कम जब तक यीशु नहीं आए।

यीशु ने न सिर्फ अपने आपको इज़राइल की मसीही आशाओं की पूर्ति बताया (अर्थात, राजा का), किन्तु निरन्तर अपने आप का वर्णन दानिय्येल 7 के "मनुष्य के पुत्र" के रूप में भी किया। इससे बढ़कर, यीशु ने कहा कि "मनुष्य का पुत्र बहुतों के लिए अपने जीवन को फिरौती के मूल्य के रूप में देने आया" (मरकुस 10:45), जो कि हमें यशायाह 53:10 के दुख उठाने वाले सेवक की ओर निश्चित रीति से संकेत करता है।

क्या आप देख रहे हैं कि यीशु क्या दावा कर रहे थे ? वह कह रहे थे कि उन्होंने सभी भूमिका–दाऊद की नाई मसीहा, यशायाह का दुख उठाने वाला सेवक और दानिय्येल के मनुष्य के पुत्र–को एक ही बार में स्वंय पूरा किया है ! यीशु ने "मनुष्य के पुत्र" के ईश्वरीय स्वभाव को लेकर, दूसरों के बदले दुख उठाने वाले सेवक के साथ जोड़ दिया, और अन्त में उस सब को अपने मसीहा के भूमिका के साथ समावेश कर दिया। जब यीशु ने यहूदी आशा के सभी धागों को जोड़ने का काम पूरा किया तब यह राजा यहूदियों के आशा के अनुरूप पृथ्वी के क्रान्तिकारी राजा से कहीं असंख्य गुना ज़्यादा बढ़ कर था। वह ईश्वरीय सेवक–राजा था, जो अपने लोगों के लिये मरे और दुख उठाए ताकि उनका उद्धार जीत सके, अपने पिता के सामने उनको धर्मी बनाए और उनको महिमा के साथ अपने राज्य में ले कर आए।

इन सब के प्रकाश में, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु अपने राज्य में प्रवेश के लिए सिर्फ यह शर्त रखते हैं कि क्या वह व्यक्ति पापों से पश्चाताप करता है और यीशु पर और उसके क्रूस पर पापों से छुड़ाने वाले कार्य पर भरोसा रखता है। जब यीशु "राज्य के सुसमाचार" की बात करते हैं तो उनका अर्थ सिर्फ यह नहीं है कि राज्य आ गया है। किन्तु उनका अर्थ यह है कि वह राज्य आ गया है *और* आप उसमें सम्मिलित हो सकते हैं यदि आप का मुझ राजा से विश्वास के द्वारा मेल हो जाए कि केवल मैं आपको आपके पापों से बचा सकता हूं।

इसलिए मसीह के राज्य का नागरिक होने का अर्थ मात्र यह नहीं है कि "राज्य के अनुसार जीवन जीना" या "यीशु के उदाहरण का पालन



करना" या फिर "यीशु की नाई जीवन जीना।" सत्य तो यह है कि एक व्यक्ति स्वंय को "यीशु का अनुयायी" अथवा "राज्य के अनुसार जीवन जीने वाला" कहला तो सकता है परन्तु फिर भी राज्य के बाहर हो सकता है। आप जितना चाहें यीशु के समान जी सकते हैं किन्तु जब तक आप क्रूसित राजा के निकट पश्चाताप और विश्वास में होकर नहीं आएंगे और अपने पापों के लिए एक सिद्ध बलिदान और अपने उद्धार के लिए एकमात्र आशा के रूप में केवल उस पर भरोसा नहीं करेंगे, तब तक न तो आप मसीही हैं और न ही उसके राज्य के नागरिक हैं।

मसीह के राज्य में सम्मिलित होने का तरीका है कि राजा के पास आना और न केवल उसको एक महान उदाहरण के रूप में मानना जो हमें एक उत्तम जीवन जीने का तरीका दिखाता है किन्तु नम्रता के साथ उस क्रूसित और जी उठे प्रभु पर भरोसा करना कि केवल वही हमें मृत्यु के दण्ड से बचा सकता है।

## राजा के लिये जीने की एक बुलाहट

पाँचवा, परमेश्वर के राज्य का नागरिक होने का अर्थ है राज्य के अनुसार जीवन जीना। रोमियों 6 में पौलुस मसीहियों को बुलाता है कि वह ये जानें कि उनको पाप के बंधन से छुड़ाकर परमेश्वर के राज्य में लाया गया है।

> इसलिए हम बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यु में सहभागी होकर उसके साथ गाड़े गए हैं, जिससे कि पिता की महिमा के द्वारा जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे हम भी जीवन की नई चाल चलें।
>
> क्योंकि यदि हम उसके साथ उसकी मृत्यु की समानता में एक हो गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी एक हो जाएंगे, यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, कि हमारा पाप

> का शरीर निष्क्रिय हो जाए, कि हम आगे को पाप के दास न रहें; क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूट कर निर्दोष ठहरा। अब यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हम विश्वास करते हैं कि उसके साथ जीवित भी रहेंगे, यह जानते हुए कि मसीह मृतकों में से जिलाया जाकर फिर कभी मरने का नहीं, न अब उस पर मृत्यु की प्रभुता है। क्योंकि जब वह मरा, तो पाप के प्रति सदा के लिए मर गया, परन्तु अब जो जीवित है, वह परमेश्वर के लिए जीवित है। इसी प्रकार तुम भी अपने आप को पाप के लिए मृतक परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो। (रोमियों 6:4–11)

जब हम विश्वास के द्वारा परमेश्वर के राज्य में लाए जाते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें एक नया जीवन देता है। हम एक नए राज्य के नागरिक बन जाते हैं और नये राजा की प्रजा बन जाते हैं। इस कारण से हमारी यह नई ज़िम्मेदारी है कि हम उस राजा की आज्ञा मानें और अपना जीवन ऐसे जियें जिससे कि उसका आदर हो। इसीलिए पौलुस कहता है :

> इसलिए पाप को अपने मरणहार शरीर में प्रभुता न करने दो, कि तुम उसकी लालसाओं को पूरा करो, और न अपने शरीर के अंगो को अधर्म के हथियार बनाकर पाप को सौंपो, परन्तु अपने आप को मृतकों में से जीवित जानकर अपने अंगो को धार्मिकता के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंप दो। (रोमियों 6:12–13)

जब तक मसीह लौट न आए हम जो उसके लोग हैं इस पापमय युग में जीयेगें और हमारा राजा हमें एक ऐसा जीवन जीने के लिए बुलाता है जो कि उस राज्य के योग्य है जिसमें उसने हमें बुलाया है (1 थिस्स. 2:12), और इस कुटिल और भ्रष्ट पीढ़ी के बीच में हमें "संसार में ज्योती बनकर चमकना है" (फिल. 2:15)। ऐसा कदापि नहीं है कि राज्य के अनुरूप



जीवन जीने के द्वारा राज्य में प्रवेश हो सकता है। बल्कि ऐसा है कि जब राजा पर विश्वास करने के द्वारा हम राज्य में प्रवेश करते हैं तो हम अपने आपको एक नये स्वामी, एक नये कानून, एक नये संविधान, एक नये जीवन के साथ पाते हैं–और इसलिए हम राज्य के अनुरूप जीवन व्यतीत करने की *अभिलाषा* आरम्भ करते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि इस युग में, राज्य का जीवन प्राथमिक तौर पर कलीसिया में पाया जाता है। क्या आपने कभी इसके बारे में सोचा है ? इस युग में कलीसिया है जहाँ परमेश्वर का राज्य प्रदर्शित किया जाता है। इफिसियों 3:10–11 देखिए :

> कि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो आकाश में हैं प्रकट किया जाए। यह उस अनन्त अभिप्राय के अनुसार हुआ जो उसने यीशु मसीह हमारे प्रभु में पूरा किया।

कलीसिया वह रणभूमि है जिसे परमेश्वर ने सबसे बढ़कर अपनी बुद्धि और सुसमाचार की महिमा को प्रदर्शित करने के लिए चुना है। जैसा कि कई लोगों ने पहले कहा है कि कलीसिया इस संसार में परमेश्वर के राज्य की सीमा चौकी है। यह कहना सही नहीं है कि कलीसिया ही परमेश्वर का राज्य *है*। जैसा हमने देखा है कि राज्य में तो उससे बढ़कर और भी कुछ है। किन्तु यह भी कहना सही है कि इस युग में कलीसिया ही *है* जहाँ पर हम परमेश्वर के राज्य को प्रकट होते देखते हैं।

क्या आप देखना चाहते हैं कि परमेश्वर का राज्य कैसे दिखता है, कम से कम इससे पहले कि वह सम्पूर्णता में आये। क्या आप राज्य के जीवन को इस युग में सक्रिय देखना चाहते हैं ? तो आप कलीसिया को देखिये। यह है जहाँ पर परमेश्वर की बुद्धि प्रदर्शित कि जाती है, जहाँ पर वह लोग जो पहले परमेश्वर से दूर थे अब पास लाए गए हैं और यीशु के

कारण परमेश्वर से उनका मेल हो गया है और जहाँ पर परमेश्वर का आत्मा लोगों के जीवनों को पुनः बनाने और निर्माण करने के काम में लगा हुआ है। यहाँ पर परमेश्वर के लोग सीखते हैं एक दूसरे से प्रेम करना, एक दूसरे के बोझ और दुखों को उठाना, एक साथ रोना और आनन्द मनाना और एक दूसरे को उत्तरदायी ठहराना। और हाँ यह सिद्ध नहीं है, किन्तु कलीसिया ही है जहाँ राज्य के अनुरूप जीवन जीया जाता है और उस संसार के सामने प्रदर्शित किया जाता है जिसे उद्धार की अत्यन्त आवश्यकता है।

### *अन्धकार में भी बढ़ते रहना*

निसंदेह, इस संसार को बचाए जाने की यह घोर आवश्यकता ही है जो कि मसीह के राज्य के नागरिक के समान इस युग में जीना इतना कठिन बना देता है। संसार के लिए मसीही खतरे का कारण हैं और यह हमेशा से ही ऐसा रहा है। आरम्भिक कलीसिया के दिनों में यह उद्घोषणा कि "यीशु प्रभु है !" देशद्रोह और सम्राट के अधिकार का घोर तिरस्कार के समान था एवं ऐसा कहने पर उन्होंने मसीहियों को जान से मार दिया। आजकल यह उद्घोषणा कि "यीशु प्रभु है" बहुवाद का असहनशील और कट्टर तिरस्कार के रूप में माना जाता है और संसार इसके लिए हमारी निन्दा करता है।

पवित्रशास्त्र में कभी भी राज्य के जीवन को–और न ही राजा के प्रति विश्वासयोग्य रहने के संघर्ष को–आसान नहीं कहा गया है। यीशु ने यह प्रतिज्ञा की थी कि उसके शिष्य सताव का सामना करेंगे, उनसे लोग घृणा करेंगे, ठट्ठा करेंगे और जान से भी मार डालेंगे। लेकिन उन सबके मध्य में भी हम मसीही लोग आगे बढ़ते जाते हैं क्योंकि हमको ज्ञात है कि परमेश्वर की उपस्थिति में हमारे लिए एक उत्तराधिकार रखा है जो कि हमारी कल्पना से बाहर है।

जे.आर.आर. टोलकन की आखिरी पुस्तक की महान कथा *द लार्ड आफ द रिंगस*, में कहानी के नायक अपनी यात्रा के सबसे अन्धकारमय हिस्से में आते हैं। उन्होंने हज़ारो मील की यात्रा की है और अंतः उस दुष्ट



भूमि पर पहुँचे जो की उनकी मंज़िल थी किन्तु कुछ कारणों की वजह से ऐसा लग रहा था कि अब सब कुछ खो गया है। किन्तु सबसे अन्धकारमय क्षण में सैम जो कि एक नायक है, काले आकाश की ओर देखता है। टोलकन वहाँ पर यह लिखते हैं :

> पश्चिम में पर्वतों के कहीं ऊपर, रात्रि–आकाश अभी भी धुँधला और हल्का था। वहाँ बादलों के बीच से झाँकता हुआ दूर पहाडियों के पीछे आसमानों में ऊपर, सैम ने एक सफेद तारे को कुछ क्षण के लिए चमकते हुए देखा। उसकी सुन्दरता ने उसका दिल चुरा लिया, जब उसने उस त्यागी हुई भूमी से बाहर की ओर देखा, तब उसके पास आशा लौट आयी। क्योंकि एक भाले के समान, स्पष्ट और ठण्डे विचार ने उसको भेदा कि अन्त में वह छाया एक छोटी और अस्थायी वस्तु है : फिर वहाँ ज्योति थी और ऐसी ऊँची सुन्दरता जो हमेशा उसके पहुँच से बाहर थी।

यह क्षण पूरी कहानी में मुझे अत्यन्त पसन्द है क्योंकि ठीक वहीं पर टोलकन, जो कि स्वयं यीशु पर भरोसा रखते हैं हमें उस तरफ इशारा करते हैं जहाँ से हम अन्धकार में आगे बढ़ने के लिए हिम्मत पाते हैं। वह आशा से प्राप्त होता है। यह हमें उस ज्ञान के द्वारा प्राप्त होता है कि हमारी वर्तमान की पीड़ा वास्तव में थोड़ी और क्षण भंगुर है। और जैसा कि पौलुस ने कहा, वे तो वास्तव में उस महिमा से तुलना करने के योग्य नहीं है जो कि हमारे राजा के लौटने पर हममें प्रगट होगी।

## अध्याय सात

# क्रूस को केन्द्र में रखना

जॉन बनयन की *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस* में, कहानी के नायक मसीही ने अपने आप को रूढ़ीवादी और पाखण्डी नाम के दो संदिग्ध व्यक्तियों से बात करते हुए पाया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि मसीही के समान वह भी स्वर्गीय नगर के मार्ग पर चल रहे हैं, और उनको निश्चय था कि वह अपने गंतव्य पर पहुँच जाएँगे क्योंकि उनके देश से अनेक लोग इस मार्ग से पहले जा चुके हैं।

और हाँ, उनके नाम तो स्पष्ट कर देते हैं कि रूढ़ीवादी और पाखण्डी उस नगर तक बिलकुल नहीं पहुँच पाएँगे।

पहली बार जब मसीही उन दोनों व्यक्तियों को देखता है तो वे उस दीवार के ऊपर कूदने का प्रयास कर रहे थे जो कि उस सकरे मार्ग से लगी हुई थी जिस पर मसीही चल रहा था। वह तो यह जान गया कि यह समस्या की बात है क्योंकि वह जानता था कि सकरे मार्ग में जाने का सही रास्ता छोटे फाटक से ही है जो कि इस कहानी में क्रूसित मसीह पर पश्चाताप और विश्वास को चिन्हित करती है।

मसीही, जो कि किसी विषय पर सीधी बात करने से नहीं डरता था, इन दोनों व्यक्तियों पर इस मामले में दबाब डालते हुए पूछता है : "आपने फाटक से क्यों नहीं प्रवेश किया ?" उन व्यक्तियों ने तुरन्त समझाया कि उनके देश के लोग सोचते हैं कि फाटक बहुत दूर है और इसलिए उन्होंने बहुत पहले ही निर्णय किया था कि वह "एक छोटा रास्ता निकालेंगे"। और इसके अलावा उन्होंने यह तर्क किया कि,

> यदि हम मार्ग पर आ जाएँ, तो इससे कोई फर्क तो नहीं पड़ता कि हम कैसे अन्दर आए हैं ? अगर हम भीतर हैं, तो हम भीतर हैं। आप मार्ग पर हैं, और आपने फाटक से प्रवेश किया; हम मार्ग पर हैं, और हम दीवार चढ़ करके आए हैं। तो आप हमसे कैसे बेहतर हैं ?



मसीही ने उन व्यक्तियों को चेतावनी दी कि नगर के प्रभु ने यह आज्ञा दी थी कि प्रत्येक जो स्वर्गीय नगर में प्रवेश करे, सकरे मार्ग पर फाटक के द्वारा ही प्रवेश करे। और फिर उसने उन्हें एक चर्म पत्र दिखाया जो उसे फाटक पर प्रदान किया गया था, और जिसको उसे नगर के द्वार पर प्रवेश प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत करना होगा। मसीही ने कहा कि "मैं कल्पना करता हूँ कि यह आपके पास नहीं होगा क्योंकि आपने फाटक से प्रवेश नहीं किया है।"

बनयन का अभिप्राय यह दर्शाने को था कि उद्धार का मार्ग केवल छोटे फाटक ही से है–अर्थात पश्चाताप और विश्वास के द्वारा। केवल इतना पर्याप्त नहीं है कि हम मसीही जीवन के मार्ग पर यात्रा करें। यदि कोई व्यक्ति उस फाटक से प्रवेश नहीं करता है तो वह वास्तव में मसीही नहीं है।

### *एक बड़ा, और उपयुक्त सुसमाचार ?*

यह तो एक पुरानी कहानी है, किन्तु बनयन तो एक अत्यन्त पुरानी बात रख रहे थे। समय के आरम्भ से ही लोग अपने आपको कई प्रकार से बचाने का प्रयास करते आ रहे हैं, उन तरीकों से जो *उनको* स्वंय समझ में आते हैं, बजाए कि परमेश्वर की बात मानने और उसके आधीन होने के। वह यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि कैसे उद्धार को कार्यावन्त करें–कैसे *सुसमाचार* को कार्यावन्त करें–उस छोटे फाटक के बिना अर्थात यीशु मसीह के क्रूस के बिना।

यह बात हमारे समय में कुछ कम सत्य नहीं है। बल्कि मेरा यह

मानना है कि मसीह की देह आज जिन बड़े खतरों का सामना कर रही है उनमें से एक यह परिक्षा है कि सुसमाचार पर इस प्रकार से पुनः विचार करना और उसको ऐसे अभिव्यक्त करना कि सुसमाचार का केन्द्र क्रूस पर पापियों के बदले मसीह की मृत्यु की जगह पर कुछ और बन जाता है।

ऐसा करने के लिए दबाव बहुत बड़ा है और ऐसा प्रतीत होता है कि यह कई दिशाओं से आ रहा है। इस दबाव का एक मुख्य सोत्र तो यह बढ़ता हुआ आम विचार है कि मसीह की मृत्यु के द्वारा क्षमा प्राप्ति का सुसमाचार किसी तरह से पर्याप्त "बड़ा" नहीं है–कि यह ऐसी समस्याओं को सम्बोधित नहीं करता है जैसे कि युद्ध, अत्याचार, गरीबी और अन्याय। और वास्तव में जैसे कि एक लेखक ने लिखा है कि जब संसार की वास्तविक समस्याओं की बात करते है तो सुसमाचार कोई विशेष महत्व नहीं रखता है।

मेरा तो यह मानना है कि यह दोष पूर्णताः गलत है। यह सारी समस्याऐं मूलतः मानव पाप का ही परिणाम हैं और यह मूर्खता पूर्ण सोच होगी कि हम थोड़ी बहुत सक्रियता और थोड़ी चिन्ता और थोड़ा "जीना जैसे यीशु जीता था," के द्वारा इन सारी समस्याओं का समाधान कर लेंगे। नहीं, केवल क्रूस ही है जो कि पापों से हमेशा–हमेशा के लिए व्यवहार करता है और क्रूस ही है जो कि मनुष्य के लिए यह सम्भव करता है कि वह परमेश्वर के सिद्ध राज्य में सम्मिलित हो सके।

फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि एक "बड़े" और "उपयुक्त" सुसमाचार को खोजने के दबाव ने बहुत से लोगों को जकड़ लिया है। अनेकों बार, कई पुस्तकों में हम सुसमाचार का ऐसा वर्णन पाते हैं जो कि क्रूस को अन्त में दूसरे स्थान पर छोड़ देते हैं। क्रूस के स्थान पर ऐसी उद्घोषणाऐं होती हैं कि सुसमाचार के हृदय के केन्द्र में हैं उक्त बाते जैसे कि : परमेश्वर संसार का पुनः निर्माण कर रहा है अथवा उसने एक ऐसे राज्य की प्रतिज्ञा की है जिसमें वह सब कुछ ठीक कर देगा, अथवा वह हमको पुकार रहा है कि हम उसके साथ



जुड़कर अपनी सभ्यता में बदलाव लाएं। बारीकियाँ चाहे जो भी हो, परिणाम यह है कि बार–बार पापियों के स्थान पर यीशु की मृत्यु को हल्का माना जाता है, किनारे कर दिया जाता है और यहाँ तक कभी–कभी (जान–बूझ कर) अनदेखा कर दिया जाता है।

### *तीन अन्य सुसमाचार*

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि सुसमाचार का विकेन्द्रीकरण अनेक प्रकार से सुसमाचारीय विश्वासियों में बहुत धीरे से हो रहा है। कुछ ही वर्षों में अनेक "बड़े और उत्तम" सुसमाचारों की वकालत की गई है और इन सबके पीछे एक बड़ी भीड़ जाते प्रतीत होती है। जब तक यह "बड़े" सुसमाचार अपने केन्द्र में क्रूस के बदले कुछ और लगाएंगे, तो मैं यह बात कहूँगा की यह तो वास्तव में सुसमाचार से कम हैं अथवा कोई सुसमाचार हैं ही नहीं। मुझे ऐसे तीन उदाहरण देने दें।

### *"यीशु प्रभु है" सुसमाचार नहीं है*

इन "बड़े" सुसमाचारों में एक अत्यन्त प्रसिद्ध दावा यह है कि सुसमाचार केवल यह उद्घोषणा है कि "यीशु प्रभु है।" ठीक उसी तरह से जैसे कि एक सन्देशवाहक नगर में प्रवेश करता है और घोषणा करता है कि "कैसर प्रभु है," मसीहियों को भी इस शुभ सन्देश को सुनाना है कि यीशु ही राज करता है और वह सम्पूर्ण संसार को अपने से मेल मिलाप कराने की प्रक्रिया में लगा है एवं उसको अपने शासन के नीचे ला रहा है।

अवश्य ही, यह उद्घोषणा कि "यीशु प्रभु है" सम्पूर्णतः और वैभवशाली तरीके से सत्य है ! और यीशु की प्रभुता की उद्घोषणा सुसमाचार के सन्देश का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए पौलुस रोमियों 10:9 में कहता है कि जो व्यक्ति अंगीकार करेगा कि "यीशु प्रभु है" वह बच जाएगा और 1 कुरिन्थियों 12:3 में वह कहता है कि केवल परमेश्वर की आत्मा ही के द्वारा कोई इस सत्य को अंगीकार कर सकता है।

किन्तु निश्चित रूप से यह कहना सही नहीं होगा कि यह उद्घोषणा कि "यीशु प्रभु है" मसीही शुभ सन्देश का सम्पूर्ण सार और विषय वस्तु है। हम पहले ही देख चुके हैं कि आरंम्भिक मसीहियों ने जब सुसमाचार का प्रचार किया था तो उन्होंने इससे बढ़कर और बहुत कुछ कहा था। हाँ, प्रेरितों 2 में पतरस ने प्रचार किया, "इसलिए इस्राएल का सम्पूर्ण घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसे प्रभु और 'मसीह' दोनो ही ठहराया–इसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया" (पद 36)। किन्तु यीशु की प्रभुता के *अर्थ* का सम्पूर्ण स्पष्टीकरण उस कथन के पहले और बाद में पाया जाता है। इसका यह अर्थ है कि यह प्रभु क्रूसित किया गया, गाड़ा गया और जी उठा। और इसका यह भी अर्थ है कि उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान ने सबसे बढ़कर, उन लोगों के लिए पापों की क्षमा को पूरा किया जो पश्चाताप और उस पर विश्वास करेंगे। पतरस ने सिर्फ यह उद्घोषणा नहीं की कि यीशु प्रभु है। उसने यह उद्घोषणा की कि इस प्रभु ने अपने लोगो के बदले में कार्य किया है उनको परमेश्वर के उस प्रकोप से बचाने लिए जो कि उनके पापों के विरूद्ध है।

यह तो अब तक प्रत्यक्ष हो जाना चाहिये कि केवल यह कहना कि "यीशु प्रभु है" वास्तव में शुभ सन्देश है ही नहीं अगर हम यह न समझाँए कि कैसे यीशु न सिर्फ प्रभु है किन्तु उद्धारकर्ता भी है। प्रभुत्व का तात्पर्य है कि न्याय करने का अधिकार और हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर दुष्टता का न्याय करने की मनसा रखता है। इसलिए एक पापी के लिए जो कि परमेश्वर और उसके मसीह के विरूद्ध विद्रोह में है, के लिए यह उद्घोषणा कि यीशु प्रभु बन गया है एक अत्यन्त बुरा समाचार है। इसका अर्थ यह है कि आपके शत्रु ने सिंहासन को जीत लिया है और अब वह उसके विरूद्ध में आपके विद्रोह के कारण आपका न्याय करने वाला है।

इस समाचार को शुभ होने के लिए न केवल भयावह होने के लिए इसमें एक ऐसा मार्ग सम्मिलित होना चाहिए जिससे कि आपके विद्रोह की क्षमा मिल सके। एक ऐसा मार्ग जिससे कि आपका उससे मेल मिलाप हो



सके जिसे प्रभु बनाया गया है और बिल्कुल ऐसा ही हम नये नियम में देखते हैं–सिर्फ यह उद्धोषणा नहीं कि यीशु प्रभु है किन्तु यह प्रभु यीशु इसलिये क्रूसित हुआ कि पापी क्षमा पाएँ और उसके आने वाले राज्य के आनन्द में सम्मिलित किये जाएं। उससे हटकर यह उद्घोषना कि "यीशु प्रभु है" सिवाय एक मृत्यु दण्ड के कुछ और नहीं है।

## सृष्टि–पतन–छुटकारा–सम्पूर्णता सुसमाचार नहीं है

अनेक मसीहियों ने बाइबल की कहानी को इन चार शब्दों के प्रयोग के द्वारा रेखांकित किया है–*सृष्टि, पतन, छुटकारा, सम्पूर्णता।*

वास्तव में तो यह रूपरेखा बाइबल की मुख्य कहानी का सार बताने का अच्छा तरीका है। परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की, मनुष्य ने पाप किया, परमेश्वर ने अपने लिए लोगों को छुडाने के लिए मसीह यीशु में होकर कार्य किया और उसके बाद उसके महिमामय राज्य के अन्तिम सम्पूर्णता के साथ इतिहास का अन्त होगा। उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक बाइबल के आधारभूत कहानी को याद रखने का यह एक अच्छा तरीका है। वास्तव में जब आप इसे सही तरीके से समझते हैं तथा अभिव्यक्त करते हैं तो सृष्टि–पतन–छुटकारा–सम्पूर्णता की रूपरेखा बाइबल के सुसमाचार का विश्वासयोग्य प्रस्तुति के लिए एक विश्वसनीय ढ़ाँचा उपलब्ध कराता है।

किन्तु समस्या यह है कि कुछ लोगों के द्वारा सृष्टि–पतन–छुटकारा–सम्पूर्णता की रूपरेखा का सुसमाचार में क्रूस के बजाय संसार को नया बनाने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर ज़ोर देने का गलत प्रयोग किया गया है। इसलिए सृष्टि–पतन–छुटकारा–सम्पूर्णता के "सुसमाचार" को अकसर इस तरह से प्रस्तुत किया जाता हैः

> सुसमाचार यह सन्देश है कि आदि में परमेश्वर ने संसार की और सब कुछ जो उसमें है की सृष्टि की। आरम्भ में सब कुछ

बहुत अच्छा था किन्तु मनुष्यों ने परमेश्वर के राज्य के विरोध में विद्रोह किया और संसार को अव्यवस्था में डाल दिया। मनुष्यों और परमेश्वर के बीच में सम्बंध टूट गया, और मनुष्यों के सबन्ध आपस में एक दूसरे से, स्वंय से, और अपने संसार से टूट गए। किन्तु पतन के बाद परमेश्वर ने एक राजा को भेजने का वादा किया जो कि लोगों को अपने लिए छुड़ाएगा और सृष्टि का परमेश्वर से पुनः मेल कराएगा। उस प्रतिज्ञा का पूर्ण होने का आरम्भ यीशु मसीह के आगमन के साथ हो गया किन्तु वह अंतः पूर्ण या परिपूर्ण तब होगा जब राजा यीशु लौटेगा।

निसन्देह प्रत्येक बात इस खण्ड में सही है। किन्तु जो मैंने यहाँ लिखा है वह सुसमाचार नहीं है। जिस तरह से वह उद्घोषणा कि "यीशु प्रभु है" शुभ सन्देश नहीं है जब तक कि परमेश्वर के विरोध में आपके विद्रोह की क्षमा प्राप्ति का कोई मार्ग न हो तो इसलिए यह तथ्य कि परमेश्वर इस संसार का पुनः निर्माण कर रहा है तब तक शुभ सन्देश नहीं है जब तक आप उसमें सम्मिलित नहीं हैं।

निसन्देह सृष्टि–पतन–छुटकारा–सम्पूर्णता की रूपरेखा को मसीहत के शुभ सन्देश को समझाने के लिए उपयोग करना बिल्कुल ठीक तरीका है। बल्कि "सृष्टि" और "पतन" की श्रेणियाँ हमारे "परमेश्वर" और "मनुष्य" की श्रेणियों के लगभग समान हैं किन्तु मुख्य बात तो आती है "छुटकारे" की श्रेणी के समय, यहाँ पर सुसमाचार का सत्य के साथ प्रचार करने के लिए हमें यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान एवं वह प्रतिउत्तर जो परमेश्वर पापियों से चाहता है को ध्यान से समझाना चाहिए। यदि हम केवल यह कहें कि परमेश्वर एक लोगों को छुड़ा रहा है और दुनिया का पुनः निमार्ण कर रहा है किन्तु यह न कहें कि *वह यह कैसे कर रहा है* (यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा) और कैसे *एक व्यक्ति उस छुटकारे में सम्मिलित हो सकता है* (पाप से पश्चाताप और यीशु पर विश्वास करने के द्वारा) तब तक



हमने सुसमाचार का प्रचार नहीं किया है। हमने सिर्फ बाइबल की कथा को बड़ी रूपरेखा में बता दिया है और पापियों को सिर्फ बाहर से भीतर झाकने के लिए छोड़ दिया है।

## सामाजिक रूपान्तरण सुसमाचार नहीं है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मसीहियों के कार्य के द्वारा समाज में बदलाव के विचार ने सुसमाचारीय लोगों के मस्तिष्क को अधिकार में कर लिया है। मैं यह सोचता हूँ कि यह एक भला लक्ष्य है और मैं यह भी सोचता हूँ कि समाज में दुष्टता का प्रतिरोध का प्रयास चाहे व्यक्तिगत अथवा संगठित रूप से करना वचन पर आधारित है। पौलुस कहता है कि "सब के साथ भलाई करें, विशेष कर विश्वासी भाईयों के साथ" (गलातियों 6:10)। यीशु हमें बताते हैं कि हमें अपने पड़ोसियों की चिन्ता करना है जिसमें बाहर वाले भी सम्मिलित हैं (लूका 10:25–37)। और वह हमसे कहता है "तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सम्मुख इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है महिमा करें।" (मत्ती 5:16)

अनेक रूपान्तरणकार इससे भी आगे बढ़ जाते है और "समाज के छुटकारे" का आदेश बाइबल की कथा के ढ़ाचे में ढूंढते हैं। उनका यह तर्क है कि यदि परमेश्वर संसार को पुनः निर्मित करने के कार्य में है तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उसके साथ उस कार्य में जुड़ जाएँ, राज्य के निर्माणकार्य के लिए सामग्री को जमा करें और अपने पड़ोस, अपने शहर, अपने देश और अपने संसार में हमें परमेश्वर के राज्य की स्थापना करने के लिए सार्थक कदम उठाने चाहिए। वे कहते हैं कि "हमें वह करना चाहिए जो हम परमेश्वर को करते हुए देखते हैं।"

मै अपने विचारों को स्पष्ट करना चाहता हूँ। मुझे सामाजिक रूपान्तरण विचारों से वचन और धर्मविज्ञान पर आधारित कुछ गम्भीर आपत्ति है। मैं इस बात से बिल्कुल सहमत नहीं हूँ कि वचन सामाजिक रूपान्तरण के प्रयासों को इस तरह से प्राथमिक स्थान देता है जैसे की कई रूपान्तरणकारों

कि उत्पत्ति में जो सामाजिक आदेश दिया गया है वह परमेश्वर के लोगों को ही दिया गया है; मैं यह सोचता हूँ कि यह सारे मनुष्यों को दिया गया है। मैं यह भी नहीं सोचता हूँ कि मानव सभ्यता की सामान्य दिशा चाहे वह वचन में या इतिहास में है, ईश्वर की दिशा की ओर नहीं है। बल्कि मैं सोचता हूँ कि मोटे तौर पर सम्पूर्ण मानव सभ्यता का रास्ता न्याय की दिशा में है लेकिन प्रत्येक जन का नहीं, (देखिए प्रकाशितवाक्य 17–19)। तो मैं यह सोचता हूँ कि कई रूपान्तरणकारों का "दुनिया को बदलने" की सम्भावना का आशावाद गुमराह करने वाली बात है और इसलिए निरूत्साहित करने वाली बात प्रमाणित होगी।

खैर यह सब तो एक बड़ा वचन एवं धर्मविज्ञान पर आधारित विचार विमर्श का विषय है और यहाँ पर यह मेरी मुख्य चिन्ता का विषय नहीं है। वास्तव में मैं यह सोचता हूँ कि एक समर्पित रूपान्तरणकार होना सम्भव है और उसके साथ ही यीशु के क्रूस को बाइबल की कथा और शुभ सन्देश के केन्द्र में रखने के लिए भी समर्पित भी रहना। आखिरकार, परमेश्वर रूपान्तरण को सम्भव करने के लिए अपने *क्षमा प्राप्त* और *छुटकारा प्राप्त* लोगों का ही उपयोग करेगा और क्षमा एंव छुटकारा केवल क्रूस के ही द्वारा होता है।

किन्तु मेरी मुख्य चिन्ता का विषय कुछ और है और मेरी आशा है कि मेरे सुसमाचारीय रूपान्तरणकार मित्र मुझसे पूर्णतः सहमत होंगे। वह यह है कि अकसर कुछ रूपान्तरणकारों के मध्य में समाज का छुटकारा धीरे से एक बड़ी प्रतिज्ञा और सुसमाचार का मुख्य विषय बन जाता है–जिसका अर्थ यह है कि क्रूस जान बूझकर या जान बूझकर नहीं, उस केन्द्रिय स्थान से हट जाता है। ऐसा आप एक पुस्तक के बाद दूसरी पुस्तक में देख सकते हैं जो कि सामाजिक रूपान्तरण पर अत्यधिक बल देने की बात करते हैं। सबसे अधिक उत्साह और आनन्द एक बदले हुए समाज की प्रतिज्ञा से दहकता है बजाए कि क्रूस पर यीशु के कार्य से। लोगों से सबसे अत्यधिक उत्साहजनक निवेदन परमेश्वर के साथ उसके संसार को बदलने के कार्य में जुड़ने के लिए किए जाते हैं बजाए कि पश्चाताप करने और यीशु पर



विश्वास करने के लिए। कहा जाता है कि बाइबल की कहानी यीशु की दूसरों के बदले मृत्यु के बजाए संसार के पुनः निर्माण पर केन्द्रित है।

और उस प्रकिया में मसीहित अनुग्रह और विश्वास के बारे में कम, किन्तु "इस तरह जियो और हम संसार बदल देंगे" जैसे एक तुच्छ धर्म के समान अधिक हो जाता है। यह मसीहत नहीं है; यह तो सिर्फ तुच्छ नैतिकवाद है।

## *एक ठोकर का कारण और मूर्खता*

अन्त में, मैं यह सन्देह करता हूँ कि क्रूस को सुसमाचार के केन्द्र से हटाने की तीव्र इच्छा उस खुले तथ्य के कारण होता है कि संसार तो क्रूस को नहीं पसन्द करता है। या तो वह यह सोचते हैं कि वह कोई परी कथा है या फिर दुष्टतापूर्ण झूठ। वास्तव में तो हमें इससे चकित नहीं होना चाहिए। पौलुस ने हमें बता दिया था कि ऐसा होगा। उसने कहा कि क्रूस की कथा कुछ के लिए ठोकर का कारण और बाकी लोगों के लिए मूर्खता होगी !

और उस पर इस तथ्य को जोड़ दीजिए कि हम वास्तव में *चाहते हैं* कि संसार सुसमाचार की ओर आकर्षित हो और फिर आप मसीहियों पर एक बड़ा दबाव बनाते हैं कि वह एक ऐसा मार्ग खोजें, कि उन्हें "खूनी क्रूस के धर्म" के बारे में अत्यधिक वार्तालाप न करना पड़े। आखिरकार हम चाहते हैं कि संसार सुसमाचार को ग्रहण करे न की उस पर हँसे, सही बात है कि नहीं ?

किन्तु वास्तव में हमे तो इसका सामना करना चाहिए। क्रूस का सन्देश हमारे आसपास के लोगों को मूर्खतापूर्ण बात सुनायी देगी। यह हम मसीहियों को मूर्ख जैसा ज्ञात कराएगा और निश्चित रूप से गैर–मसीहियों से सम्बन्ध स्थापित और उनको यह साबित करने के हमारे प्रयासों को नुकसान पहुँचाएगा कि हम अन्य व्यक्ति के समान भले अथवा हानि रहित हैं। संसार मसीही लोगों के बारे में हमेशा तब तक भला सोच सकता है–ठीक उस क्षण तक जब का कहना है, यह कई कारणों से है। पहली बात, मैं

नहीं मानता  वह कूसित मनुष्य द्वारा उद्धार की बात को आरम्भ न करें। और ठीक उसी क्षण वह भलापन गायब हो जाता है चाहे आपने जितनी ही मेहनत से उसे संजोय रखा हो।

यहाँ तक, वचन यह स्पष्ट करता है कि सुसमाचार के केन्द्र में कूस को *अवश्य* बना रहना चाहिए। हम उसको किनारे नहीं हटा सकते हैं और न ही हम कूस को किसी अन्य सत्य से शुभ सन्देश के हृदय, केन्द्र और नोक के रूप में स्थानान्तरित कर सकते हैं। ऐसा करने का तात्पर्य होगा कि संसार को ऐसी वस्तु प्रस्तुत करना जो उद्धार नहीं कर सकती और यह इसलिए शुभ संदेश है ही नहीं।

बाइबल तो वास्तव में हमें स्पष्ट निर्देश देती है कि कूस को सुसमाचार के केन्द्र से हटाने के लिए हमें किसी भी दबाव के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करना चाहिये। हमें उसका प्रतिरोध करना चाहिए। देखिए, पौलुस इस बारे में 1 कुरिन्थियों में क्या कहता है। उसको मालूम था कि कूस का सन्देश उसके आस–पास के लोगों को पागलपन सा जान पड़ता है एवं वह उनके नथनों में सड़ी बदबू के समान होगा और उसको मालूम था कि वह सुसमाचार को इस कारण तिरस्कार करेंगे। किन्तु उस निश्चित अस्वीकृति का सामना करते हुए भी उसने कहा कि "हम कूस पर चढ़ाए गए मसीह का प्रचार करते है" (1 कुरिन्थियों 1:23)। वास्तव में उसने ठाना कि "तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन कूस पर चढ़ाए गए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानू" (1 कुरिन्थियों 2:2)। वह इसलिए क्योंकि जैसे कि वह पुस्तक के अन्त में लिखता है, यह तथ्य कि "यीशु वचन के अनुसार हमारे पापों के लिए मरा" केवल महत्वपूर्ण ही नहीं था और न ही केवल *अत्यन्त* महत्वपूर्ण किन्तु वह "सबसे मुख्य" अथवा प्रथम महत्व का है (1 कुरिन्थियों 15:3)।

और यदि इसके द्वारा संसार की निन्दा हमारे ऊपर आती है ? यदि लोग उस सुसमाचार के प्रति अच्छा प्रतिउत्तर देते हैं जो कि संसार के



नवीनीकरण की ओर झुका है बजाए इसके कि पापियों के बदले यीशु की मृत्यु की ओर ? यदि लोग सुसमाचार पर हँसते हैं जो कि कूस पर मरने वाले पुरूष के बारे में है ? पौलुस कहता है कि ऐसा होने दो, मैं कूस का प्रचार कर रहा हूँ। वे यह सोचेंगे कि यह हास्याप्रद है; वे यह भी सोच सकते हैं कि यह मूर्खता है। किन्तु मैं जानता हूँ, "कि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से अधिक ज्ञानवान है" (1 कुरिन्थियों 1:25)।

पौलुस ने इस बात का निश्चय किया कि जिस सुसमाचार का उसने प्रचार किया उसका केन्द्रिय बिन्दु कूस रहे, और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। यदि हम किसी अन्य बात को केन्द्र बनने देंगे तो हम लगभग इस तरह की बात करेंगे, "आइये, मैं आपकी सहायता इस ऊंची दीवार से कूदने में करता हूँ। मुझ पर भरोसा कीजिए। आप ठीक ठाक रहेंगे।"

## अध्याय आठ

# सुसमाचार की सामर्थ

**कॉलेज से स्नातक** होने से पहले मेरे दो घनिष्ट मित्रों और मैंने पूर्वी टैक्सस में अपने गृहनगर से यलोस्टोन नेशनल पार्क तक यात्रा करने का झक्कीपन में निर्णय लिया। वह एक अच्छी यात्रा थी एवं वह तीन युवकों के लिए जो पौड़ावस्था में प्रवेश कर रहे थे परिपक्वता में आने की एक प्रक्रिया के समान था।

जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं वह यात्रा पर्वत, झरने, गर्म सल्फर के सोते, और अनेक हिरणों के अदभुत दृश्य से परिपूर्ण थी। एक सुबह हमने निर्णय किया कि सम्पूर्ण दिन हम पद्यात्रा में व्यतीत करेंगे। और फिर हम सब ने यह सहमति की कि रोमांच के लिए हम अपने साथ मानचित्र नहीं ले जाएंगें। हम यह देखना चाहते थे कि पगडण्डी कहाँ ले जाएगी। तो हमने भोजन के लिये कुछ खाना बांधा और अपने मोबाइल फोनों को अपने बस्ते में डाला और चल पड़े।

वह एक लम्बी पद् यात्रा थी, और थोड़ी देर बाद हम एक दूसरे से मज़ाक करने लगे कि हम यहाँ यलोस्टोन नेशनल पार्क में हैं किन्तु यह पूर्वी टैक्सस के जंगलो से भिन्न नहीं दिख रहा था जहाँ पर हम बड़े हुए थे। देवदार के बड़े वृक्ष हमें चारो ओर से घेरे हुए थे और थोड़ी–थोड़ी देर में हमको किसी छोटी सी नाली के ऊपर से छलांग लगाना पड़ता था जो हमारे राह मे पड़ती थी। किन्तु यह सब देखने में कोई बहुत विशेष नहीं था और हम थोड़ा धैर्य खोने लगे।

तभी अचानक से इससे पहले कि हम में से किसी के पास यह ध्यान देने के लिए समय था कि कुछ बदल रहा है, जंगल साफ हो गया और हमने



अपने आपको यलोस्टोन के महान घाटी (ग्रैण्ड कैनियन) के किनारे पर पाया। हमारे नीचे मीलों तक फैला हुआ था पृथ्वी में एक भव्य दरार थी और उसके तल पर एक नदी दौड़ रही थी और सूरज की किरणें उसकी सतह पर चमक रहीं थीं। हमारे नीचे चिड़ियाँ उड़ रहीं थीं और नीचे–लटकते हुये बादल उपर तेज़ी से जा रहे थे शायद घाटी द्वारा वायु के धारा प्रवाह की वजह से।

मुझे उस क्षण क्या ही अविश्वासनीय छोटेपन का अनुभव हुआ जब मैंने नीचे चकरा देने वाले विस्तार को झांका और आसमान में देखा। कुछ क्षणों के लिए हम तीनों–उस दिन में पहली बार–शान्त थे। और फिर मेरे एक मित्र ने गाना आरम्भ किया,

प्रभु महान विचारू कार्य तेरे,
कितने अद्भुत जो तूने बनाये...

परमेश्वर उसको आशीष दे, वह बहुत अच्छा गायक नहीं था किन्तु उसका हृदय बिल्कुल सही था ! अगले कुछ क्षण तक हमने यलोस्टोन के ग्रैण्ड कैनियन के किनारे पर खड़े होकर उसकी उपासना की जिसने इस विस्मय–प्रेरित करने वाले उत्तम सृष्टि की रचना की है।

### *हम क्यों उसको अनदेखा करते हैं ?*

मेरा यह सोचना है कि सुसमाचार का भी हमारे ऊपर ऐसा ही बड़ा प्रभाव पड़ेगा यदि हम समय लें और रूक करके उसके बारे में वास्तव में सोचें। आपको कितना समय हुआ है जबसे आपने पृथ्वी के जीवन के विवरण से उपर देखा है और उस ग्रैंड़ कैनियन से आमना–सामना किया है जो कि परमेश्वर ने सुसमाचार में होकर हमारे लिए किया है–उसका अथाह अनुग्रह उन लोगों को क्षमा करने में जिन्होंने उसके विरूद्ध में विद्रोह किया है उसकी अपने पुत्र को उनकी जगह पर दुख उठाने और मरने के लिए भेजने

की विस्मयकारी योजना, जी उठे यीशु के सिंहासन को सिद्ध धार्मिकता के राज्य के ऊपर स्थापित करना और उनको जो कि उसके लहू द्वारा बचाए और छुड़ाए गए हैं, नये आकाश और नयी पृथ्वी में प्रवेश कराना जहाँ पाप और दुष्टता पर हमेशा के लिए विजय प्राप्त की जाएगी !

यह कैसे सम्भव है, कि मैं अकसर सुसमाचार की सुन्दरता, सामर्थ और महानता को अपने मस्तिष्क से बहुत समय के लिए बाहर निकाल देता हूँ ? ऐसा क्यों है कि अकसर मेरे विचार और भावनाएँ उन महिमामय सच्चाईयों के बजाए मूर्खतापूर्ण बातों से घिरे रहते हैं जैसे कि क्या मेरी कार साफ है, अथवा सी.एन.एन. समाचार पर अभी क्या हो रहा है या क्या मैं आज अपने दोपहर के भोजन से प्रसन्न था। ऐसा क्यों है कि मैं अनन्तकाल के प्रकाश के बजाए अपने जीवन के विषय में ऐसे सोचता और संगठित करता हूँ जैसे कि मैनें अपनी ऑखों पर पट्टी बान्ध ली है ? ऐसा क्यों है कि यह सुसमाचार हर क्षण और पूर्णतः से नीचे तक मेरी पत्नी और बच्चों, मेरे सहकर्मी, मित्र और कलीसिया के सदस्यों से सम्बधों को सराबोर नहीं कर पाता ?

मुझे मालूम है कि ऐसा क्यों होता है ? यह इसलिए है क्योंकि मैं पापी हूँ और मेरे हृदय में संसारिकता तब तक बची रहेगी और मेरे विरूद्ध युद्ध करती रहेगी जब तक मसीह न लौट आये। किन्तु तब तक मैं उसके विरूद्ध में लड़ना चाहता हूँ। मैं आत्मिक आलस के विरूद्ध लड़ना चाहता हूँ–उस नशे की चाल के विरूद्ध जिसमें यह संसार मुझे निरन्तर डालने की धमकी देता है–और मैं इस सुसमाचार को ज़ोर से गले लगाना चाहता हूँ और उसका मेरे कार्यों, स्नेह–भाव, भावनाएँ, इच्छाएँ, विचार और मनसा तथा प्रत्येक बात पर प्रभाव देखना चाहता हूँ।

मेरी आशा है कि आप भी यही चाहते हैं। मेरी यह आशा है कि इस पुस्तक ने वृक्षों को थोड़ा अलग किया है ताकि आप उस भव्यता को देख सकें जो परमेश्वर ने हमारे लिए यीशु में होकर किया हैं। किन्तु अब



क्या ? खैर मुझे कुछ बातों को कहने की अनुमति दें–लाखों अन्य बाते हैं जिनका मैं वर्णन नहीं करूंगा–कि कैसे यीशु के शुभ सन्देश को हमारे जीवन पर प्रभाव डालना चाहिए।

### *पश्चाताप और विश्वास*

पहली बात, अगर आप मसीही नहीं हैं तो इस पुस्तक को यहाँ तक पढ़ने के लिए धन्यवाद। मेरी आशा है कि आपने यीशु के सम्बध में सुसमाचार के बारे में कुछ सोचने के अवसर का उपयोग किया है। और मेरी प्रार्थना है कि यह आपके मस्तिष्क में गहराई से बैठ गई है। आपके लिए तो यह प्रश्न कि "अब क्या" तो वास्तव में अत्यन्त आसान है। आपको लाखों कार्य करने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु केवल एक कार्य : अपने पापों से पश्चाताप करो और यीशु पर विश्वास करो। इसका अर्थ यह है कि आप अपनी आत्मिक दिवालियापन को पहचानें यह स्वीकार करें कि आप अपने आप को बचाने में बिल्कुल असमर्थ हैं एवं क्षमा प्राप्ति और परमेश्वर के सम्मुख सही ठहराये जाने की केवल एक आशा है और वह है कि यीशु के निकट आना।

मसीही बनना कोई बहुत मेहनत का काम नहीं है। कुछ कमाने की आवश्यकता नहीं है। यीशु ने आपके लिए सब कुछ कमा लिया है जिसकी आपको आवश्यकता है। सुसमाचार आपको जिस कार्य को करने के लिए पुकारता है वह यह है कि अपने हृदय को पाप से मोड़ना और यीशु कि ओर विश्वास में लगाना–अर्थात, विश्वास और निर्भरता। सुसमाचार आपको बुलाता है कि यीशु के पास आयें और कहें, "मुझे मालूम है कि मैं अपने आप को नहीं बचा सकता हूँ तो इसलिए यीशु, मैं आप पर भरोसा कर रहा हूँ कि आप मेरे लिए ऐसा करेंगे।"

इसके बाद आपके समक्ष एक पूरी नई दुनिया खुल जाती है। किन्तु इसका आरम्भ पापों से पश्चाताप और बचने के लिए यीशु पर भरोसा के द्वारा होता है।

### *विश्राम और आनन्द*

अगर आप विश्वासी हैं तो सुसमाचार आपको बुला रहा है यीशु मसीह में विश्राम करने के लिए और उस अविनाशी उद्धार में आनन्द मनाने के लिए जिसे यीशु ने आपके लिए जीता है। यीशु की वजह से और क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि विश्वास से मैं यीशु से जुड़ चुका हूँ इसलिए मैं उस परीक्षा के विरूद्व लड़ सकता हूँ जो यह विचार लाता है कि मेरा उद्धार किसी तरह से कई चरणों में है अथवा अस्थायी है। चाहे मुझे किसी क्षण में महसूस होता है या नहीं–उन सारे प्रश्नों के भवंर के तल में–मुझे मालूम है कि मैं यीशु का हूँ और कोई मुझे उसके हाथ से नहीं छीन सकता है। यह इसलिए है क्योंकि सुसमाचार मुझे बताता है कि परमेश्वर के सम्मुख मेरी धार्मिकता किसी आत्मिक कार्ड की जाँच सूची पर निशान लगाने पर आधारित नहीं है। पर्याप्त फल ? सही का निशान। व्यक्तिगत मनन ? सही का निशान! आत्मिक वार्तालाप ? सही का निशान, सही का निशान, सही का निशान! बढ़िया ! मैं आज वास्तव में *अत्यन्त* छुटकारा पाया हुआ महसूस कर रहा हूँ।

सुसमाचार जो कुछ हमें यीशु के बारे में बताता है उसके प्रकाश में तो यह सब कितना हास्यप्रद है! परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उससे मेरा सम्बन्ध, मेरी चंचल इच्छा या धार्मिकता से जीने की मेरी क्षमता पर आधारित नहीं है। नहीं, परमेश्वर ने मेरे बारे में अपना निर्णय पहले ही घोषित कर दिया है, और वह यह है कि "क्षमा कर दिया गया !" और इससे बढ़कर, यह निर्णय कभी नहीं बदलेगा क्योंकि वह हमेशा के लिए यीशु की क्रूस पर मेरे बदले मृत्यु और परमेश्वर के सिहांसन के सामने उसकी मेरे लिए प्रार्थना पर आधारित है।

यदि आप मसीही हैं तो यीशु का क्रूस आपके जीवन में एक ग्रेनाइट के पर्वत के समान खड़ा है और आपके लिए परमेश्वर के प्रेम एवं आपको अपनी उपस्थिति में सुरक्षित लाने के लिए उसके संकल्प की अटल गवाही



दे रहा है। यह तो ऐसे है जैसे पौलुस ने रोमियों में कहा था, "अब हम इन बातों के विषय में क्या कहे ? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है, तो कौन हमार विरूद्ध है ? वह जिसने अपने पुत्र को भी नहीं छोड़ा परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया, तो वह उसके साथ हमें सब कुछ उदारता से क्यों न देगा ?" (रोमियों 8:31–32)।

### *मसीह के लोगों से प्रेम करना*

सुसमाचार, मसीहियों को परमेश्वर के लोग अर्थात कलीसिया से और अधिक गहरा एवं सक्रिय प्रेम करने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए। हम में से किसी भी मसीही ने उस उत्तराधिकार को नहीं कमाया है जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए सचिंत किया है। हम परमेश्वर के राज्य के नागरिक स्वंय नहीं बन जाते हैं। हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में केवल इसलिए सम्मिलित होते हैं क्योंकि हमको मालूम है कि हम अपने बचाये जाने के लिए यीशु पर निर्भर हैं और हमारा उससे विश्वास के द्वारा मिलन हुआ है।

किन्तु विचित्र बात यह है कि क्या आप यह अहसास करते हैं कि यह बात आपकी कलीसिया में उन भाई और बहन के बारे में सही है जो आपको क्रोध दिलाते हैं। वह भी आपके समान उसी प्रभु पर विश्वास और उसी प्रभु से प्रेम करते हैं। और उससे बढ़ कर वह उसी प्रभु द्वारा छुड़ाया गया और क्षमा प्रदान किया गया है जिसने आपको छुड़ाया और क्षमा किया है। उस भाई और बहन के बारे में सोचिए जिसे जानने के लिए आपने समय नहीं निकाला क्योंकि आप यह सोचते हैं कि आपकी उनसे नहीं पटेगी। उनके बारे में सोचिए जिनसे आपके सम्बन्ध टूटे हैं और आप उसको सुधारने से इन्कार कर चुके हैं। अब आप इस बारे में विचार कीजिए कि आपके समान वह भी उसी प्रभु से प्रेम करते हैं एवं उस पर भरोसा रखते हैं। यह भी सोचिए कि वही प्रभु जो आपके लिए मरा, वही प्रभु उनके लिए भी मरा।

मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या यीशु मसीह के सुसमाचार के बारे

में आपकी समझ–यह शुभ सन्देश कि यीशु ने आपको बचाया यद्यपि आप इसके योग्य नहीं–इतनी गहरी है कि आप अपने भाई बहनों के प्रति जो छोटी आलोचनाए हैं उनको अन्देखा कर दें। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या सुसमाचार की समझ इतनी गहरी है कि वह अपराध, यहाँ तक कि अत्यन्त दुखदायी अपराध जो उन्होंने आपके विरूद्ध किये हैं को आप भूल जाऐं और उनको क्षमा करें और उनसे ऐसे प्रेम करें जैसे यीशु ने स्वंय आप दोनों से किया है।

मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या आपके प्रति परमेश्वर के प्रेम की महानता ने दूसरों के प्रति आपके प्रेम को बढ़ाया है।

## *संसार से सुसमाचार को बोलिए*

ना सिर्फ यह, मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या आपके प्रति परमेश्वर के अनुग्रह ने आपको अपने आस पास के संसार से और प्रेम करने के लिए प्रेरित किया है एवं क्या आप लालसा करते हैं कि लोग यीशु मसीह को जानें और उस पर विश्वास करें। यदि हम वास्तव में परमेश्वर के उस अनुग्रह को समझते हैं जिसे उसने हमें दिखाया है तो हमारे हृदय इस बात के लिए उत्साहित होगें कि वही अनुग्रह अन्य लोगों को भी दिखाया जाए।

अपने पुनरूत्थान के बाद यीशु अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ और उसने उनको यह बतायाः "यह लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से प्रारम्भ करके सब जातियों में उसके नाम से पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का प्रचार किया जाएगा।" यहाँ पर अपने लिए लोगों को बचाने की परमेश्वर की वह महान योजना को शिष्यों को पूरी स्पष्टता के साथ बता दिया गया था। और तब यीशु ने अद्‌भुत रीति से यह जोड़ दिया : "तुम इन सब बातों के साक्षी हो" (लूका 24:46–48)। मैंने हमेशा यह कल्पना की है कि जब शिष्यों ने यह सुना होगा तो उनके चेहरे के रंग उड़ गये होंगे ! परमेश्वर का उद्‌देश्य संसार के छुटकारे से कम नहीं था और यहाँ पर यीशु उनको कह रहा था



कि वह उद्‌देश्य *उनके द्वारा* पूर्ण होगा !

मैं आपके बारे में नहीं जानता हूँ किन्तु यह विचार मुझे स्वंय को अत्यन्त अपर्याप्त महसूस कराता है। परमेश्वर इस संसार में अपने उद्‌देशों को *हमारे* द्वारा परिपूर्ण करने कि मनसा रखता है ? अद्‌भुत ! परन्तु यदि आप अपने आपको अयोग्य एंव अपर्याप्त महसूस करते हैं तो मुझे आपको कुछ उत्साह देने के लिए अनुमति दीजिए। आप अपर्याप्त *हैं* और निश्चय ही अयोग्य हैं ! उत्साह के लिए यह कैसी बात ? हमको देखिए–नश्वर, कमजोर मनुष्य जो अपने जीवन में अभी भी प्रति दिन पाप के विरूद्ध संघर्ष करते हैं। किन्तु फिर भी यीशु कहता है, "तुम मेरे गवाह होगे।" हमारे सुसमाचार के उद्‌घोषणा के द्वारा–चाहे प्रचार या शिक्षा या अपने मित्रों, परिवार गण और सहकर्मियों के साथ भोजन पर वार्तालाप के द्वारा–परमेश्वर ने पापियों को बचाने का निश्चय किया है।

क्या आपने कभी यह सोचा है कि क्यों उस स्वर्गदूत ने जिसने प्रेरितों के काम 10 में कुरनेलियुस से बात की थी, क्यों नहीं उसे सिर्फ सुसमाचार बता दिया ? क्यों किसी दूसरे नगर में कुरनेलियुस को पतरस के पास भेजने की तकलीफ को उठाए ? वास्तव में अगर स्वर्गदूत कुरनेलियुस को यह सब बता सकता था तो निश्चय ही वह उसको सुसमाचार भी बता सकता था। किन्तु नहीं, परमेश्वर ने यह ठहराया था कि सुसमाचार उसके लोगों के द्वारा उच्चारित शब्दों के ही द्वारा प्रसारित हो–अथार्त उनके मुखों के द्वारा जिन्होंने स्वयं यीशु के शुभ सन्देश को ग्रहण किया है और उस क्षमा को अनुभव किया है जो उससे प्राप्त होती है।

यदि आप मसीही हैं तो आप को यह ज्ञात होना चाहिए कि आप अपने हाथों में उद्धार का केवल एक सच्चा सन्देश पकड़े हैं जो कि संसार कभी सुन सकता है। कोई दूसरा सुसमाचार कभी भी नहीं होगा और अपने पापों से बचने का लोगों के पास कोई और तरीका नहीं है। यदि आपके मित्र, परिवार या सहकर्मी अपने पाप से कभी बचाए जाएंगे तो वह तभी होगा

क्योंकि किसी ने यीशु मसीह के सुसमाचार को उनसे बताया है। इसीलिए यीशु हमें सम्पूर्ण संसार में जाने के लिए और सारी जातियों को यह शुभ सन्देश प्रचार करने के लिए और सिखाने के लिए भेजता है। पौलुस का भी यही अर्थ है जब वह रोमियों 10 में पूछता है, "और वे उस पर कैसे विश्वास करेंगे जिसके विषय में उन्होंने सुना ही नहीं ? भला वे प्रचारक के बिना कैसे सुनेंगे ?" (पद 14)। ऐसी अनेक भले कार्य हैं जो हम मसीही होने के नाते कर सकते हैं, किन्तु सच्चाई तो यह है कि इनमें से अधिकतर कार्य उन लोगों के द्वारा भी प्रसन्नता से किये जा सकते हैं जो मसीही नहीं है। परन्तु यदि हम मसीह यीशु के सुसमाचार को उद्घोषित करने में विफल होंगे तो फिर और कौन यह करेगा ? कोई नहीं।

तो अपने हृदय को सुसमाचार की सच्चाईयों से छिदने दीजिए और उनके लिए अपने हृदय को टूटने दीजिए जो यीशु मसीह को नहीं जानते हैं। इस बात पर मनन कीजिए कि यीशु मसीह से हटकर उस धर्मी न्यायी के सामने आपके मित्रगण, परिवार और सहकर्मियों के खड़े होने का क्या अर्थ होगा। स्मरण कीजिए कि परमेश्वर के अनुग्रह ने आपके स्वंय के जीवन में क्या किया है और फिर कल्पना कीजिए कि वह उनके जीवन में क्या कर सकता है ? फिर एक गहरी सांस लीजिए, प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर की आत्मा कार्य करे और अपना मुख खोलिये और बोलिए!

## *उसके लिए ललाहित रहिए*

अन्त में सुसमाचार के कारण हमें उस दिन के लिए ललाहित रहना चाहिए जिस दिन हमारा यीशु राजा अपने राज्य को पूर्णतः अन्तिम तरह से हमेशा के लिए स्थापित करने के लिए वापस आएगा। यह लालसा अंतः केवल राज्य में *रहने* के लिए नहीं है; हम यीशु के वापस आने के लिए सिर्फ इसलिए नहीं ललाहित रहते हैं क्योंकि हम ऐसी दुनिया में जीऐंगे जहाँ दुष्टता पर विजय होगी और न्याय का राज्य होगा।

यद्यपि यह अद्भुत प्रतिज्ञायें हैं किन्तु यह भी बड़ी बात नहीं है। नहीं,



अगर हम सुसमाचार को सही तरह से समझेंगे तो हम राज्य के लिए उतना ललाहित नहीं होंगे जितना कि राजा के लिए। हम सुसमाचार के द्वारा उसको जान पाए हैं, उससे प्रेम करते हैं एवं इसलिए उसके साथ रहने को ललाहित रहते हैं। यीशु ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि वह...मेरे साथ रहें जहाँ मैं हूँ" (यूहन्ना 17:24)। और हम उसके साथ रहने की लालसा रखते हैं और करोड़ों अन्य के साथ मिल कर उसकी आराधना करने को।

परमेश्वर से जो प्रेम करते हैं उनके लिए जो उसने तैयार किया है उसका प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक अद्भुत दर्शन पाया जाता है। यह तो सिर्फ एक संकेत है, किन्तु आप फिर भी इस चित्र में छुटकारा पाए हुए लोगों की, यीशु मसीह की, आराधना में विजय, आनन्द, आराम और पूर्णताः की बड़ी भावना को महसूस कर सकते हैं।

> "इसके पश्चात मैंने दृष्टि की, और देखो, प्रत्येक जाति, समस्त कुल, लोग और भाषा में से लोगों की एक विशाल भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने तथा हाथों में खजूर की डाली लिए सिंहासन और मेमने के सामने खड़ी थी, और लोग ऊँची आवाज से पुकार कर कह रहे थे, सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर और मेमने से ही उद्धार है! " (प्रकाशितवाक्य 7:9–10)

सुसमाचार तो हमें उस दिन के लिए ललाहित होने के लिए प्रेरित करता है। जब कि हम अभी परीक्षाओं, सताव, चिड़चिड़ाहटपन, प्रलोभन, ध्यान बटाने वाली बातें, अरूचि और इस संसार की थकान से होकर जा रहे हैं, सुसमाचार हमें स्वर्ग की ओर संकेत करता है जहाँ पर हमारा राजा यीशु जो कि परमेश्वर का मेमना है और जो कि हमारी जगह पर क्रूसित किया गया और मृत्यु में से महिमामय तरीके से जी उठा–आज हमारे लिए विनती और प्रार्थना करता है। इतना ही नहीं किन्तु वह हमको उस अन्तिम दिन की ओर बुला रहा है जब आकाश क्षमा प्राप्त हुए करोड़ों लोगों की गूजंती हुई आवाज से भर जाएगा जो कि यीशु को क्रूसित उद्धारकर्ता और जीवित राजा के रूप में जयजयकार करेंगे और ललकारेंगे।

# विशेष धन्यवाद

**जैसे किसी भी पुस्तक की परियोजना** के साथ होता है, इस के साथ भी अनेक ऐसे लोग हैं जिन्हे मुझे धन्यवाद के कुछ शब्द कहने हैं। कोई भी जन एकान्त में नहीं सीखता है और न सोचता है और यदि मैं उन भाई–बहनों का नाम लेने लूँगा तो पूरा दिन लग जाएगा जिनके साथ पिछले दशक और उससे भी अधिक समय से मैंने सुसमाचार के बारे में बातचीत और विचार किया है। किन्तु कुछ लोग हैं जिनको मैं विशेष "धन्यवाद" कहना चाहता हूँ।

प्रथम, क्रौसवे की अद्‌भुत टीम को धन्यवाद एक अनजान लेखक के साथ जोखिम लेने के लिए। यदि परमेश्वर ने चाहा इस पुस्तक के द्वारा कलीसिया की बढ़ोतरी के लिए तो वह आपकी सहायता से ही होगा।

9 चिन्ह की टीम का भी धन्यवाद इस पुस्तक को लिखने के लिए उनके उत्साह के लिए और ऐसा सम्भव करने के लिए उनके प्रयासों के लिए। संसार की कलीसियाओं के स्वास्थ के लिए मैट श्मक्कर का दर्शन एवं जोश प्रेरित करने वाला है। उनको जानकर तथा साथ कार्य करके मैं अत्यन्त सम्मानित हूँ। जॉनाथन लीमेन ने इस पुस्तक को लिखने में मेरी अत्यन्त सहायता की है। वार्तालाप, ई–मेल और सम्पादन के द्वारा उन्होंने इस पुस्तक को और स्पष्ट किया है। और बॉबी जैमीसन का भी धन्यवाद जिन्होंने राज्य के बारे में बात करते हुए मेरे साथ असंख्य काफी के प्याले पीये हैं। इस टीम का सदस्य होना कितना ही आनन्द की बात है!

मेरे प्रिय भाई मार्क डेवर को धन्यवाद जिसने मुझे मेरी पहली पुस्तक लिखने के लिए बल दिया। मैं आपका इतना अधिक श्रृणी हूँ कि मैं उनकी अभिव्यक्ति भी नहीं कर सकता। आपको अपना आत्मिक सलाहकार कहने में मुझे गर्व है। मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि वाशिंगटन डी.सी. में थोड़े समय के लिए वापस लाने के द्वारा प्रभु ने हम दोनों को आश्चर्यचकित किया। वह

**विशेष धन्यवाद**

बहुत दयालु है कि उसने हमें यह समय एक साथ बिताने को दिया।

अंतः मेरी दृढ़ और सुन्दर पत्नी मोरियाह को धन्यवाद जो मुझसे प्रेम करती है और मेरी देखभाल अच्छी तरह से करती है और उन सब क्षणों को सहती है जब मैं अपने मस्तिष्क में खो जाता हूँ और किसी विकट धर्मविज्ञान के प्रश्न पर कार्य करने लग जाता हूँ। प्रिय, मैं तुमसे अत्यन्त प्रेम करता हूँ।

***अधिक जानकारी के लिये सर्म्पक करें***

**सिय्योन चर्च**
फैजाबाद रोड़, मटियारी चौराहा
चिनहट, लखनऊ –यू0पी0

**फोन न0 : 9415111149, 8960775324**